॥ श्री हरिः ॥

दृष्टान्त-सरोवर

लेखक—

भारत के सुप्रसिद्ध कीर्तनकार, श्री हरिकथा विशारद,
अखिल भारतवर्षीय स० ध० प्रचारक,
श्री पं० आत्मारामजी शर्मा 'शोख'

प्रकाशक—

गर्ग ऐण्ड कं०, थोक कुतुबखाना
खारी बावली, देहली।

प्रथमवार

मूल्य १॥)

समर्पण

इस दृष्टान्त सरोवर पुस्तक को मैं अपने परम स्नेही, परम धार्मिक श्रीयुत लाला बालकिशनदास जी मल्होत्रा मुल्तानी मालिक दुकान मलिक कालाराम रोशन लाल नया बाजार देहली के कर कमलों मे समर्पित करता हूँ।

श्री बालकिशनदास जी का जीवन एक धार्मिक जीवन है और आपका समस्त परिवार भी धार्मिक विचारों का है, आप प्राय: धर्म कार्यों में बड़े उत्साह के साथ तन, मन, धन से लगे रहते हैं। आप देहली के सुप्रसिद्ध व्यापारियों में से एक प्रसिद्ध माने हुए व्यापारी हैं यही इनका संक्षेप से परिचय है। अन्त में हम भगवान् से प्रार्थना करते है कि वह श्रीलालाजी और उनके समस्त परिवार को सदैव आनन्द रक्खें।

सीताराम कुटी नई देहली
दीपमालिका
४-११-४५

शुभचिन्तक
आत्माराम शोख

किसी भी प्राचीन सिद्धान्त को यदि हम श्रुति, स्मृति पुराणादि के मूल शब्दों में ही जनता के समक्ष प्रकट करें तो इसमें अणुमात्र भी सन्देह नहीं, कि जनता शास्त्रों के सत्य एवं कल्याणकारक सिद्धान्तों से सर्वथा वंचित रह जायगी और लाभ के बदले हानि ग्रस्त होने की अधिक सम्भावना में पड़ जायगी। जनता जनार्दन को युक्ति एवं दृष्टान्त द्वारा शास्त्रों के अगम्य एवं गम्भीर विषयों को समझाने की प्रथा नवीन हो, ऐसी बात नहीं, वरन् अनादि काल से प्रचलित है। सर्व साधारण को यह तो विदित ही है कि त्रिकाल दर्शी ऋषि मुनि किस प्रकार जंगलों में बैठ कर शास्त्र सिद्धान्त युक्ति तथा दृष्टान्त द्वारा जन साधारण को समझाया करते थे। उपनिषदों में इस प्रकार के अनेक कथानक हमारी उपरोक्त धारणा को सदा सोलह आने सच्ची सिद्ध कर रहे हैं। अस्तु।

कल्पना कीजिए किसी निरीश्वरवादी का यह कहना है कि ईश्वर की कोई सत्ता नहीं, यदि है तो हमें प्रत्यक्ष दिखाओ। यदि यहां हम उसको शास्त्रों द्वारा समझाने की हजार कोशिश भी करेंगे तो भी वह हठधर्मी या शास्त्रों में अश्रद्धा होने के कारण त्रिकाल में भी हमारे

सिद्धान्त को न मानेगा। यहाँ हमें उसे यह युक्ति एवं दृष्टान्त द्वारा समझाना ही श्रेयस्कर होगा कि किस प्रकार किसी महाशय के आँखों में काजल लगा हुआ भी उसे नहीं दीखता। उसी प्रकार ईश्वर सर्व व्यापक होते हुए भी अदृष्ट रहता है। जिस प्रकार काजल आँखों से दूर नहीं उसी प्रकार ईश्वर भी सर्वत्र विद्यमान रहता हुआ भी नहीं दीखता। उस प्रकार उस निरीश्वर वादी को सहज में ही युक्ति एवं दृष्टान्त द्वारा परास्त कर अपना सिद्धान्त मनवाया जा सकता है। दृष्टान्तों के व्यापक प्रभाव को ही तो अनुभव कर हमारे संस्कृत एवं देव-नागरी साहित्य में ऐसे श्लोकों एवं दोहों की न्यूनता नहीं है—जिससे नर-नारी को, बूढ़े-जवान को, समस्त अबाल जनता को समुचित शिक्षा मिलती है।

वैसे तो हिन्दी-संसार में दृष्टान्त-ग्रन्थों की कमी नहीं। फिर भी प्रत्यक्ष देखने में आया है कि जनता स्व धार्मिक सिद्धान्तों से शनैः शनैः दूर होती जा रही है, और प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ अश्रद्धा की दृष्टि से देखे जा रहे हैं। हमारा अनुमान है कि उस सब का एक मात्र कारण किसी सर्वोपयोगी धार्मिक दृष्टान्त ग्रन्थ का अभाव ही है, जो बहुत अखरता है।

उपरोक्त अभाव की पूर्ति करने के निमित्त भारत के सुप्रसिद्ध कथावाचक कीर्तन कलानिधि अनेक पुस्तकों के सफल लेखक श्री आत्माराम जी शोख देहली निवासी ने प्रस्तुत पुस्तक दृष्टान्त-सरोवर की अवतारणा की है। शोख जी ने उस पुस्तक में वह २ दृष्टान्त लिए हैं जिनको वह प्रायः अपने व्याख्यानों में कहा करते हैं। उस पुस्तक के विषय में विशेष उल्लेखनीय बात यह है प्रत्येक दृष्टान्त के आरम्भ में दृष्टान्त का भावार्थ या सारांश दोहे द्वारा वर्णित कर दिया है। दोहों का जो प्रभाव पड़ता है, उसके लिये विशेष लिख कर भूमिका का कलेवर बढ़ाना हमको अभीष्ट नहीं है।

हमें पूर्ण आशा है कि धार्मिक जनता उस ग्रन्थ का पूर्णरूपेण आदर करती हुई सत्य सिद्धान्तों का मनन करेगी।

विनीत

पोस्ट—तिगांव जि० गुड़गाँव दीपावली	सोमदत्त शर्मा वशिष्ठ व्याख्यान भास्कर तर्क शिरोमणि

मंगलाचरण

मूकं करोति वाचालं, पंगुं लंघयते गिरिं।
यत्कृपा तमहं वन्दे, परमानन्द माधवम् ॥
बोलते मूक दया से जिसकी, गिर पर पंगु लगाते दौर।
तिमिर विनाशक आनन्द दायक, वन्दे रवि-कुलके शिरमौर

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
अखंड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

गुरु को सादर करूँ प्रणाम

गुरु ही ब्रह्मा, गुरु ही महेश्वर नाम।
साक्षात् परब्रह्म गुरू है, गुणनिधान सुखधाम ॥ गुरु०
अखण्ड मण्डलाकार ईश्वर व्याप्त चराचर मांहि।
देखे जाके पद कमल कठिन परमपद नाहिं ॥
गुरु को सादर करूँ प्रणाम।
समदर्शी नारायण, सकल कला, गुण धाम।
जिनकी कृपा कटाक्ष से, प्रकट आत्माराम ॥
गुरु को सादर करूँ प्रणाम।

दृष्टान्त सरोवर
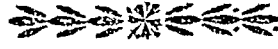
प्रथम पूजने योग कौन है ?

प्रथम 'गजानन्द' पूजिये जिससे हो कल्यान।
इनके पूजे सुख मिलें, कहते वेद पुरान॥

एक समय सृष्टि रचयिता श्री ब्रह्माजी से देवताओं ने पूछा कि संसार में प्रथम पूजने योग्य कौन है। श्री ब्रह्मा जी ने देवताओं से कहा कि जो सबसे पहिले संसार की परिक्रमा करके आवेगा उसको ही हम सबसे पहिले स्थान देंगे। ब्रह्माजी की यह बात सुन सब देवता अपने २ वाहनों (सवारी) पर चढ़कर संसार की परिक्रमा देने के लिये चल पड़े। परन्तु गणेश जी वहां ही खड़े सोचने लगे क्योंकि उनका वाहन (मूसा) शीघ्र नहीं चल सकता था। यही सोच वह बड़े व्याकुल हुये, इतने में वहां देव ऋषि नारदजी भी आगये और गणेश जी की सारी विपत्ति सुन उनसे कहा गणेश जी! तुम पृथ्वी पर राम नाम लिखकर और उसकी परिक्रमा करके श्री ब्रह्मा जी के पास चले जाओ। इतना कह नारदजी वहां से चले गये। नारदजी के जाने

के पश्चात् गणेशजी ने झटपट पृथ्वी पर 'श्रीरामनाम' बड़ी श्रद्धा से लिखा और फिर उसके चारों तरफ घूमकर परिक्रमा दी पश्चात् ब्रह्मा जी के पास गये, अन्त में राम का प्रभाव समझ कर ब्रह्माजी ने गणेश जी को प्रथम पूज्य पद दिया।

सज्जनो !

गणेश बुद्धि के देवता हैं कुतर्क रूपी मूषा उनका वाहन है संसार में जिसकी बुद्धि बड़ी वही पूज्य है। अस्तु हिन्दुओं को प्रत्येक कार्य करने से पहिले श्री गणेश का आवाहन करना चाहिये।

मन का भूत

मन मतंग माने नहीं चले सुरति के साथ।
दीन महावत क्या करे अकुश नाहीं हाथ॥

एक किसी नगर में एक सेठ जी महाकृपण रहते थे। उन्होंने बहुत दिनों से एक ऐसे नौकर की आवश्यकता थी जो काम तो खूब करे और तनख्वाह के बदले एक समय का भोजन ले लिया करे। अपने नगर से बाहर सेठ जी नौकर की तलाश में चल पड़े। एक कोश चलने के पश्चात् उनको एक महात्मा जी मिले। उनको देखकर सेठ जी ने जयगोपाल कही। तब महात्माजी ने

पूछा—सेठ जी ! आप किस चिन्ता में हैं ? झट सेठ जी बोले—महाराज मुझे एक ऐसे नौकर की आवश्यकता है जो काम तो खूब करे परन्तु एक समय का भोजन ले लिया करे। महात्मा जी ने अपनी झोली से एक डिबिया निकाल कर दी और कहा—ये डिबिया ले जाओ उसे घर जाकर खोल लेना, उसमें से एक नौकर निकलेगा उससे अपनी इच्छानुसार खूब काम लेना। सेठ जी प्रसन्नचित घर आये। सेठ जी ने अब डिबिया खोली। उसमें से एक बड़ी डरावनी सूरत का काला आदमी निकल पड़ा और कहा कि सेठ जी काम बताइये। सेठ जी बोले काम तो करवाऊंगा—पर भोजन एक समय ही दूंगा। नौकर ने कहा—मुझे स्वीकार है परन्तु मेरा भी एक नियम है कि मुझे हर समय काम बताते रहना—मैं कभी खाली नहीं बैठूंगा। यदि तुमने मुझे काम न बताया तो तुम्हें जान से मार दूंगा। सेठ जी ने तत्क्षण स्वीकार कर लिया। फिर सेठ जी बोले अच्छा पहले सारी कोठी में झाड़ू लगाओ। नौकर ने झट झाड़ू पकड़ी और एक मिनट के पश्चात् ही आकर बोला—सेठ जी झाड़ू लगा दी। सेठ जी की यह देखकर आंखें खुल गई कि वास्तव में सारी कोठी में झाड़ू लग चुकी है। फिर कहा—अच्छा अब पानी भरो। दो मिनट के

पश्चात् उत्तर मिला—हजूर पानी भी भर दिया। सेठ जी को यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ। देखा कि बड़े २ कलशे मटके और गागरादि तो सब जल से लबा-लब हैं परन्तु गिलास-लोटे तक भी खाली नहीं हैं। सारांश कि सेठ जी जिस किसी भी काम के लिये नौकर को कहते हैं, वह काम आनन-फानन में नौकर करके नया काम माँगता है। अब तो सेठ जी घबरा गये और सोचने लगे अब ऐसा कौनसा काम बताऊं जो उससे खतम न हो। उधर नौकर ने चिल्लाकर कहा—जल्दी काम दो, वरना जान से मारता हूं।

सेठ जी इतना सुनकर अत्यन्त घबड़ा गये और घर से भाग निकले। नौकर भी सेठ जी के पीछे यह चिल्लाता हुआ भागा काम बताओ नहीं तो जान से मारता हूं। सेठ जी भागते २ उसी डिबिया देने वाले साधु के चरणों में गिर पड़े और गिड़गिड़ाकर बोले—महाराज! बचाइये बचाइये मै मरा, मैं मरा। साधू बाबा आश्वासन देते हुए बोले—बच्चा क्या बात है जल्दी बता। सेठ जी जल्दी-जल्दी सब कह गये। इतने में पीछे से भूत नौकर भी आ पहुंचे। और इधर बाबा जी को जो कुछ कहना था कह दिया। सेठ जी ने उसको

देखते ही कहा, सुनो जाओ और हिमालय पर्वत मे चट्टान की एक १०० फुट लम्बी शिला ले आओ। इतना सुनकर भूत नौकर जी पर्वत की ओर गए और आनन-फानन में सेठ जी के पास शिला लेकर आ धमका। सेठ जी ने हुक्म दिया—उसे लेकर घर चलो घर आने पर सेठ जी ने कहा उसको काट-छाँट कर खम्भा बढ़िया गोल खम्भा बनाओ। और ५० फुट नीचे जमीन में गाड़ो और ५० फुट जमीन से ऊपर रहने दो। खम्भा गाड़ कर नौकर बोला—अब बताओ क्या करें ? सेठ जी बोले--अच्छा अब उस पर चढ़ो और उतरो यह कहकर सेठजी अपने काम में लग गये। इधर वह भूत नौकर एक बार चढ़कर और उतर कर बोला, सेठ जी मै खम्बे पर चढ़ कर उतर आया हूं अब और काम बताओ। सेठ जी यह देख कर क्रोध में कोड़ा लेकर भागे और कहा--खबरदार अब तुझे काम बता दिया है कि जब तक मैं कुछ और काम न बताऊं, इतने इसी खम्भे पर चढ़ा और उतरा कर नहीं तो मार-मार कर तेरी खाल निकाल लूंगा। नौकर बहुत घब-ड़ाया और फिर खम्भे पर चढ़ने-उतरने की व्यायाम से अंजड़-पंजड़ ढीले पड़ गये तो सेठ जी के पैरों गिर कर बोला, हजूर क्षमा करो, मैं कभी भी आपसे यह

नहीं कहूंगा कि काम बताओ। सेठ जी ने दीनतावश उसको क्षमा कर दिया।

प्रिय पाठकों यह तो रहा दृष्टान्त। दृष्टान्त रूप में इसे यूं समझिये—कि यहां जीव रूपी सेठ हैं, मन रूपी भूत (नौकर) है अर्थात् यह चंचल मन जीव को बार-बार तंग करता है कि काम बताओ, काम बताओ। जीवरूपी सेठ मनरूपी भूत के उस बार बार के कहने से तंग हो जाता है। अन्त में जीव रूपी सेठ किसी महात्मा के चरणों में जाता है और महात्मा उपदेश देता है कि मनरूपी भूत को राम नाम रूपी खम्भे पर चढ़ने उतरने का काम सौंप दो, खाली न रहने दो फिर मनरूपी भूत तुम्हें तंग न कर सकेगा। उसी आशय को लेकर उर्दू, हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि (शायर) श्री पं० रामनारायण जी 'समदर्शी' ने भी एक शेर कहा है:—

नफ़स के तार पर, बाजीगरे दिल खेल करता है।
बनाया अर्श तक का खूब ये जीना रसाई का॥

विचित्र मन्त्री

जिस राजा का मन्त्री, होता बुद्धिमान्।
उस राजाके राज्य में, गुणियों का सन्मान॥

किसी बड़े राज्य का राजा बड़ा मूर्ख था। उसकी मूर्खता का डंका राज्य भर में बज रहा था। परन्तु

उसका मन्त्री बड़ा ही बुद्धिमान् एवं विचित्र प्रकृति का था। संयोगवश, उस राजा के पास अन्य नगर के कोई कथावाचक जी आये, और राजा को आशीर्वाद देकर यथास्थान बैठ गये। राजा ने कहा, कहिये पंडित जी क्या आज्ञा है? पंडितजी बोले—राजन् हम कथा बांचते हैं और आपको कथा सुनाने की इच्छा से ही यहां आये हैं। राजा बोला—अच्छा महाराज आप हमारे राज-मन्दिर में बेखटके कथा प्रारम्भ करदें। पंडितजी ने राजमन्दिर में कथा प्रारम्भ करदी।

दूसरे दिन एक कथावाचक जी और राजदर्बार में उपस्थित हुये और राजा को कथा सुनाने की इच्छा प्रकट की। राजा ने उनको भी राज-मन्दिर में कथा करने के लिए स्थान बता दिया।

फिर तीसरे दिन उसी तरह एक कथावाचक जी पधारे और उनको भी राजाज्ञा से कथा करने को राज-मन्दिर में स्थान मिल गया।

इसी प्रकार चौथे दिवस एक कथावाचक महोदय और आ उपस्थित हुए। उनको भी राज-मन्दिर में कथा प्रारम्भ करने के लिये आज्ञा मिल गई।

इस प्रकार चारों कथावाचक एक ही स्थान पर

एक के बाद एक के क्रम से राजमन्दिर में इकट्ठे हो गये। और एक दूसरे के प्रति ईर्ष्याभाव से कहने लगे।

पहला पंडित—"हे राम! अब कैसे होगी।"

दूसरा पंडित—"जो तुझमें होगी, सो मुझमें होगी"।

तीसरा पंडित—"यह अंधा-धुन्ध कब तक चलेगी।"

चौथा पंडित—"जब तक चले, तभी तक सही।"

उपरोक्त चारों पंडितों का यह वाक्युद्ध छिड़ा ही हुआ था कि राजा मन्त्री सहित कथाश्रवण की उत्कंठा से राजमन्दिर में आ पहुंचा और उनकी ये बातें सुनकर बोला यह कौनसी रामायण की कथा हो रही है। यह तो न तुलसी रामायण की है, न बाल्मीकि रामायण की है और नाहीं अध्यात्म रामायण की है, फिर किसकी है?

बुद्धिमान् मन्त्री अवसर को ताड़ते हुए बोला—महाराज! यह श्रीरामायण की ही कथा है। राजा बोला, कैसे! मन्त्री ने कहा—महाराज! उसका प्रसंग यूँ सुनिये। पहले पंडितजी का आशय है कि अशोक वन में राक्षस-राक्षसियों से घिरी हुई श्री सीताजी कह रहीं हैं कि—'हे राम! अब कैसी होगी'। जिसको सुनकर दूसरे पंडित जी कहते हैं कि त्रिजटा श्रीसीता जी से कहती है, न घबराओ! जो तुझ में होगी—सो मुझ में

होगी, अर्थात् जैसा व्यवहार हमारे साथ होगा—वैसा ही तुम्हारे साथ फिर तीसरे पंडित जी कहते हैं कि मन्दोदरी रावण से कहती है कि—"यह अंधा-धुन्ध कब तक चलेगी"। उसके बाद चौथे पंडितजी रावण से कहलवाते हैं—"जब तक चले, तभी तक सही।"

उस विचित्र मन्त्री की बुद्धि से राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और चारों पंडितों का सन्मान पूर्वक २००-२०० रु० दक्षिणा देकर विदा किया। तात्पर्य यह है जिस राज्य का राजा यदि मूर्ख हो और मन्त्री बुद्धिमान् हो तो गुणियों, विद्वानों एवं मूर्खों तक का सन्मान करा देता है।

माया

खुद माया में फँस रहा, फिर काहे पछताए।
यदि तू उसको त्याग दे, तो मुक्ति-पद पाए॥

कोई संसारी मनुष्य समर्थ श्रीरामदासजी के पास गया और बोला कि महाराज मुझे माया ने ऐसा पकड़ रक्खा है कि छूटना मुश्किल है, आप कृपा करके उसे छुड़ा दीजिये। स्वामी ने सोचा यह उपदेश से तो शीघ्र समझेगा नहीं, इसलिये इसे प्रत्यक्ष प्रमाण देना चाहिए। अतः आप एक किले की चहार दीवारी पर चढ़ गए। और उसे भी साथ लेते गये, चहार दीवारी से लगा-हुआ

एक पीपल का वृक्ष था, और चहार दीवारी के नीचे बड़ी गहरी खाई थी, स्वामी ने वायु से अपना वस्त्र उड़ा कर उस पीपल के वृक्ष पर टांग दिया और उस मनुष्य से कहा कि जाओ उस वस्त्र को वृक्ष से उतार कर ले आओ। वह मनुष्य गुरु की आज्ञा मान कर वृक्ष पर चढ़ गया। जब उसने दुपट्टा पकड़ लिया, तो श्रीसमर्थ ने अपनी छड़ी के इशारे से उसके पैर डाल से खींच लिये। अब तो वह मनुष्य वह दुपट्टा पकड़कर लटक गया, और लगा चिल्लाने कि "महाराज मैं तो मरा, मेरी रक्षा करो"। समर्थ ने कहा रोते क्यों हो? दुपट्टा छोड़ दे और मोक्षपद प्राप्त कर ले। वह बोला, भगवन्! दुपट्टा तो छोड़ा नहीं जाता। समर्थ ने कहा कि, अब यह बता कि दुपट्टा तुझे पकड़े है? या तूने दुपट्टा को पकड़ रक्खा है? उसने कहा कि मैंने दुपट्टा को पकड़ रक्खा है। स्वामी ने कहा, उसी प्रकार भाई याद रख, माया को तूने पकड़ रक्खा है! माया ने तुझे नहीं पकड़ा। तू इस समय दुपट्टा छोड़ दे तो तेरी तत्काल मुक्ति हो जाय। उसी प्रकार यदि तू माया रूपी दुपट्टा को छोड़ दे तो तुझे तत्काल ही आत्म-बोध, जीवन्मुक्ति, प्राप्त हो जाय।

भावार्थ यह है—कि जो लोग अक्सर यह कहकर अपने वचने का बहाना ढूँढ़ा करते हैं कि—क्या करें भाई! माया ऐसी ही प्रबल है कि जिसने हमें फँसा रक्खा है। इससे जीव का छुटकारा ही नहीं होता? उनके इस बहाने का खण्डन है, कि माया ने तुमको फंसाया नहीं है, तुम स्वयं ही माया के चक्रमें फँसे हो। जिस प्रकार मकड़ी को कोई फँसाता नहीं, वह स्वयं ही जाले में फँसी है, तोते को बाँस की नली ने फंसाया नहीं है, वह स्वयं ही समझ रहा है कि मैं उस में फंस गया हूं। बन्दर के हाथ को मिट्टी के पात्र ने पकड़ा नहीं है, परन्तु वह चनों के लोभवश हाथ की मुट्ठी नहीं खोलता है, और समझता है कि मुझे इस पात्र ने बाँध रक्खा है। इसी प्रकार जीव को भी माया ने फँसाया नहीं है स्वयं ही धन, जन परिवार के लोभवश इस मा॰ नहीं त्यागता है और समझता है कि मुझे माया ने रक्खा है।

परम सत्ता अनुभव का विषय है
बिन अनुभव के न मिले, परमेश्वर कर्तार।
अनुभव कीजिये स्वयं ही होगा बेड़ा पार॥

एक दिवस एक वैद्य महोदय अपने पुत्र को समझा रहे थे कि—देखो यदि किसी नस की जोड़ पर चोट

लग जाती है, तो बड़ी पीड़ा होती है। बेटे ने कहा, पिता जी ! कितनी बड़ी पीड़ा होती है ? हाथी जितनी बड़ी या आसमान जितनी वैद्य ने कुछ क्रुद्ध होकर कहा कि, बेटा ! असहनीय पीड़ा होती है। बेटा था पूरा हुज्जत बाज। उसने फिर कहा, तो फिर उसे मनुष्य कैसे सह लेता है ? वह तो आप असहनीय बताते हैं। वैद्य ने फिर झल्लाकर कहा, उसे तो वही समझ सकता है कि, जिसे वह पीड़ा हो रही हो। बेटा बोला, तो फिर मुझे भी तो समझाइए ! वैद्य महाराज के पास एक मोटा-सोटा रक्खा था, उठा कर तड़ाक से बेटे जी की टांग पर धर पटका, और कहा कि अब अच्छी तरह समझ लो। बेटा तो फौरन चारों खाने चित्त हो गया और लगा आहें भरने ! वैद्य ने कहा बेटा ! पीड़ा कितने गज बड़ी है ? बेटे ने कहा, पिताजी ! बताई नहीं जा सकती। वैद्य ने कहा, बेटा ! असहनीय है या सहनीय बेटे ने कहा, पीड़ा तो असहनीय है। वैद्य ने कहा कि क्या उसका रूप-रंग कुछ हमको भी बता सकते हो ? बेटा बोला, पिताजी ! खाली कहने सुनने से आप नहीं समझ सकेंगे, सोटे से अभी समझाता हूं। यह कह कर बेटे ने भी अवसर पाकर वैद्य जी की टांगों पर पूरी शक्ति से सोटा दे मारा, और कहा यह है उस पीड़ा का रूप-रंग।

तात्पर्य यह है कि जो निरीश्वर वादी धर्म-कर्म से बचने का बहाना लेकर सड़ियल दलीलों को लेकर इधर उधर हुल्लड़ मचाया करते हैं कि न ईश्वर आज तक किसी को दीखा न दीखता है, उसकी कोई सत्ता ही ही नहीं, उनका यह खण्डन है। संसार में प्रत्येक वस्तु साक्षात् एवं प्रत्यक्ष दर्शन की वस्तु है। नहीं अपितु चित्त और मन की एकाग्रता से भी सम्बन्धित है।

सारांश यह है कि—ईश्वर चर्चा एवं सत्ता चित्त श्रवण एवं समझने की ही वस्तु नहीं, बल्कि ईश्वर का चित्त से अनुभव करना चाहिए।

भक्ति साधना ही मोक्ष का सरल मार्ग है।

सरल मार्ग है मोक्ष का, भक्ति ही जग माँहि।
बिन भक्ति के निश्चय ईश्वर मिलता नाँय ॥

किसी राजा को अपनी रानी से बड़ा प्रेम था, और उस रानी के चार नौकर थे, एक नौकर तो ऐसा था कि जब कुछ कष्ट पड़ता तो रानी की शरण में जाता रानी का जहां कुछ दया आती कि राजा तत्क्षण ही उसका कष्ट दूर कर देते। दूसरा नौकर ऐसा था, वह यही कहता कि रानी जी हम पर कृपालु हैं, तो राजा साहब कभी नाराज हो ही नहीं सकते। रानी उसे पहले

नौकर से अधिक मानती थी, इसलिये राजा भी उसे मान देते थे। तीसरा नौकर ऐसा था जो रानी की सेवा में खाना, पीना, पहरना सभी भूला हुआ था उस पर तो रानी की अपार कृपा थी, अतः राजा भी सदा उसके वश में रहा करते थे, जो वह कहता वही करते। लेकिन चौथा नौकर कुछ ऐसा था कि, रानी की कृपा तो चाहता था, किन्तु रानी को प्रसन्न करना नहीं आता था, उसने सोचा रानी को बाग देखने का बड़ा शौक है, लाओ मैं भी एक बाग लगाऊं। शायद रानी जी प्रसन्न हो जायें ? बस तुरन्त ही एक लम्बी चौड़ी जमीन लेकर उसने बाग लगाना प्रारम्भ कर दिया, बारह वर्ष में उसका बाग खूब हरा भरा और प्रसिद्ध हो गया। संयोगवश राजा एक दिन उस ओर जा निकले, और बाग को देखकर उस नौकर से बड़े प्रसन्न हुए, और बोले कि भाई यह बाग किस लिये तैयार किया है ? नौकर बोला सरकार यह बाग इसलिये तैयार किया गया है कि रानी साहिबा मुझ पर प्रसन्न हो जायें। राजा उसके हृदय में रानी की कृपा की उत्कट अभिलाषा देख कर बड़े प्रसन्न हुए और कहा कि भाई ! तुम्हारे ऊपर आज से हम भी कृपा करेंगे, और रानी साहबा भी।

प्रयोजन यह है कि भक्ति हीन जीव चौथे नौकर की समानता में है, जिन पर भक्ति महारानी की कृपाकोर नहीं फिरती, या वह अपने आप को भक्ति में संलग्न करने में असमर्थ है और फिर भी भक्ति महारानी को अपनाना चाहते हैं—उसको गुण-कीर्तन श्रवणादिक साधनों का बाग लगाकर उसको हरा भरा करना चाहिए। जिस दिन यह बाग प्रसिद्ध हो जायगा, उसी दिन भगवान इसे स्वयं देखकर प्रसन्न हो जावेंगे, और भक्ति महारानी की भी कृपा कर देने की सिफारिश कर देंगे।

घी का भला न धान

कन्या-विक्रय जो करे वो है धूर्त महान।
शंख कवि ये सत्य है, घी का भला न धान।

आज कल प्रायः यह देखा गया कि बहुत से आदमी कन्या का विवाह करने से पहले वर पक्ष से खासी रकम ऐंठ लेते हैं। जो इस प्रकार कन्या-विक्रय या कन्या धन धान्य ग्रहण करता है वह बहुत निन्दनीय है। इस विषय में एक कथा इस प्रकार है:—किसी राजा की रानी ने अपनी दासियों से अपने सिर को खूब साफ करवाया, और वह केशों को सुखाने के लिये बरामदे में खड़ी थी। ऊपर उसी बरामदे में एक चिड़िया

का घोंसला था, संयोगवश उसी समय चिड़िया बाहर से आई और विष्ठा करदी जो रानी के केशों पर आ पड़ी। रानी ने क्रोधपूर्ण नेत्रों से ऊपर को घूरा और चिड़िया की धृष्टता पर मन ही मन में अत्यन्त कुपित हुई। रानी राजा साहब के अधिक मुंह चढ़े होने के कारण अनशन-पाटी लेकर पड़ गई। खाना पीना सब त्याग दिया और दासियों से बोलना भी बन्द कर दिया।

रानी की यह शोचनीय अवस्था देखकर दासियाँ घबड़ा उठीं और भागी-भागी राजा के पास पहुंची, और निवेदन किया कि—"हे महाराज! रानी साहबा की हालत बहुत खराब है न बोलती हैं न सुनती हैं, खाना पीना सब त्याग दिया है। राजा साहब भी यह सुनकर अत्यन्त घबड़ा गये और तत्क्षण ही रानी के पास दौड़े दौड़े आये और पूछा प्यारी तुझे क्या होगया है? बहुत अनुनय-विनय के पश्चात रानी साहबा पसीजीं और कहा, मैंने आज प्रातःकाल अपने केशों को दासियों द्वारा खूब साफ करवाया था और बरामदे में केशों को सुखा रही थी, उस पर घोंसले में बैठी हुई चिड़िया ने मेरे ऊपर केशों पर बीट करदी। यह सुन कर राजा बोले, बस इतनी सी बात पर ही यह अनशन पाटी

सम्भालो है। चिड़िया बिचारी जानवर ही तो है, वह भला बुरा क्या जाने ? चलो उठो। दासियों से सिर फिर साफ़ करवालो और खाओ पिओ। रानी बोली, मैं तो कभी भी दुबारा सिर न साफ करवाऊंगी जब तक कि उस चिड़िया के घौंसले को उखाड़ कर उस का सत्यानाश न कर दिया जाय।

राजा ने तुरन्त ही राज कर्मचारियों को हुक्म दे दिया कि फौरन चिड़िया का घौंसला उखाड़ कर बाहर फैंक दो। हुक्म की देर थी कि चिड़िया का घौंसला उखाड़ कर फेंक दिया गया। चिड़िया विचारी चैं चैं करती हुई महल के बाहर एक वृक्ष पर बैठ कर विलाप करने लगी, इतने उसका चिड़ा आगया और पूछा क्या बात है। चिड़िया ने आदि अन्त तक सब कथा कह सुनाई, जिसको सुनकर चिड़ा बोला जाने दो कोई चिंता न करो, हम अपना घोंसला कहीं और फिर बना लेंगे। चिड़िया ने कहा, नहीं ऐसा कदापि नहीं होगा, जब तक आप इस राजा का सर्वनाश न कर देंगे—मैं अन्न जल ग्रहण न करूंगी। चिड़ा बोला, अच्छा तो मैं उस राजा का अभी सर्वनाश कर देता हूं।

चिड़ा उसी समय उड़ा और उस नगर और घर में पहुंच गया जहां राजा की लड़की विवाही गई थी।

अनुकूल अवसर देखकर चिड़े ने राजा की लड़की के घर में कुछ धान अपनी चोंच में कर लिया और वापिस आकर राजा के धान में मिला दिया। परिणामतः राजा का सर्वनाश हो गया।

कहने का भावार्थ यह है कि न तो कन्या को बेचकर धन लेना चाहिये, और नाहीं उसके घर की वस्तुओं पर नियत रखनी चाहिए क्योंकि जिस वस्तु को हम एक बार दान कर चुके हैं, उसे वापिस नहीं लेना चाहिए। शास्त्रों का भी, ऐसा ही मत है कि दान एक बार ही होता है, दुबारा नहीं, दी हुई वस्तु को लेने का अधिकार दानी को नहीं है।

नास्तिक के मुख में विष्णु नहीं

ईश्वर व्यापक सब जगह, सब में रहा समाय।
मुख में नास्तिक के नहीं, दीनों में दरसाय॥

सुकामा घाट गंगातट से एक नौका में एक कीर्तन मण्डली सवार होकर गंगापार किसी गांव में कीर्तन करने के लिये जा रही थी। उसी नौका में एक ईश्वर को न माननेवाले नास्तिक व्यक्ति भी बैठे हुए थे। जब नौका चली तब उस मंडली में के एक सज्जन ने हाथ में चूना तमाखू लेकर मलना शुरू किया। इतने में उस

नास्तिक मनुष्य ने उस चूना तमाखू रगड़नेवाले से पूछा कि, भाई तुम लोग कहाँ जा रहे हो? उसने कहा कि हम कीर्तन करने जारहे हैं। नास्तिक ने फिर पूछा कीर्तन किसका करोगे? उसने जवाब दिया कीर्तन विष्णु भगवान का करेंगे। नास्तिक बोला—विष्णु कहां रहते हैं, और कौन हैं? वह तमाखू रगड़ने वाला बोला कि विष्णु परमात्मा ही का नाम है और वह सर्वव्यापक है, वह जल, थल, पर्वत आदि सब जगहों में व्यापक (मौजूद) है। यह कह कर उसने तमाखू चूने को दो एक बार हथेली पर फटका देकर फाँक लिया। नाव चली जा रही थी कुछ मिनट के बाद उस तमाखू खाने वाले ने नीचे को मुंह करके जल में थूकना चाहा, नास्तिक ने झट से कहा कि भाई तुम्हारा विष्णु भगवान तो जल में भी मौजूद हैं। फिर क्या तुम उसके ऊपर थूकोगे? वह बिचारा सुनकर चुप हो गया और मुंह बांधे बैठा रहा। जब नाव गंगा पार पहुंची तब सब लोग नीचे उतरे। तम्बाकू खाने वाले के मुख में बहुत सा थूक भर गया उसने फिर जमीन पर थूकना चाहा। नास्तिक ने फिर रोका और कहा भाई तुम्हारा विष्णु तो धरती में भी मौजूद है, क्या तुम विष्णु पर थूकोगे? ये कहते हुये नास्तिक बोला जब तुम्हारा विष्णु सर्व व्यापक (मौजूद)

है तो तुम कहीं भी नहीं थूक सकते। वह विचारा आस्तिक नास्तिक की बात सुन कर चुपचाप खड़ा रहा, इतने में उस नास्तिक ने अपना मुंह खोल कर जो जंभाई ली तो झट से उस आस्तिक ने उसके खुले हुए मुंह को देखकर अपने मुख का सारा थूक उसके मुंह में थूक दिया। अब तो नास्तिक घबरा गया और उसको बहुत बुरा भला कह कर बोला, तुमने मेरे मुंह में क्यों थूका? आस्तिक बोला सब जगह तो विष्णु भगवान मौजूद थे परन्तु तुम नास्तिक हो तुम्हारे मुंह में विष्णु भगवान थे नहीं, इसलिये हमने तुम्हारे मुंह में थूक दिया। नास्तिक यह सुनकर लज्जित हो गया और वहां से चलता बना।

सज्जनो! तात्पर्य यह है कि जब तक नास्तिकों को आस्तिकों की ओर से ऐसा मुं-तोड़ उत्तर न दिया जाय तब तक वो बाज नहीं आते।

स्वयं विद्वान् होकर अर्थ समझो।

अपनी अपनी सब कहे, सच्ची कहे न कोय।
झूठ साँच का न्याय तो, बिन विद्या न होय॥

पुराने जमाने में एक कोई बड़े राजा थे। वह स्वतः तो शास्त्र शून्य थे किन्तु उनके दरबार में बड़े २ भारी

विद्वान् रहते थे। एक दिन एक कुछ थोड़ा लिखा पढ़ा चालाक पण्डित कहीं दूर देश से आया, उसने यह समझा था कि इस राज्य में कोई हमारे इतना भी पण्डित न होगा, हम बड़े पण्डित कहलायेंगे और हमको बिदाई में बहुत कुछ माल मिलेगा. किन्तु पता लगाने पर यह ज्ञात हुआ कि इस दरबार में बड़े २ विद्वान् रहते हैं। पण्डित ने लोगों से पूछा कि वे विद्वान् दरबार से घर को किस वक्त लौटते हैं। लोगों ने कहा कि दश बजे लौट आते हैं। बस अवसर पाकर ये ग्यारह बजे राजा के पास पहुंचे। राजा ने पालागन किया, इस ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया। राजा ने पूछा कि क्या आप पण्डित हैं इसने कहा जी हाँ, मैं मामूली पण्डित नहीं हूं, मेरी गणना भारी पण्डितोंमें है। राजा ने कहा कि हमारे दरबार में भी पांच सात पण्डित भारी हैं, दो तो ऐसे हैं जो संसार भरके पण्डितों से बड़े गिने जाते हैं। इतना सुनकर नाक भौं चढ़ा कर यह पण्डित बोला कि जी हाँ! मैं सब लीला जानता हूं, वे ही पण्डित हैं न जो प्रातःकाल आपके आगे आकर—

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये॥

यह श्लोक बोला करते हैं। राजा बोले कि क्या

यह श्लोक कुछ बुरा है ? पण्डित जी बोले बुरा तो नहीं किन्तु वे सुबह ही ईश्वर के भजन के समय आपसे रुपये की भीख मांगते हैं। उनको हम पण्डित नहीं कह सकते भिखारी कह सकते हैं। राजा बोले कि महाराज ! इस श्लोक का क्या अर्थ है ? पण्डित जी बोले श्लोक का अर्थ है, रुपया, राजा बोले कैसे ? पण्डित बोले सुनिये 'शुक्लाम्बरधरम्' वह रुपया है, सुफेद वस्त्र को धारण किये है, देखिये ऊपर से सुफेद होता है या नहीं, फिर वह रुपया कैसा है 'विष्णुम्' 'विश् प्रवेशने धातु से' विष्णु बनता है, रुपया संसार में गमन करता है, आज आपके पास है चार दिन में इलाहाबाद चला गया, दश दिन में अयोध्या आ विराजा, महीना भर बाद काशी जा धमका। फिर रुपया कैसा है 'चतुर्भुजम्' चार उसके भुजा हैं, देख लीजिये, एक रुपये में चार चवन्नी होती हैं। फिर रुपया कैसा है 'प्रसन्नवदनं ध्यायेत्' यदि कोई रुपये का ध्यान करले तो उसका चेहरा खिल जाय 'सर्व विघ्नोपशान्तये' यदि मिल जाये तो संसार के सारे विघ्न दूर हो जायं। राजा ने इसको बड़ा भारी पण्डित समझा, एक ही घण्टे में श्लोक और अर्थ दोनों ही कंठ कर लिये। डेढ़ घंटा बैठ कर यह पण्डित बोला कि मुझे बड़ा आवश्यकीय कार्य है, अब मैं आपके

यहाँ ठहर नहीं सकता, मुझे चलने की आज्ञा दीजिये। प्रथम तो राजा ने बड़ी प्रार्थना की कि इतने भागी पंडित प्रारब्ध से मिलते हैं आप कुछ दिन ठहरिये जब नहीं माना तो फिर लाचारी से विदा कर दिया नित्य की भाँति पण्डित लोग दूसरे दिन दरबार में आये, राजा ने पूछा कि 'शुक्लाम्बरधरं विष्णुम्' इस श्लोक का अर्थ बतलाओ ? पण्डितों ने बतलाया कि शुभ्रवस्त्र धारण किये हुये शशिवर्ण चतुर्भुजी प्रसन्नवदनं विष्णु का ध्यान करे तो समस्त विघ्न दूर हो जाय। इस अर्थ को सुनकर राजा बोले कि तुमको कुछ नहीं आता है आज से तुम सब बर्खास्त। विद्वानों को जवाब दे दिया, वे अपने घरों को चले गये। राजधानी समझ कर बड़े २ विद्वान् आये और राजा 'शुक्लाम्बरधरम्' का अर्थ पूछे, रुपया कोई बतलावे नहीं, सब बिष्णु वाला अर्थ करें, राजा तुरन्त भगादे। वर्षों यही हाल रहा। एक दिन एक धूर्त्त पण्डित आया, वह पण्डित भी था और धूर्त्त भी था। उसने सब पता लगाया बात को समझ कर वह भी राजा के यहाँ पहुंचा। राजा ने फौरन पूछा कि 'शुक्लाम्बरधरं विष्णुम्' का क्या अर्थ है ? यह पण्डित बोला कि राजन् ! कोई मूरख मनुष्य इसका अर्थ रुपया कहते हैं और रुपया इसका अर्थ हो नहीं सकता राजा

बोले क्यों नहीं हो, समझा ? पण्डित ने कहा कि शुक्लाम्बरधरम्' उसका अर्थ है सुफेद वस्त्र धारण किये हुये। रुपया सुफेद थोड़े ही धारण किये है, वह तो स्वतः सुफेद है फिर यह अर्थ कैसे घटेगा कि सुफेद वस्त्र धारण किये हुये हैं। राजा बोले तो फिर इसका अर्थ क्या है ? पण्डित बोले इसका अर्थ है दही बड़ा। राजा बोले घटाओ पण्डित जी ने कहा सुनिये वह दही बड़ा कैसा है कि 'शुक्लाम्बरधरम्' आप तो बादामी हैं और ऊपर दही रूप सुफेद वस्त्र धारण किया है । राजा बोले "विष्णुम्' का क्या अर्थ करोगे पण्डित जी ने कहा कि 'विश् प्रवेशने धातु' का है—प्रवेश करता है दही बड़े को मुख में रखिये, न जीभ चलानी पड़े, न दांत घिसाने पड़े मुख में धरते ही खट्ट नीचे पेट में प्रवेश कर जाता है, इसीसे इसको 'विष्णु' कहते हैं । राजा ने पूछा कि 'शशिवर्णम्' का क्या अर्थ होगा ? पण्डित बोले कि चन्द्रमा जैसा वर्ण दही बड़े का है ही इसमें शंका का क्या काम। राजा बोल उठे कि श्लोक में 'चतुर्भुजम्' है । पण्डित ने समझाया कि यह ठीक ही है 'चतुर्णां मनुष्याणां भुजं भोजनम्' चतुर मनुष्यों का भोजन है, गंवार क्या जाने दही बड़ा खाना और प्रसन्नवदनं ध्यायेत् कहीं दही बड़े का ध्यान करले तो सहज सुख हो

(

जाय, मुंह में पानी आजाय नहीं मानते हो तो मन्दाग्नि लो तुम्हारे ही मुह में पानी आगया होगा। 'सर्वविघ्नोपशान्तये' यदि खाने को मिल जावे तो खुरका के रोग दूर हो जाय, फिर एक भी विघ्न न रहे।

इस विलक्षण अर्थ को सुनकर राजा ने कहा कि, पण्डितजी आप हमारे दरबार में रहें। पण्डितजी ने कहा कि, यदि आप हमसे पढ़ें तो हम आपके दरबार में अवश्य रहेंगे। राजा ने पढ़ना स्वीकार कर लिया, पण्डित जी भी रह गये। राजा को पढ़ाने लगे। चार वर्ष में पंडित जी ने राजा को लघु कौमुदी, अमरकोश, रघुवंश पढ़ा दिया। जब राजा पंडितजी होगये तो एक रोज रात को अपने आप इस श्लोक का अर्थ करने लगे। न तो इसका अर्थ रुपया और न दही-बड़ा। राजा ने फौरन पंडितजी को बुलाया, पंडितजी को बुलाकर कहा कि हम तुमको अब फांसी देंगे, तुमने हमारे साथ धोका किया 'शुक्लाम्बर धरम्' इस श्लोक का अर्थ दही बड़ा कब होता है ? आपने 'विष्णु' विशेष्य को भी विशेषण बना दिया। श्लोक में विशेषण कर दिये विशेष्य एक भी न रहा, इसका अर्थ तो 'विष्णु' ही होता है, तुमने हमको धोके में डाला है अब हम तुमको फांसी ज़रूर देंगे। यह सुनकर पंडितजी बोले कि यदि आपको

फांसी देनी है तो उसको दीजिये जिसने आपको इस श्लोक का अर्थ रुपया बतलाया था और हमने तो रुपया रूप अर्थ जाल से निकलने के लिये तुमको दही बड़ा अर्थ बतलाया है हम दही बड़ा अर्थ न करते तो आप उस जाल से नहीं निकल सकते थे, बनावटी अर्थ बना कर जाल से निकाला फिर पढ़ाकर तुमको विद्वान् बनाया, अब हम समझा सकते हैं कि इस श्लोक का अर्थ विष्णु है उस दिन तो आप दश हजार पंडितों के समझाने पर भी नहीं मानते। राजा पंडित के चरणों में गिर पड़ा और जाल में फँसने का पश्चात्ताप करने लगे और जो पंडित पहले बरखास्त कर दिये थे उनको बुला कर राजनीति और धर्म सीखा।

सज्जनो !

जब सांसारिक व्यवहार में मनुष्य धोका खाकर पछताता है तो फिर धर्म में धोखा खाकर तुमको पछताना पड़ेगा, इसका विचार तुम करो। धर्म ज्ञान के लिये कुछ पढ़ना और विद्या बुद्धि के द्वारा सत्य धर्म की परीक्षा कर उसके चरणों मे गिरना यह मनुष्यमात्र का मुख्य कर्तव्य है।

———

धोकेबाजी

दोहा—धोके बाजी मे फंसे सभी लोग चकराय।
एक गधे की मौत पर डाढ़ी मौछ मुड़ाय॥

एक शहर में एक होशियार धोबी रहता था। वह कपड़े बड़े उत्तम धोता था इस कारण शहर के अधिक कपड़े धुलने के लिये इसके यहां आने लगे। जितना बोझ यह ले जा सकता था जब उसके अधिक कपड़े आने लगे तब इसने एक जानवर खरीद लिया यह उसके ऊपर कपड़े लादकर धो लाता था। जब यह कपड़े पछाड़ने के समय आंछी-आंछीं करता था तब वह जानवर भी बोलने लगता था। धोबी ने इस घटना को देखकर सोचा कि यह क्यों बोलता है, अन्त में इसने यह स्थिर किया कि यह गाता है गान की वजह से इस धोबी ने उस जानवर का नाम "गान्धर्व सेन" रख दिया। कुछ समय बीत जाने के बाद धोबी एक दिन बाजार में आया। यह किसी दूकान पर सौदा ले रहा था, चौधरी ने धोबी से कहा कि क्यों रे धोबी! पहले तू तीसरे दिन कपड़े दे जाया करता था और अबकी बार आज अठारह रोज होगये तू अभी तक कपड़े क्यों नहीं लाया? इतना कहने पर धोबी रो उठा और रोता २ बोला कि

"गान्धर्वसेन" मर गये। चौधरी ने समझा कि जैसे 'तानसेन' बड़े गुणी थे इसी प्रकार 'गान्धर्वसेन' भी कोई बड़े गुणी महात्मा होंगे—यह समझकर चौधरी ने पूछा कि 'महात्मा गन्धर्वसेन' ! धोबी महात्मा को न समझा अतएव उसने कह दिया कि जी हां। चौधरी बोले कि बड़ा गजब हो गया संसार का एक भारी महात्मा चल बसा चौधरी ने दूकान पर आकर नाई को बुलाया और महात्मा गन्धर्वसेन के रंज में मुण्डन करवा दिया इसको देखकर बाजार में बड़ी खलबली फैली कि चौधरी के यहाँ आज कौन मर गया। दस भले आदमी इकट्ठे होकर चौधरी की दुकान पर गये जाकर यह पूछा कि यह क्या बात है ? इसको सुनकर चौधरी को बड़ा गुस्सा आया बोल उठा कि आज संसार का एक सबसे बड़ा महात्मा संसार को छोड़ गया और तुमसे इतना भी न हुआ कि उसका रंज भी मनालें। चौधरी की इस डाट को सुन कर लोगों ने मुण्डन को लग्गा लगा दिया एक दो घंटे के अन्दर बाजार सफाचट होगया। सायंकाल उस राजधानी के दीवान हाथी पर बैठकर हवाखाने निकले, बाजार के इस रूप को देखकर अचम्भे में पड़गये, चौधरी से पूछा कि क्या बात है, चौधरी ने बतलाया कि दीवान

साहब ? आज एक संसार का सर्वोपरि पूज्य महात्मा चल बसा, सारे संसार ने उसका रंज मनाया है। दीवान बोले कि तो हमको भी रंज मनाना चाहिये ? चौधरी ने कहा कि जी हुजूर। घर पहुंच कर दीवान साहब भी नाई को बुलाकर सफा चट बन गये। कार्यवश दीवान साहब को राजा के पास जाना पड़ा दीवान को देखकर राजा साहब बोले कि यह क्या। दीवान ने कहा कि हुजूर आज एक संसार के प्रथम श्रेणी के विद्वान महात्मा का स्वर्गवास हो गया। सारे संसार ने उसका शोक मनाया। राजा बोले तो क्या हमको भी मनाना चाहिये। दीवान बोले कि जी हां। नाई को बुलाकर राजा साहब भी वशरह सदर बन गये। रात्री को जब राजा महल में भोजन करने बैठ गये तब रानी ने कहा कि आज तो हमारा और तुम्हारा मुँह एक सा मालूम होता है क्या बात है। राजा ने कहा कि आज संसार के उच्च श्रेणी के महात्मा का बैकुण्ठ वास हुआ है, समस्त संसार ने उसका रंज मनाया है, हमको भी मनाना पड़ा। रानी बोली कि तुम बड़े बेपरवाह हो, हमको तनक भी खबर ना करी, नहीं तो स्त्रियों का व्यवहार अनुकूल हम भी रंज मनाती अस्तु आपने खबर न की तो न सही परन्तु पूछना यह है कि यह महात्मा तुम्हारे बाप लगते थे जो

तुमने मूछ दाढ़ी मुड़वा डाली ये थे कौन ? राजा बोले हमको यह तो मालूम नहीं कि यह कौन थे। रानी बोली यह मजे की रही किस्सा मालूम नहीं और मूछ दाढ़ी सफा चट्ट। राजा भोजन करके बाहर आये चोबदार के जरिये से दीवान को बुलाया, दीवान से पूछा कि यह महात्मा हमारे कौन लगते थे। दीवान बोला कि हुजूर मुझे यह तो मालूम नहीं कि ये थे कौन इनका सब हाल चौधरी साहब जानते हैं। राजा ने चोबदार से चौधरी को बुलवाया और पूछा कि चौधरी साहब यह महात्मा गन्धर्वसेन कौन थे। चौधरी बोला कि सरकार इनका मुझे हाल मालूम नहीं, इनका हाल तो बुद्धू धोबी जानता है। बुद्धू धोबी को बुलाकर पूछा कि क्यों महात्मा गन्धर्व सेन कौन थे। जो इतना कहा तो धोबी रोने लगा। दीवान ने कहा अरे रोता है कि बतलाता है ? इतना सुनकर धोबी रोता २ बोल उठा कि हुजूर उनके मरने से कपड़े ढोते २ मेरी कमर छिल गई। दीवान साहब घबराये और घबरा कर बोले कि राजा साहब पूछते हैं ये कौन था, तू बतलाता क्यों नहीं। धोबी बोला हुजूर मेरा 'गधा' था, सुनते ही सब चुप सन्नाटा खिंच गया। दीवान बोले गजब हो गया, कुछ

भी विचार न किया, गधे के मरने पर मूछें मुड़वादीं पछताने लगे फिर क्या होता है।

भाइयो सांसारिक घटनाओं में धोखा खाने पर मनुष्य मूर्ख बनता है। और उसको पछताना पड़ता है किन्तु जब धर्म के विषय में मनुष्य धोखा खा जाता है तब तो वह दीन दुनिया कहीं का भी नहीं रहता। घोर आपत्ति में पड़कर चिरकाल तक अपने कर्तव्य फल दुःख प्राप्ति भोगता हुआ हां हां कार के नारे लगाया करता है। श्रोताओ तुम इस आपत्ति से बचो, विद्या और बुद्धि के द्वारा सच्चे ज्ञान की उपलब्धि कर उसके चरणों में जा पड़ो, मनुष्य शरीर मिलने का फल यही है।

हुज्जत बाजी

हुज्जत बाजी छोड़ कर, मिल जावो इक वार।
हाथी परा फिर बने होवे वेड़ा पार॥

किसी समय एक गांव में एक हाथी आ गया। सब गांव के मनुष्य हाथी को देखने के लिये गये इस ग्राम में एक अन्धों का पौषणालय था, उसमें कई एक अन्धे रहते थे, उन्होंने भी हाथी के देखने की इच्छा प्रकट की कुछ मनुष्यों को दया आई उन्होंने एक-एक

अन्धे को अपने कंधे पर चढ़ा लिया और हाथी दिखलाने ले चले। हाथी के पास पहुंच एक मनुष्य ने एक अन्धे का हाथ हाथी के कान से लगाकर कहा कि टटोल यह हाथी है। दूसरे ने अपने ऊपर चढ़े हुए अन्धे को पूंछ पकड़ा कर कहा कि पहिचान यह हाथी है। तीसरे ने सूंड़, चौथे ने दांत, पाचवें ने पैर और छठे ने कमर पर हाथ रखवा कर हाथी के जांचने को कहा। इस प्रकार हाथी दिखला कर इन अन्धों को इनके निवास स्थान पर पहुँचा दिया गया। रात्री में जब इनके पास चार मनुष्य आंखों वाले भी बैठे थे तब अन्धों में हाथी का जिक्र चला। एक अन्धे ने पूछा कि क्यों साहब आप हाथी देख आये अब यह तो बतलाओ कि हाथी होता कैसा है ? जिस अन्धे ने हाथी का कान छुआ था वह बोला कि हाथी ऐसा होता है जैसा अनाज पिछोड़ने का सूप (छाज) दूसरा बोला कि तुमने हाथी देखा ही नहीं, हाथी तो ऐसा होता है जैसा मोटा डंडा, इसने पूछ छुई थी। तीसरा सूंड छूने वाला बोल उठा कि मालूम नहीं तुम लोग क्या देख आये हाथी तो ऐसा होता है जैसा धान कूटने का मोटा मूसल। चौथे ने कहा कि तुमने हाथी जाना ही नहीं, हाथी ऐसा

थोड़ा ही होता है जैसा कि तुम बतलाते हो, हाथी तो हमने देखा है हमसे सुनिए, हाथी ऐसा होता है मानों चिकनी २ गदा (मोंगरी) उसने दांत देखे थे। पैर देखने बोला कि तुम्हारी आंखें तो फूटी ही थीं मालूम होता है कि हाथ भी टूट गये थे, हमनें खूब हाथ फेर कर देखा, हाथी होता है जैसा खम्भा। छठा बोला कि नहीं मालूम तुम क्या देख आये, हमने खूब हाथ फेरकर देखा, हाथी क्या था कपड़ों का बिटहा था। इस प्रकार एक दूसरे की बात को न मानकर हर एक अन्धा अपनी अपनी बात को सत्य करना चाहता था। जब बहुत विवाद होने लगा तब एक मनुष्य ने कहा कि इन सब अंगों को मिलालो हाथी हो गया। जिस प्रकार इन समस्त अंगों के मिलने से हाथी होता है उसी प्रकार धर्म के टुकड़ों को एक जगह मिला देने से एक धर्म का विशाल स्तम्भ बन जाता है।

कहने का भावार्थ यह है कि यदि मनुष्य मात्र आपस की दलील बाज़ी में समय न खोकर सत्य के विशाल सत्य की ओर अग्रसर हों तो यह संगठन उनको भव सागर से पार लगा देगा और विश्व एवं प्राणीमात्र का कल्याण हो सकता है।

स्वरूप रक्षा

असल नकल में जब मिले, तो नकल असल हो जाय।
रक्षा अपने रूप की, जो करता सुख पाय॥

किसी दिन एक बहरूपिये ने अपने शहर के राजा से कुछ इनाम माँगने की सोची। सिर पर छप्पर सा हैट लगाया, आँखों पर चश्मा ताना मोजे बूट पहिनकर पूरा अंगरेज बन गया और राजदरबार में पहुंचकर जा सलाम की। राजा भी उसको भांप गया। फिर भी बातें करता ही रहा कुछ देर बातचीत करने पर बहरूपिये ने अपना इनाम तलब करना चाहा! राजा साहब खूब खिलखिलाकर हंसे और कहा ऐसे इनाम नहीं मिला करता, अभी कुछ दिन और सबक सीखो, इनाम तब मिलेगा जब तुम हमको धोका दोगे आज तो हमने तुमको आते ही पहिचान लिया था।

बहरूपिया शर्मिन्दा होकर राजदरबार से बाहर निकल आया और उसके दिमाग में ये बात समा गई कि—"धोका देने से इनाम मिलेगा"। उसने उसी दिन से एक ऐसे तेल का इस्तैमाल करना शुरू कर दिया कि छः महीने में ही उसके बाल एड़ी तक पहुंचने लगे, बालों का जूड़ा बनाया लंगोट कस लिया शरीर में भस्म

रमाई तूंबा चिमटा लेकर पूरे बाबा जी बन गये उसी राजा के राजमहल से कुछ दूर जंगल में चिमटा गाड़ दिया, दो चार बड़े २ लक्कड़ जला दिये और समाधी लगाकर चुपचाप बैठे रहने लगे। जल्दी ही शहर में खबर उड़ने लगी नगर निवासी के सौभाग्य से एक सिद्ध बाबाजी जंगल में तपस्या कर रहे हैं। न कुछ खाते हैं न पीते हैं और नाहीं दिशा जंगल एवं पेशाब को ही जाते हैं। अब तो बाबाजी के दर्शनों को शहर के बड़े २ सेठों रईसों और तालुकेदारों की अपार भीड़ आने लगी। पर बाबाजी को किसी से मतलब नहीं आने वाले आते थे और प्रणाम करके बैठे जाते थे और थोड़ी देर बैठ कर चले जाते थे। धीरे २ उस सिद्ध पुरुष की प्रशंसा राज महलों में भी होने लगी। राजा साहब ने भी ऐसे परम तपस्वी के दर्शन करने की अभिलाषा दीवान साहब से प्रकट की। फिटन तैयार हुई, राजा और दीवान, रानी और दीवान की पत्नि ये चारों दर्शनों को गये। बाबाजी को देखकर चारों फिटन से उतरे और राजाजी ने जाकर बाबाजी को प्रणाम किया। बहरूपिये ने भी उनको पहिचान लिया और पीछे को मुंह फेर लिया। दीवान जी ने जाकर पीछे से प्रणाम किया बाबाजी दाईं तरफ को मटक कर बैठ गये, उधर रानी साहिबा पहुंच

गई बाबाजी ने बाई तरफ को मुंह फेर लिया उधर से दीवान की धर्म पत्नि ने जाकर प्रणाम किया अब तो साधू जी की नाक में दम आगया और नीचे को मुंह लटका कर बैठ गये। दीवान ने बहुतेरा कहा कि ये अमुक स्थान के राजा हैं, ज्ञानवान हैं धार्मिक हैं और आपका आशीर्वाद लेने आये हैं फिर भी बाबाजी टस से मस न हुए।

रानी साहिबा के मन पर बाबाजी के इस विकट त्याग का बहुत भारी प्रभाव पड़ा और उसी समय अपना दो लाख का हार बाबाजी के चरणों में अर्पण कर दिया। बाबाजी ने उठाकर उसे धूनी में रख दिया। धूनी में बड़ी २ लकड़ियाँ जल रहीं थीं आग के जोर से हीरे जवाहरात टूट २ कर आवाज करने लगे पर बाबाजी को अब भी परवाह न थी। अन्त में इस विकट त्याग की प्रशंसा करते हुए चारों जने फिटन में जा बैठे। गाड़ी चलने को ही थी कि बाबाजी भागे २ आये और सलाम करके कहा अन्नदाता अब इनाम मिले? मैं वही बहरूपिया हूं जिससे आपने वायदा किया था कि धोका देने पर इनाम मिलेगा। लाइये अब इनाम। राजा क्रोध से लाल हो गया और लाल २ आंखें करके बोला हट जा पाजी मक्कार सामने से। तुझे अब क्या इनाम

मिल सकता है यदि तुम उस हार को अपनी मूर्खता से आग में न डालते तो उसके जवाहरातों से तुम्हारी कई पुस्तें रोटियां खातीं, दो लाख के हार को आग में फैंक कर अब इनाम मांगता है।

बहरूपिये ने हाथ जोड़कर कहा भगवन् मैं उस समय एक त्यागी और योगी के स्वरूप को धारण किये हुये था। उस समय अगर मैं लोभ कर जाता और हार को अपने पास रख लेता तो मेरे त्यागी के स्वरूप में जन्म भर को धब्बा लग जाता। नकली स्वरूप की रक्षा के लिए मैंने आपके वेशकीमती हार को आग में फैंक कर त्याग की उत्तमता दिखलाई है अब आपको अधिकार है कि इनाम दें या न दें। राजा सोचने लगे ओ हो हमने तो समझा था कि इसने अपनी मूर्खता से हार को अग्नि में डाल दिया है, किन्तु इसने सब कुछ स्वरूप रक्षा के लिए किया। स्वरूप रक्षा संसार में निस्सन्देह बड़ी चीज है।

प्रिय पाठको! हमारे कहने का भाव यह है कि नकली स्वरूप रक्षा के लिए एक बहरूपिया दो लाख के जवाहरात को हाथ से खो देता है। किन्तु वर्तमानकाल मे नामधारी हिन्दुओं ने अपने स्वरूप की रक्षा के लिए क्या त्याग किया है? आज भारत के पवित्र धर्म की

गर्दन काटकर होटल बोतल मोजी नाम धारी लीडर प्लीडर गीदड़ जो धर्म कर्म हीन होने के कारण हिन्दू स्वरूप की वैदिक वर्ण व्यवस्था को ढोंग बतलाकर असली हिन्दू स्वरूप की जो छोलालेदर कर रहे हैं उसका प्रत्यक्ष प्रमाण आज धारा सभाओं द्वारा जनता जनार्दन समक्ष काले विषधर की भांति जहर उगलता आ रहा है जिस ईसाई धर्म की स्वरूप की रक्षा के लिये वृटिश सरकार तथा अमेरिका ने भारत में अपनी गाढ़ी कमाई के पैसे को पानी की तरह बहा दिया। जिसे तुम देखते हुए भी नहीं देख रहे हो तो भी हिन्दु स्वरूपकी रक्षा के लिए क्यों नहीं प्रबल उद्योग करते। सारांश यह है कि जिसने अपने स्वरूप रक्षा न की उसको एक न एक दिन अपनी सत्ता से ही हाथ धोना पड़ेगा। अतः सबको अपने स्वरूप रक्षा के लिए कटिबद्ध होना चाहिये।

कल्पित मिथ्या स्वरूप।

अपना आपा भूल कर दूजे के सिर होय।
ऐसे मूर्ख पुरुष का, मान करे ना कोय॥

इस भूल को हम एक दृष्टान्त से समझाते हैं—
किसी दिन एक नाई, दूसरा गञ्जा, तीसरा भौंद, चौथा

डिल्लू ये चार मनुष्य मिलकर विदेश को चले। चलते-चलते रात्रि को किसी घोर बन में ठहरें और दस बजे तक सब जागते रहे और बारह बजे नाई भौंदू को जगा कर आप सो जावे और भौंदू दो बजे गंजे को जगा दे और फिर आप सो जावे और गंजा चार बजे डिल्लू को जगावे और डिल्लू छैः बजे सबको जगा दे ताकि फिर चल दें। ये प्रबन्ध करके तीन सज्जन तो सो गये और नाई पहरा देने लगा। उजियाली रात्रि थी चन्द्रमा भूतल को प्रकाशित कर रहा था जब ग्यारह बजे नाई ने सोचा कि बैठे २ कैसे रात्रि कटे चलो कुछ काम ही करें। नाई कुये से पानी भर लाया और उसने धीरे २ सोते हुये भौंदू के बाल भिगोये गर्मी का मौसम था सिर में ठण्डा पानी लगने से भौंदू को और भी गहरी नींद आ गई। नाई ने भी छुरा उठा कर भौंदू के बाल बनाने आरम्भ कर दिये और धीरे २ समस्त सिर के ऐसे बाल बनाये कि सिर में एक भी खूटी ना रही। और उसका सिर टिमाटर की तरह चिकना हो गया। बाल बनाकर नाई ने अपनी पेटी बन्द की कि इतने में बारह बजे। बारह बजते ही नाई ने भौंदू को जगा कर कहा कि बारह बज गये हैं अब तुम जागो और हम सोते हैं। भौंदू ने बैठते ही हाथ फेरा, सिर चिकना जान पड़ा इस

घटना को देख मोंदू मारे क्रोध के आग हो गया। और नाई को गाली देकर बोला कि तुमको चाहिये था कि तुम हमको जगाते मगर तुमने हमें छोड़ इस गंजे को क्यों जगाया। अब नाई कहता है हमने तुम्हें जगाया है और मोंदू कहता है नहीं नहीं तुमने गजे को जगाया है पाठक वृन्द जिस प्रकार सिर पर बाल न रहने के कारण मोंदू ने अपने को गंजा मानलिया इस प्रकार तुम अपने असली स्वरूप ब्रह्मत्व को तो भूल गये इसके विरुद्ध तुमने अपने को अल्प शान्ति शरीर मात्र व्यापक ब्रह्म से सदा अलग रहने वाला जीव मान लिया। मान लो! मगर वेद-शास्त्र इसके साक्षी नहीं हैं।

भावार्थ यह है कि निर्गुण ब्रह्म ही माया के गुणों में प्रवेश कर जीव बनता है और वो जीव देव, दैत्य, असुर, मनुष्य आदि शरीर धारण करके दूसरों को मारता है या दूसरे के जरिये आप मरता है इससे भी इस जीव का ब्रह्म से आना सिद्ध है। भगवान व्यासजी ने सैकड़ों स्थलों में मूल भागवत महापुराण में स्पष्ट कर दिया है कि जीव का आगमन ब्रह्म से हुआ है। मगर मनुष्य इस आत्मज्ञान के समझने में त्रुटि करता है। इस कारण वह अपने स्वरूप को सर्वदा के लिये भूल

जाते हैं । इसी भूल को समझाने के लिये हमने उपरोक्त दृष्टान्त द्वारा प्रयत्न किया है ।

हम ये हैं या वो हैं

"हम ये हैं या वो हैं", इसका नहीं ज्ञान ।
भग भवानी से सभी, भूल गये पहिचान ॥

एक भंगड़ एक समय अपनी रिस्तेदारी में चला, कपड़े-लत्ते सब बांध लिये चलने ही को था इतने में स्मरण हो उठा कि ओ हो ! विजिया (भङ्ग) तो ली ही नहीं, स्मरण आने पर इसने पाव भर विजिया और उसको घोटने के लिये कूंडी सोटा ले लिया और फिर चल दिया । चला जा रहा था दिन के बारह बज चुके थे इतने में सड़क के किनारे एक वह वृक्ष दिखाई दिया । यह उसके नीचे गया और अवलोकन करने से मालूम हुआ कि बड़ का पेड़ लम्बा चौड़ा है तथा उसकी छाया घनी है एवं बड़की बगल में ही एक कुआ भी है । देख कर बोला वाह वाह ! बड़ा साधन मिला, अब तो यहीं विजिया छनेगी, सब कपड़े रख दिये, विजिया निकाली, कुये से पानी निकाल विजिया को खूब धोया और फिर चला कूंडी में सोटा, थोड़ी देर में तैयार हो गई छानी

मंगला चरण पढ़े और पी गये, फिर दिशा जंगल गये स्नान किया कुछ खाया पिया और अन्त में दरी बिछा कर सोने लगे ! सोते समय याद आया कि सब चीज़ तो ठिकाने रखली किन्तु कूंड़ी सोटा बाहर रह गया ऐसा न हो कोई उठा ले जावे विचार के बाद कूंड़ी सोटे को अंगोछे से कमर में बांध कर सो गये, इसी अवसर पर उसका भाई भंगड़ दूसरा आ गया ? बड़की छाया और कुये को देखकर उसका मन खिल उठा सोचने लगा क्या बतावें हमारे पास कूंडी सोटा नहीं हैं वरना तो आज विजिया का मजा उठाता । उसी समय उसकी दृष्टि कूंडो सोटे पर पड़ी जिसे पहले भंगड़ ने कमर से बाध रक्खा था ! उसने सोचा क्यों ना कूंडी सोटा खोलकर अपना काम करलै और फिर इसे कमर से ही बांध दें ! अंगोछा और कूंडी सोटा खोल कर यह हज़रत अपने काम में लग गये फिर भी दूसरे कुम्भकर्ण की आंखें खुलीं ! इसने भंग घोटी, छानी, पी दिशा मैदान को गया आकर स्नान किया, भोजन खाया और सोने लगा । अब याद आई कि कूंडी सोटा उसकी कमर में बांध दें फिर शयन करें, बांधने को उठा और दूसरे की कमर में बांधना भूलकर अपनी ही कमर में कूंडी सोटे कस लिये और निश्चिन्त सो गया !

इतने में दूसरे आदमी की भी आँखें खुली, देखा कि हम कूंडी सोटा अपनी कमर में बांध कर सोये थे, अब दूसरे की कमर में बंधा है ये क्या बात है ? विचार करने लगा कि "हम ये हैं या हम वे हैं" हम हैं तो कौन हैं अगर हम लाल दरी वाले हैं तब तो हम ये हैं और अगर हम कूंडा सोटे वाले हैं तो हम वे हैं।

प्रिय पाठको कहने का भाव यह है वर्तमानकाल में बहुत से नामधारी हिन्दू अपने को हिन्दू कहने का दावा रखते हुये त्रुटियाँ और जनेऊ धारण करते हैं परन्तु वैदिक मर्यादा को नष्ट-भ्रष्ट कर मनुष्य-मात्र के भोजन को एक करना चाहते हैं और विदेशी सभ्यता के प्रभाव से दिन रात कोट हट पतलून बूट में डटे रहते हैं। उनकी भी ठीक यही दशा है जैसी कि ऊपर के दो भंगड़ों की, वे अपने आपको तथा अपनी वस्तु को अपने आचरण को एवम् मर्यादा पहचान तक भी नहीं सकते, जब वो त्रुटियाँ जनेऊ को देखेंगे तब कह उठेंगे कि हम हिन्दू हैं और जब मनुष्य मात्र के एक भोजन को और विदेशी ठाट बाट को देखेंगे तो समझेंगे कि हम ईसाई हैं। संक्षेप में हिन्दू जाति को अपनी प्राचीन मर्यादाओं को पालन करते हुये अपने को सजीव बनाना चाहिये और हम ये हैं या हम वे हैं इस भ्रम में न पड़ना चाहिये।

सृष्टि ईश्वर रचित है।

परमाणु से सृष्टि की रचना कभी ना होय।
सृष्टि रचेता ईश्वर, दूजा नाही कोय॥

किसी नगर में कोई प्रभुदयालजी वकील बी० ए० ऐल-ऐल० बी० थे। एक दिन वह रात को अपने बैठक खाने में आराम कर रहे थे। उस कमरे के पास ही उनका था। वकील साहब स्वभाव के बहुत तर्कप्रिय थे, अंग्रेजी पढ़े होने के कारण उनका बहुत कुछ विश्वास हिन्दू धर्म पर से जाता रहा था। उनको इसमें भी सन्देह था कि सृष्टि ईश्वर रचित नहीं है बल्कि परमाणुओं के एक जगह मिल जाने से यह सारा संसार बना है। जहां वकील साहब इतने तर्कवादी थे वहां उनका लड़का रामकिशोर धार्मिक, श्रद्धा एवं तर्क से परे था। वकील साहब को किसी वस्तु की आवश्यकता पड़ी और उन्होंने रामकिशोर को आवाज दी। आवाज के साथ ही रामकिशोर ने उत्तर दिया पिता जी अभी आता हूं। वकील साहब लड़के की इन्तजारी में आध घंटा बैठे रहे, आध घंटे के बाद लड़का आया। लड़के को देखते ही वकील साहब कोंच से उछल कर बोले तुम कहां थे ? क्या करने लग गये थे ? रामकिशोर ने कहा—मैं ठाकुर जी की आरती कर रहा था। वकील

साहब हैरान होकर पूछने लगे ठाकुर क्या बला है ? रामकिशोर ने कहा कि सृष्टि रचयिता ईश्वर है। वकील साहब को यह सुनकर क्रोध का आर पार न रहा और बोल उठे कि रामकिशोर तुमने मैट्रिक पास करने में यों ही दस साल खराब कर दिये। किन्तु दकियेनूसी हिन्दू धर्म की बू तुम्हारे दिमागेशरीफ से न गई ? क्या ईश्वर की भी कोई सत्ता है और उसके मानने की क्या जरूरत है ? रामकिशोर ने कहा पिता जी यदि आपके मत में सृष्टि बनाने वाला ईश्वर नहीं है तो ये सकल सृष्टि किसने बनाई ? वकील साहब ने फरमाया दुनिया के आरम्भ में परमाणु आकाश मण्डल में यत्र तत्र विचरण करते थे। एक स्थान में बहुत से परमाणु इकट्ठे हो गये और यह संसार बन गया, मुझे नहीं मालूम इस संसार रचना में ईश्वर की कल्पना करने की क्या आवश्यकता है ?

इतने में ही वकील साहब के नौकर ने आवाज दी खाना तैयार है। रामकिशोर को भी मौका मिल गया और वो यह कहता हुआ उठ खड़ा हुआ कि पिता जी अब आप खाना खा लीजिये, सृष्टि चर्चा कल चलेगी।

दूसरे दिन रामकिशोर कालेज में गये, पढ़ना लिखना बन्द कर दिया, किताबें अलग रख दीं और एक बहुत

खूबसूरत तस्वीर खींची और उसको नाना प्रकार के रंगों से सुशोभित किया। रंग भरने के बाद रामकिशोर ने उस तस्वीर को वकील साहब के कमरे की खिड़की के पास वाली मेज पर रख दिया और खिड़की में हरे, लाल, पीले रंग की पेनसिल रख दीं। शाम के वक्त जो वकील साहब शहर से वापिस आये और उस खूबसूरत तस्वीर को देखा तो आश्चर्यमग्न होगये, फौरन ही रामकिशोर को आवाज दी और कहा बेटा! यह खूबसूरत तस्वीर किसने खैंची है? रामकिशोर मुस्कराते बोला पिता जी यह तस्वीर किसी ने नहीं खैंची वरन् आप ही खिंच गई? पूर्व की तरफ एक कागज रक्खा था, पश्चिम की तरफ पेन्सिल थी जैसे ही पश्चिम की हवा चली वैसे ही पेन्सिलों के परमाणु इस कागज पर आकर जम गये जिससे यह तस्वीर बन गई। वकील साहब झेंपते हुये बोले हमको बताओ मत, हम भी कुछ पढ़े लिखे हैं। ये कभी हो ही नहीं सकता कि लाल परमाणु सब एक ही जगह जमा हों और हरे २ परमाणु किसी दूसरी जगह फिर जड़ परमाणुओं में इतना ज्ञान कहां। हम दावे से कहते हैं यह तस्वीर परमाणु रचित नहीं बल्कि किसी बुद्धिमान मनुष्य का काम है। रामकिशोर ने उत्तर देते हुए कहा यदि तस्वीर अपने आप

नहीं खिंच सकती तो दुनियां भी अपने आप नहीं बन सकती। जब आपके मत में परमाणुओं से सृष्टि तक बन जाती है तो क्या कारण है कि परमाणुओं द्वारा तस्वीर न खिंच सके? जिस प्रकार आपका यह दावा है कि यह तस्वीर किसी बुद्धिमान मनुष्य की बनाई हुई उसी प्रकार मेरा दावा भी है यह सकल संसार परमाणु रचित नहीं। बल्कि जगदीश्वर रचित है जिसकी कल मैं आरती कर रहा था। अब आप ईश्वर का खण्डन करिए कैसे करते हैं? इसको सुनकर वकील साहब चुप होगये।

कहने का प्रयोजन यह है कि वर्तमान कालमें बहुत से विदेशानुरागी स्वदेशविरागी सज्जन जो संस्कृत साहित्य से नौ फुट दूर रहते हैं और धर्म कर्म को त्यागना चाहते हैं वो संसार को कर्ता रहित सिद्ध करते हैं और जड़ पदार्थों को संसार का कर्ता मान कर अपनी नास्तिकता का परिचय देते हैं।

क्यों?

यत्न विफल सारे हुये, नैया नाहीं पार।
'क्यों' के खूंटे बध रही, जीवन की पतवार॥

एक बार आठ आदमियों ने मिलकर यह विचार

किया कि हमें अपने गांव में पड़े हुये बहुत दिन हो गये, कुछ द्रव्य भी नहीं कमाया, चलो कलकत्ते नौकरी करने को चलें। विचार पक्का हो गया, फिर सोचने लगे यार सबकी पाकिट तो सिफर से जर्व खाई हुई हैं, टिकट किस तरह लेंगे और पैदल भी इतनी दूर नहीं जा सकते तो क्या करें ? एक मनुष्य ने कहा हमें एक युक्ति सूझ गई, घाट पर नावें बहुत रहती हैं, आठ नौ बजे बाद सब मल्लाह तो नावें छोड़ कर अपने २ घर चले जाते हैं, तब एक नाव पर सवार हो जावें और चार पाँच मिनट में कलकत्ता पहुंच जावेंगे। इस बात को सबने स्वीकार कर लिया, दो दिन बाद ही सब अपना अपना बोरिया बिस्तर लेकर नदी किनारे पहुंचे और जब सब मल्लाह अपने अपने घरों को चले गये तब सब नाव में सवार हो गये। एक ने पंखा चलाकर नाव को चलाना शुरू कर दिया, जब रात के बारह बज गये तब उनमें से एक मनुष्य बोला कि अब हम कहां आ गये ? दूसरा बोला तू निपट अन्धा ही है देखता नहीं सामने पटना शहर है ? पंखे चलाने वाला बदल दिया गया। कई एक मनुष्य तम्बाखू पीते रहे, कई सो गए। अन्दाजन जब दो बज गये तो एक मनुष्य ने पूछा कि अब हम कहां आ गये ? दूसरा बोला जरा दाहिनी

तरफ देखिये यह थोडी दूर पर मुकामा है। उनमें से दो तीन सज्जन बोल उठे—हां हां ये मुकामा हैं, फिर सो गये फिर चार बजे पंखा चलाने वाले ने सबको जगाया और कहा कि अब हम बिल्कुल थक गये हैं। कोई दूसरा आदमी आवे और पंखा चलावें। पंखा चलाने वाला बदल दिया गया और फिर विचार हुआ कि अब हम कहां आ गये? एक ने कहा दीखता नहीं वो चार फरलांग पर मुंगेर है। दो एक ने कहा हां हां मूंगेर है। सवा छः बजे जब पंखा वाला थक गया तो फिर उसने सब को जगाया और कहा कोई दूसरा आजाओ हम थक गये हैं। दूसरा आदमी पंखे पर चला गया और सब सो गये फिर थोड़ी देर बाद जब पौ फटने लगी तब कुछ आदमी जागे और उन्होंने एक आदमी किनारे पर खड़ा हुआ देखा उससे पूछा ये कौन शहर है? उत्तर मिला हाजीपुर है। अब ये सब चौंक पड़े और देखने लगे ये कौन शहर है? एक बोला यार ये तो हमारे शहर जैसा ही शहर है, दूसरा बोला उल्लू कहीं के हमारे जैसा शहर कैसे हो सकता है! तीसरे ने कहा ये तो हाजीपुर है अब तो सब दंग रह गये और विचार करने लगे कि हमारी नाव गंडकी नदी से चलकर गंगा में आगई फिर पटना निकल गया, मुकामा निकला,

मुंगेर पीछे रह गया नाव आगे आ गई, अब ये हाजीपुर आया तो कैसे आया ? नाव उलटी कैसे लौट आई खोजते-खोजते पता लगा कि चलाते वक्त नाव की रस्सी जो तीर के खूटे में बंधी है उसको खोलना भूल गये वैसे ही पंखे चलाते रहे और कल्पित पटना, मुकामा, मुंगेर सब अपने मन से निकल आये नाव हाजीपुर की हाजीपुर में ही रही।

प्रिय पाठकों कहने का तात्पर्य यह है कि प्रायः आज हिन्दू जाती के कुछ नेताओं के पीछे भी "क्यों" रूपी खूंटा गढ़ा हुआ है जिससे उनकी जीवन नौका भवसागर से नहीं निकलती, वो बात-बात में तर्क शैली को लेकर "क्यों" की कसौटी पर कसते हैं, वैसे दिखावे के लिये बड़े बड़े बाल बढ़ा कर वेदों से साररूप गीता को हाथ में रखकर, स्टेज पर मेढक की तरह टर्रा २ कर गीता का सन्देश सुनाया करते हैं। और जो धर्म के सच्चे सिद्धान्त हैं उनको स्वार्थवश या समझने की शक्ति न रखने के कारण एवम् अपनी प्राचीन जाति का छिपाते हुये "क्यों" रूपी खूंटे से बंधे रहते हैं ? आज यदि हिन्दू जाति में सच्ची जागृति पैदा करनी है तो "क्यों" रूपी खूंटे को खोलना होगा नहीं तो वह समय

निकल जायगा और नेताओं की स्कीमें भी विफल हो जायेंगी और हिन्दू जाति की नौका "क्यों" के खूंटे से बंधी रहकर वहीं की वहीं रह जायगी।

जिद रूपी बिल्ली

जिद की बिल्ली ने दिया, ज्ञान दृष्टि को खोय।
बुरे मार्ग में खुद चले, फिर काहे को रोय॥

एक स्थान में एक विस्तृत हास्पिटल था, उस हास्पिटल में एक प्रवीण डाक्टर था, वह नित्य ही सौ पचास अन्धों के नेत्र बनाया करता था। इस हास्पिटल में दूर दूर से अन्धे आते और नेत्र वाले बनकर अपने घर को वापिस चले आया करते थे। एक दिन नित्य की भांति डाक्टर साहब ने पचास साठ अन्धों के नेत्र बनाकर उन सब को वार्ड में पहुंचा दिया, जब वह वार्ड में पहुंच गये तब डाक्टर साहब उनके पास आये और सबको समझाया कि तुम्हारे नेत्र बड़े अच्छे बने हैं जिस समय तुम्हारी पट्टी खुल जावेगी तुम्हारी दृष्टि बच्चों की दृष्टि के समान तेज होगी किन्तु अब तुम्हारा यह कर्तव्य है कि तुम चौबीस घण्टे सीधे लेटे रहो, बोलो मत, शरीर को हिलाओ मत, निश्चेष्ट पड़े रहो। यह

कह कर डाक्टर साहब चले गये। दस-बारह घण्टे उस वार्ड के अन्धे निश्चेष्ट पड़े रहें, इसके बाद एक अन्धे के ऊपर बिल्ली कूद गई। इस बिल्ली के कूदने से घबड़ा कर उसका शरीर हिल गया, इसने अपने मन में सोचा कि हमारी तो आंख बिगड़ गई मगर हमारे पड़ोसी की आंख अच्छी क्यों बने, यह शोच यह हजरत उठ बैठा और पास में जो दूसरा अन्धा पड़ा था उसके एक लात मार कर बोला कि ससुर चुपचाप पड़ा है हमारे ऊपर बिल्ली कूद गई, यह न हुआ कि बिल्ली को पहले ही दूर भगा देता। यह सुन दूसरा मनुष्य उठा और उसने तीसरे के दो थप्पड़ लगाये। भाव यह है कि प्रत्येक अन्धा दूसरे पर धावा बोल गया। फिर उन अन्धों की आपस में ऐसी ठनी चार घण्टे तक रूस जापान के युद्ध का दृश्य आ गया। वार्ड के नियत नौकरों ने डाक्टर साहब को खबर दी, डाक्टर साहब ने आकर देखा और अन्धों को कहा कि तुम्हारे नेत्र तो बड़े बढ़िया बने थे किन्तु तुमने हमारे कथन को नहीं माना अब तुम्हारी आंखें बिगड़ गई, अब यदि हम भी चाहें तो हमसे भी तुम्हारी आंखें ठीक नहीं हो सकती, अब तुम वार्ड छोड़ो और अपने अपने घर जाओ। डाक्टर ने सबको वार्ड से निकलवा दिया और वे अन्धे वहां से चल दिये।

यह एक दृष्टान्त है, इसमें भूतल एक स्थान है और भारतवर्ष हास्पिटल है, डाक्टर जगदीश्वर है वह चाहता है कि समस्त जीवों को ज्ञानचक्षु प्राप्त हों, वह समझाता है कि हमारे उपदेश वेद को यथार्थ मानो, वेद के मानने में कोई उधम न उतारो, इस तरह से तुमको भव्य ज्ञानचक्षु की प्राप्ति होगी किन्तु जिनके ऊपर जिद्‌रूपी बिल्ली कूद बैठी है वे बिना ऊधम उतारे कहीं रह सकते हैं? फल यह होता है कि वेद में हुज्जत लगाने वाले लोगों को ज्ञानचक्षु की प्राप्ति नहीं होती।

सच्चाई

सच की नौका पार है, झूठ की है मँझधार।
एक सत्य के वास्ते, मिल जाये करतार॥

एक हिन्दु आसामी ने किसी मुसलमान साहूकार से सवासौ रुपये मांगे, साहूकार उसकी हैसियत को जानता था कि यह एक पाई का जमींदार भी है और इसके पास पच्चीस बीघे मौरूसी जमीन है, दो मकान हैं, दो जोड़ी बैल और एक गाड़ी तथा तीन भैंसें मौजूद हैं, रुपया दे दिया और दो वर्ष का वायदा ठहराकर तमस्सुक लिखवा लिया। दो वर्ष हुए और तीन वर्ष म्याद के

बीतने पर आये, साहूकार ने तकाजा किया, आसामी ने कहा कि मेरी जमीन निकल गई, नकद रुपया घर में नहीं। रुपये किसी दरख्त में नहीं लगते जो तोड़कर आपको दे दूं। साहूकार ने कहा कि अच्छा, इस समय नहीं दे सकते तो न सही, तुम कागज बदल दो क्योंकि पुराने कागज़ की म्याद खतम होना चाहती है। आसामी ने कहा कि मै गिरधारीलाल के यहां पांच आने रोज का नौकर हूं, कागज लिखने में कुछ देर लगेगी, गिरधारीलाल मेरी गैरहाजिरी करके तनख्वाह काट लेंगे, बाल बच्चे भूखों मरेंगे इस कारण मैं तो अपनी नौकरी पर जाता हूं, साहूकार ने कहा कि, बात सुनो, भागो नहीं, हम कागज के दाम देंगे, कागज की लिखाई दे लेंगे, तुम्हारी एक दिन की मजदूरी पाँच आने जो तुम्हें मिलते हैं वे पांच आने भी तुम्हें दे देंगे, तुम कल आजाओ और कागज बदल दो। इसको सुन आसामी ने कहा कि मैं ऐसे झगड़े में नहीं पड़ता इतना कहकर चल दिया। साहूकार ने लाचार होकर नालिश करदी, अब क्या था, लगी सूरसी दक्षिणा बंटने। तीन रुपये स्टाम्प के बीस रुपये वकील के, आठ आने वकालत नामा, दो रुपये अर्जी लिखवाई, तीन रुपये

सम्मन, आठ रुपये गवाहों की खुराक, दो आने चटर पेटर, आठ आने की पूरियां, दो पैसे के पान, एक पैसा पानी पाण्डे को और साहूकार अपने कारिन्दा से बोले कि मुन्शी जी ! पांच रुपये और लिख देना, मुन्शी जी ने पूछा कि किसके नाम ? साहूकार झुंझलाकर बोला कि तुम बड़े गंवार हो, किसी बहाने से लिखना, ये पेशकार को दिये गये हैं। हिन्दुओं के यहां जब लड़का लड़की का विवाह हो चुकता है तब आये ब्राह्मणों को दो-दो चार-चार आने पैसे बांटे जाते हैं, उसको भूरसी दक्षिणा कहते हैं। आजकल ये पैसे बंटते देख सुधारकों के पेट में वायगोला उठ बैठता है इस कारण विवाह की भूरसी दक्षिणा प्रायः बन्द हो चली है। इसके विरुद्ध अदालत की भूरसी दक्षिणा बटते देख सुधारकों को वह खुशी होती है मानो इसी दक्षिणा से इनको स्वराज्य मिलेगा और इसी दक्षिणा से ही ये रजिस्टर्ड अदालत द्वारा बंगाल के गवर्नर बनाये जायेंगे।

अस्तु मुकद्दमा चला, साहूकार की तरफ से एक कालका प्रसाद नामक गवाह पेश हुये। मजिस्ट्रेट ने पूछा कि क्या इस आसामी ने तुम्हारी रूबरू रुपये लिये थे ? उत्तर दिया कि जी हां। मुद्दालह ने पूछा कि रुपये दिये गये या नोट ? गवाह ने बतलाया कि दस दस के

बारह नोट और पांच रुपये। फिर मुन्सिफ ने सवाल किया कि इसको कितना अर्सा हुआ? गवाह बोला कि लगभग पांच वर्ष। मुन्सिफ ने फिर सवाल कर दिया कि उस समय टायम क्या था? गवाह उत्तर देता है कि दिन के चार बजकर तीन मिनट हुये थे। मुन्सिफ ने प्रश्न किये कि रुपये कौन मकान में दिये गये थे? कि खां साहब के कमरे में। खां साहब अपनी गद्दी पर उत्तर को मुंह किये बैठे थे और आसामी का मुंह दक्षिण को था। हम खां साहब की दाहिनी तरफ पूरब को बैठे एवं हमारा मुंह पश्चिम को था। इस हजरत से यह तो पूछो कि कल चार बजकर तीन मिनट पर तुम्हारा मुंह किधर को था? प्रश्न को सुनते ही गड़बड़ा जायेंगे। अभी इनको यह ज्ञान नहीं है कि कल चार बजकर तीन मिनट पर हम कहां थे और हमारा मुंह किधर था। इसके विरुद्ध पांच वर्ष का हाल ये ज्यों का त्यों जानते हैं, मामूली गवाह नहीं है सीखकर तैयार हुआ है, मुकद्दमे में यह कैसे भूल सकता है सब गवाह ठीक ठीक गुजर गये? अब मुद्दाअलेह का एक गवाह अब्दुल्ला पेश हुआ। अब्दुल्ला से पूछा कि इस मुकद्दमे में तुम क्या जानते हो? उसने कहा कि यह हरसहाय एक कागज पट्टे के लिए लाया था इस को

खेत लेने थे, कागज लेकर मियां को दे दिया, मियां ने कहा कि कागज रख जाओ, कल पट्टा लिखा जावेगा और खेत तुमको दे दिये फिर ये कई बार गया किन्तु मियां ने खेत नहीं दिये, पट्टा नहीं लिखवाया और स्टाम्प भी नहीं फेरा, उस कागज पर मियां साहब ने पटवारी से हरसहाय के नाम का झूठा तमस्सुक लिखवा लिया इसको सुनकर मुन्सिफ हंस पड़े और खां साहब से कहने लगे कि देखो तुम्हारी बिरादरी का एक मुसलमान शख्स क्या कर रहा है ? तुम इतने बड़े आदमी होकर जाली तमस्सुक तैयार कर लिया करते हो ? खां साहब बोले कि हुजूर ! यदि अब्दुल्ला कुरान शरीफ उठाकर यह बात कह दे तो हम अपना मुकदमा उठालें और हुजूर हम पर जो जुर्माना करें हम उसे भी देने को तैयार हैं। इसको सुन मुन्सिफ ने अब्दुल्ला से कहा कि तुम कुरान शरीफ उठा जाओ तो तुम्हारी बात सच मान ली जावे। अब्दुल्ला बोला कि पहिले हमको कुरान दिखलाओ। मुन्सिफ की आज्ञा से चपरासी कुरान शरीफ ले आया, यह मुन्शी नवलकिशोर के यहां बारीक अक्षरों में छपी हुई गुटके के रूप में थी, इसको देखकर अब्दुल्ला बोला कि क्या यही कुरान ? ऐसी ऐसी तो मैं सैकड़ों किताब उठा लूं। सब हंस पड़े।

अब्दुल्ला बेईमानी से नहीं डरता और झूठ पर कुरान उठाने से भी नहीं डरता बोझ उठाने से डरता है कि कहीं ऐसा न हो कुरान शरीफ भारी हो और उसको मैं उठा लूं कहीं फिर यहां पर ही मैं जनाजा बन जाऊं आज यह दशा धार्मिक पुरुषों की है। मुकद्दमे में वकीलों की बहस हुई और हरसहाय पर डिगरी होगई। हरसहाय ने डिगरी से पहले ही मौजूद रहा सामान दो बैल एक गाड़ी और दो मकान बेच डाले एवं आप नागा बाबा होकर बैठ गया। खां साहब डिगरी को लेकर अपने घर बैठ रहे।

भगवान के अर्पण

अर्पण कर भगवान के, पीछे भोजन खाव।
इसके करने से यहाँ, चार पदारथ पाव॥

सर्दी की अन्धेरी रात्रि छा रही थी चार चोर चोरी करने के लिये निकले, घर से मील भर आगे चले थे कि उन्होंने क्या देखा कि शहर के बाहर सड़क के किनारे धूनी जलाये एक बाबा जी वृक्ष के नीचे बैठे हैं। चारों ने सोचा कि चलो भाई घण्टा आध घण्टा बाबाजी महाराज के पास ही बैठकर बितालें। चारों चोर झट

बाबाजी के पास आए और प्रणाम कर बाबाजी के धूनी के पास बैठ गये । थोड़ी देर चिलम-तम्बाकू पीने के बाद चोरों ने आपस में सलाह की यार बाबाजी को भी संग ले चलें। इनमें से एक चोर ने बाबाजी से हाथ जोड़कर कहा कि महाराज आज भोजन प्रसादी किसी भक्त ने लाकर दी या नहीं। आज का दिन तो ऐसा मनहूस निकला कि सुबह से अब तक बाबाजी महाराज को किसी ने भी भोजन प्रसादी के लिये भी नहीं पूछा। चोर की यह बात सुनकर बाबाजी ने कहा ।

फिर चोर ने कहा चलिये महाराज आज हमारे साथ चलिये! बाबाजी ने कहा कि आधी रात में कहां ले जाओगे बच्चा ? पुनः चोर ने कहा यहीं इसी नगर में हम एक के यहां मेहमान होकर भोजन आदि खावेंगे आप भी चलिये! बाबाजी सीधे स्वभाव के तो थे ही उसकी इतनी बात सुनकर बोले अच्छा चलो बच्चा। बस फिर क्या था चोरों के साथ बाबाजी चिलम उठाकर चल पड़े। जब नगर में ये लोग घुसे तो बाबाजी के चिमटे की खट खट आवाज से परेशान हुये उनमें से झट एक ने कहा बाबाजी चिमटे की आवाज बन्द करिये। क्योंकि अन्धेरी रात्रि है चिमटे की आवाज सुनकर बहुत से कुत्ते भौंकेंगे और जब कुत्ते भौंकेंगे

सोने वाले जाग जावेंगे और जब सोने वाले जाग जावेंगे तब हमारे काम में बाधा पड़ेगी। इसलिये महाराज चिमटे को ऐसे पकड़ के चलिये जिसमें से आवाज न निकले। बहुत अच्छा बच्चा, इतना कह कर बाबा जी ने चिमटे में पड़े हुए बड़े कड़े को हाथ से पकड़ लिया जिससे चिमटे में से आवाज आनी बन्द होगई। चलते चलते ये लोग एक साहूकार की हवेली के पीछे जा खड़े हुए। कुछ देर सोचने के बाद उनमें से एक चोर ने कहा कि बाबाजी जिसने हमें निमन्त्रण देकर बुलाया था वह तो अपने घर में रजाई ओढ़े मजे से सो रहा है सर्दी में कौन उठे किवाड़ खोल लें। इसलिये यदि आपकी आज्ञा हो तो इसी हवेली में इधर से एक दूसरा द्वार बनालें। बाबा जी भाले भाले थे वो चोरों की इस चालाकी को न समझे निदान बाबा जी ने कहा बनालो दूसरा दरवाजा, हमारा क्या है तुम्हीं का मेहनत करनी पड़ेगी। चोरों ने यह सुन कर झटपट से उस हवेली के पीछे की तरफ एक आदमी घुसने लायक बड़ा सुन्दर गोल गोल दरवाजा बना लिया और बाबा जी से धीरे से कहा कि लो महाराज हमारे पीछे २ आप भी इसमें से चले आओ। इतना कह कर एक एक चोर उस नवीन दरवाजे में से हवेली के अन्दर घुसे। इत्तफाक

की बात है कि जिस दीवार में चोरों ने ये नकाब (कूमल) लगाई थी वो रसोई घर में ही लगी थी जब चोर मय बाबा जी के अन्दर पहुंच गये तब उनमें से एक ने झट दियासलाई जलाई तो क्या देखा वहाँ सुन्दर २ पकवान बने रक्खे हैं। पकवान का कारण यह था कि सवेरे बासोड़ा है और बासोड़े में बासी ही भोजन खाया जाता है। अब तो चोरों ने पहले पकवान पर हाथ साफ करने की ठानी। अस्तु बाबा जी सहित चोर वहीं अन्धेरे में बैठ गए। इतनेमें उनमें से एकने पूड़ी कचौरी ले लेकर सबके हाथों में देते हुए कहा खाओ भाई, यह कह कर वह भी खाने लगा। अन्धेरा भी ऐसा था कि हाथ में हाथ दिखाई न देता था। चोर खाने में मग्न हैं उधर बाबा जी ने पूड़ी कचौड़ी तो ज़मीन पर अंगोछा बिछा कर रख दी और अपनी झोली में से सालगराम की एक बटिया निकाल कर वो भी उसी पर रख दी और फिर बाबा जी ने शंख निकाल कर रख लिया फिर हाथ जोड़कर भगवान का ध्यान करते हुए सालग राम को भोग लगा कर फिर शंख बजाना शुरू कर दिया। शंख का बजना था कि चोर तो एक एक करके नौ दो ग्यारह होगए, फिर भी बाबा जी शंख की धुन ध्वनि कर रहे हैं। अब तो हवेली में जाग पड़ गई,

तू चल मैं चलूं, लिया लो या देखो देखा, इत्यादि शब्दों से हवेली का कोना-कोना गूंज उठा और रसोई के कमरे के किवाड़ खोलकर शंख बजाते बाबा जी को देख और उन्हें भूत जान मालिक मकान जोर से भू··· कहता हुआ भागा। इतने में कुछ और लोग आगे बढ़े तो क्या देखा पूरी खाने में बाबाजी मस्त हैं। जब उन्होंने कहा बाबाजी महाराज आप कौन हैं और इस मकान में कैसे आये ये सुनकर बाबाजी ने कहा तुम्हारा सिर है तुम्हारे चार महमान आये और संग में हमें भी लाये उन बिचारों ने तुम्हारी नींद में खलल ना पड़े उन्होंने तुम्हें जगाकर हवेली का दरवाजा नहीं खुलवाया बल्कि उन चारों ने बड़ी मेहनत और फुरती से दूसरा दरवाजा बनाया जैसे तैसे वो बिचारे अन्दर आये चलो भोजन खिलायेंगे ये कह कर मुझे भी संग ले आये मेरी आदत है कि बिना भगवान के खिलाये मैं कोई वस्तु खाता ही नहीं बाबाजी यह कहकर चुप होगये तब तो लोगों में से एक ने कहा कि महाराज वो चारों अब कहां चले गये बाबाजी नें कहा तुम्हारे सिर में जब मैंने शङ्ख बजाया तो वह तुम लोगों के डर के मारे भाग गये। अस्तु लोगों ने समझ लिया कि बाबाजी

तो सीधा और भोला बाबा है और ये सारी बदमाशी चोरों की थी थोड़ी देर में बाबाजी को हवेली से विदा कर दिया।

पाठक वृन्दो ! इस दृष्टान्त का सारांश यह है जब भी आप भोजन आदि करने बैठें तब आप भगवान् का अवश्य भोग लगावें देखिये बाबाजी ने भगवान् का भोग लगाया तो हवेली का माल चोरी होने से बच गया। जो लोग प्रतिदिन भगवान् का भोग लगाकर भोजन करते हैं वो सदा सुखी रहते हैं। अस्तु मनुष्य मात्र को चाहिए जब कभी भी भोजन करने बैठें तब भगवान को अर्पण कर और उस भोजन को भगवत प्रसादी समझ बड़े प्रेम और श्रद्धा से खाकर प्रसन्न रहना चाहिये जो लोग बिना भगवत् अर्पण करे भोजन खाते हैं वो वास्तव में बुद्धिशून्य हैं।

नव शिक्षितों की नवीन दृष्टि

दो अनादि सब ग्रन्थ बदल, नई शिक्षा का रोग।
समयानुकूल हो ग्रन्थ सब, कहते है कुछ लोग॥

दिसम्बर मास सन् १६४४ के तीसरे सप्ताह में श्री काशीजी में अखिल भारतवर्षीय श्री रूप कला हरिनाम

यश संकीर्तन सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन हुआ मुझे भी सम्मेलन के निमन्त्रण पत्र के अनुसार बनारस जाना पड़ा। सम्मेलन के पश्चात् मैं बनारस से देहरादून एक्सप्रेस में बैठकर रात्रि को एक बजे पटना जंक्शन पर उतरा और वहां से सवेरे पिलाजा घाट से पानी के जहाज में सवार हो गया, क्योंकि मुझे जिला चम्पारन में जाना था। जिस समय मैं स्टीमर में ऊपर की मंजिल के कमरे में बैठा था तो वहां मुझे एक सज्जन से वार्तालाप करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे सज्जन एक अच्छे घराने के अप्टूडेट बाबू थे उन्होंने मुझसे पूछा कि आप कहां जायेंगे? मैंने कहा चम्पारन वो बोले क्यों, मैंने कहा कि वहां एक कीर्तन सभा का जलसा है उस में बुलाये से जा रहा हूं। वो बोले कीर्तन क्या चीज होती है मैंने कहा कीर्तन भगवान के नाम का जाप करना ही होता है वो बोले अजी जाओजी, मैंने कहा क्यों क्या बात है? वो बोले अरे जमाना कहां से कहां पहुंच गया पर अभी आप लोग भगवान् की टर लगा रहे हैं? मैंने कहा बाबूजी भगवान् के नाम की महिमा तो वेदों, पुराणों, शास्त्रों तक में वर्णित है वो बोले अजी महाराज अब तो आपको जमाने के मुताबिक नये नये वेद शास्त्र बनाने पड़ेंगे। मैंने कहा बाबूजी वेद तो

अनादि हैं वे तो कभी भी नहीं बदले जा सकते फिर आपका ये कहना कि वेदादि को बदल कर जमाने के अनुसार नये वेदों की रचना करना सरासर भूल है। वो बोले हमारी ये बात सुन कर बाबूजी ने फरमाया नहीं महाराज अब तो जैसा जैसा समय वैसे ही वैसे नये नये वेद शास्त्र बनाने पड़ेंगे। मैं बाबूजी की ये बात सुनकर कुछ देर के लिये मौन होकर बोला—बाबूजी आपकी क्या अवस्था है, वो बोले करीब पैंतालीस साल की है।

मैंने कहा आपके पिताजी हैं, वो बोले हां हैं मैंने कहा उनकी क्या उम्र है उसने कहा पिचासी वर्ष की ये सुनते ही मैंने झट से मुंह बनाकर राम राम कहा, बाबू जी मेरी तरफ़ देख कर माथे पर बल डालते हुये बोले क्योंजी आपने मेरे पिता की उम्र सुन कर बुरे लहजे में राम राम क्यों कहा? मैंने कहा जनाब अब आपको पिचासी साल के पुराने बाप को बदल कर जमाने के अनुसार नये बाप का चुनाव करना चाहिये, मेरी यह दलील सुनकर बाबूजी गुस्से से बेताब हो गये और बोले वाह साहब आप हमारी तौहीन करते हैं मैंने कहा जनाब इसमें तौहीन की क्या बात है, जब आप अनादि वेदों तक को बदल कर जमाने के अनुसार नये ग्रन्थ बनाने

पर आमाद हो तो तुम अपने पिचासी वर्ष के बाप को बदल कर ज़माने के मुताबिक नया बाप क्यों नहीं बना लेते ? हमारी इस अकाट्य बात को सुन कर बाबूजी को चुप हो जाना पड़ा।

सज्जनो कहने का तात्पर्य यह है कि जो लोग पाश्चात्य सभ्यता के वशीभूत होकर धर्म पुराण भारत वर्ष के अनादि एवं प्राचीन ग्रन्थों को तोड़ मरोड़ कर समयानुसार बनाने का जो दुस्साहस करते हैं, वे लोग अपनी कबर अपने आप खोद रहे हैं, ईश्वर रचित सिद्धान्तों एवं नियमों को ना तो कोई सूरमा इस भूतल से हटा सका और नाहीं उसको समय अनुसार बना ही सका, ये एक अटल सिद्धान्त है कि जो वस्तु अनादि है वो सदैव अनादि ही रहेगी।

अवसर चूकने पर बोले तो क्या बोले

अवसर तेरा जात है, कुछ तो मुंह से बोल।
बे अवसर के बोल के, क्यों संकट ले मोल॥

बरसात का बड़ा ही मनोहर समय था, दिन भर खूब वर्षा हुई, रात्रि को नौ बजे के करीब चार मित्र बाजार में एक बन्द दुकान के चबूतरे पर बैठे हुये बातें

कर रहे थे। उनमें से एक ने कहा—भई अब तो बड़ा अच्छा समय आगया कल सवेरे शहर से बाहर चलकर कहीं पर तफरी करें और वहां ही खाना पीना करें, दूसरा बोला भई बात तो ठीक है तीसरे ने कहा कल सवेरे जरूर चलें, चौथे ने कहा फिर देर क्या है। बोलो कौन कौन क्या क्या खाने पीने के लिये सामान लावेगा, एक ने कहा मैं आटा दाल ले आऊंगा दूसरे ने कहा मैं चावल चीनी मांग ले आऊगा, तीसरे ने कहा तो भई मैं लकड़ी, वर्तन, मिर्च-मशाले ले आऊंगा, चौथा बोला यार मैं तो भोजन बना दूंगा और सिगरेट पान भी ले आऊंगा। चारों का जब ये प्रोग्राम निश्चित हो गया तब तो उनमें से एक ने कहा—भई ये तो सब कुछ हो गया परन्तु जो असली चीज घी है वो कौन लायेगा, तब तो लगे वो एक दूसरे की तरफ देखने। इतने में दूसरे मित्र ने तीसरे की तरफ इशारा करते हुए कहा कि घी ये लायेगा, तीसरा बोला घी मैं क्यों लाऊगा, अतः चारों ने ये सलाह की यहां ही बैठ जाओ और जो पहिले बोले या खांसे वो ही ढाई सेर घी लावे, इतना कहकर वे चारों के चारों उसी दुकान के चबूतरे पर मौन धारणकर बैठे रहे।

इन चारों में से यदि किसी को खांसी भी आने लगी तो उसने अपने मुंह में फौरन धोती या कुरते का कपड़ा ठूस लिया बैठे बैठे उनको जब रात के दो बज गये, पुलिस वालों की एक गश्त थानेदार सहित वहां पर आई और अन्धेरे में उन्होंने बैटरी की लाइट बाजार में फैंकी तो उनको ये चारों के चारों एक बन्द दुकान पर बैठे हुये दिखाई दिये, झट से थानेदार इनके पास आकर बोला, कौन हो रे और क्यों बैठे हो ? थानेदार की यह डाटी सुनकर चारों आपस में एक दूसरे की तरफ देखने लगे, परन्तु मुंह से कोई न बोला, हर एक ने अपने दिल में यह सोचा कि अगर तू बोला और ढाई सेर घी देना पड़ा, थानेदार ने फिर उन लोगों को गाली देते हुये कहा—अबे बोलते हो या नहीं ? सारांश ये कि आध घण्टे थानेदार के डाटने फटकारने पर भी जब उनमें से कोई भी नहीं बोला तब तो थानेदार ने सिपाहियों से कहा—कि इन बदमाशों को पकड़ कर थाने ले चलो, इतना सुनते ही चारों को पकड़ लिया और थाने ले जाकर हवालात में बन्द कर दिया, अब तो चारों लगे घबड़ाने उनमें से एक ने हाथ उठाकर इशारा किया जिसका मतलब ये था कि अब क्या होगा, दूसरे ने माथे पर हाथ रखा, जिसका भाव ये कि जो भाग में

होगा, तीसरे ने हाथ से संकेत किया कि चक्की पीसनी पड़ेगी चौथे ने हाथ की छैः अंगुलियां उठाई उसका कहना ये था कि छैः मास से कम सजा नहीं होगी। इतना संकट आने पर भी वह अक्ल के हिमालय मुंह से एक शब्द भी ना बोले, बोलते भी क्यों—जो बोलता वही ढ़ाई सेर घी देता।

इसी उधेड़ बुन में रात पूरी हुई सवेरा हुआ सूर्य नारायण के तेज से समस्त दिशायें प्रकाशमय हो गईं, आठ बजे के करीब थानेदार ने सिपाहियों को हुक्म दिया कि उन रात वाले चारों बदमाशों को मेरे सामने लाओ। सिपाही ये सुनकर हवालात में गये, और उन चारों को पकड़ कर थानेदाट के सामने खड़ा कर दिया। थानेदार ने बहुत कुछ पूछा परन्तु उनमें से एक भी मुँह से नहीं बोला। आखिरकार हुक्म दिया कि लाओ मेरा हन्टर सिपाही ने हन्टर लाकर दिया थानेदार ने हन्टर लेकर उन चारों को खूब जोर २ मारना शुरू किथा, उनमें एक आदमी कमजोर था जिस वक्त थानेदार ने एक हन्टर बड़े जोर से उसके मारा हन्टर के लगते ही वह मुँह फाड़कर बोला हां ‥हां ‥हुजूर।

बस उसके मुँह से "हां" शब्द निकलना था कि

तीनों के तीनों झट से थानेदार से बोले बस बस हुजूर ये पहिले बोला है इससे ढाई सेर घी दिलवाइये।

थानेदार बोला अबे क्या बात है अब तुम क्यों बोल पड़े उन्होंने थानेदार साहब को अपना रात का सारे का सारा प्रोगाम सुनाते हुये घी लानेकी जो शर्त तै हुई थी उस सबको बतला दी। थानेदार साहब ने जब यह सुना कि, जो बोले वो ढाई सेर घी लावे। ये सुनकर उनको बड़ी हंसी आई और कहा निकलो मूर्खो यहां से।

इस दृष्टान्त का भाव यह है कि हम भगवान का सुमरण करने में आनाकानी करते हैं, समय निकलने पर पछताते हैं। अस्तु समय अनुसार चुप कभी न रहना चाहिये, क्योंकि इस प्रकार लाभ के बदले डबल हानि की आशंका है, यदि हम ठीक अवसर पर अपने हठ-धर्मी से भगवान के सुमरण में सन्देह किया, तो इसमें सन्देह नहीं कि हमको अपने जीवनकाल में कभी न कभी आपत्ति विपत्तियों में पड़कर भगवान् सुमरण अवश्य करना पड़ेगा. और इतना ही नहीं कि बल्कि साथ ही साथ यम त्रास का कष्ट अपनी गलतियों के कारण भोगना पड़ेगा।

———

तरक्की बाज बाबू

करे तरक्की तर्क की, बाबू सौ-सौ बार।
प्राणों पर जब आगई, डूब गये मझधार॥

किसी समय किसी नवशिक्षित तरक्कीवाज बाबू को किसी ऐसे गांव में जाने का कार्य पड़ा जो नदी पार था, बाबू जी कई कलाओं में कुशल थे और उनके विचार आधुनिक कल्पित मिथ्या तरक्की से ओत प्रोत थे। जैसे ही वे नाव में सवार हुये, उन्हें अपनी कला कौशल्यता को उस नाविक को दिखाने की धुन सवार हुई, उन्होंने केवट से पूछा—क्यों भाई तुम ज्योतिष पढ़े हो? उसने कहा—नहीं बाबूजी मैंने कभी इसका नाम भी नहीं सुना। बाबू ने कहा अब तो, तुम्हारे जीवन का एक चौथाई हिस्सा यों ही गया। कुछ समय बाद उस बाबू ने फिर पूछा अच्छा तुम्हें कोई दस्तकारी भी आती है? नहीं जी इस वक्त तो मुझे कोई दस्तकारी नहीं आती है, हां, जब मैं कोई आठ नौ साल का था तब मुझे एक दो बार दस्त आते थे। बाबू जी यह सुनकर नाक सिकोड़ कर बैठ गये। तरक्कीवाज बाबू जी अधिक देर तक चुप न बैठ सके। फिर केवट से कहा तुम्हें ज्योतिष विद्या भी नहीं आती है, दस्तकारी में भी कोरे हो अब यह बतलाओ हम खाली बैठे हैं, मन

बहलाने का कोई साधन नहीं, आओ, शतरंज खेलें, तुम्हें शतरंज आती है। केवट झट बोल पड़ा नहीं हुजूर मुझे शतरंज भी नहीं आती, मुझे न कभी ६० सौ रंज हुए हैं न सौ तब तो बाबू जी नें उसको वज्र मूर्ख समझ कर घृणा की दृष्टि से कहा तब तो तुम्हारा आधा जीवन व्यर्थ गया ? थोड़ी देर बाद फिर बाबू जी ने पूछा अच्छा तुम्हें घड़ी देखनी आती है। केवट ने उत्तर दिया जनाब मैं तो कोई शास्त्र पढ़ा, दस्तकारी भी नहीं जानता और शतरंज से भी दूर रहा हूं, नदी में नाव चलाकर अपना पेट भरता हूं। बाबू ने कड़कर कहा तुम सड़ियल मनुष्यों को इन आधुनिक वस्तुओं का क्या पता तुम्हारे जीवन के तीन भाग यों ही नष्ट हो गये, केवट ने कहा बाबू जी जितनी विद्यायें आपने कहीं क्या वे सब आप जानते हैं, बाबू बोले मूर्ख इतनी ही नहीं बल्कि कहीं इससे भी अधिक।

संयोग की बात थी वर्षा अधिक होने से अचानक नदी में तूफान आ गया, बात की बात में जल तरंगें आकाश चुम्बन के लिए उतावली हो गई और नौका बीच भंवर में जा पड़ी। देखते देखते नाव जल मग्न होने लगी केवट ने अनुकूल अवसर देखकर बाबूजी से पूछा, माना आपको सब विद्या आती हैं पर तैरना भी

आता है ? मेरा तो आपने तीन भाग जीवन नष्ट हुआ ही बताया है परन्तु आपका सारा ही जीवन नष्ट हुआ, अन्त समय भगवान् को सुमरण कीजिये, यह कह कर केवट जल में कूदा और नदी पार हो गया।

निष्कर्ष यह है कि–जिस प्रकार सब विद्याओं में पारंगत होने पर भी तैरना न जानने के कारण तरक्की-बाज बाबू को नदी गर्भ में यातना भोगनी पड़ी, इसी प्रकार इस संसार की कोई भी कला या शिक्षा हमें इस दुःख सागर से वास्तविक रूप में कभी नही बचा सकती, अतएव प्राणी को उनका अभिमान करना व्यर्थ है और अपनी मूर्खता का प्रदर्शन मात्र है। जिस कला के अभ्यास से हम इस अथाह संसार सागर से तर-कर पाप-ताप, आधि-व्याधि, शोक-दुख, सन्देह, रोग आदि लौकिक पारलौकिक उन्नति पा सकते हैं, उसी कला को सीखना मनुष्य जीवन का ध्येय है। और वह कला तर्क से दूर श्रद्धा भक्ति में है, इसी से मनुष्य सत्य के सत्य स्वरूप को या परम तत्व को भली भाँति जानकर दुःखों से छुटकारा पा सकता है, और अपना कल्याण कर सकता है।

जाको राखे साइयां मार सके ना कोय।

कविता से प्राणों की रक्षा

कविता या संसार में, है सुखों की खान।
कविता से ही राव ने, खूब बचाये प्राण॥

एक नगर का राजा बहुत ही सज्जन और भोला भाला था, वह अपनी प्रजा को पुत्रवत समझता था, परन्तु उस राजा का मंत्री बहुत ही दुष्ट प्रकृति का था, दिखावे के लिये तो वह राजा से प्रेम करता था परन्तु अन्दर ही अन्दर वह राजा का घोर शत्रु बना हुआ था, मंत्री के दिल में यह बात थी कि किसी न किसी सूरत से राजा को जान से मरवा कर, खुद राजा बन कर बैठ जाऊँ। कारण कि राजा की कोई सन्तान न थी, और उसकी रानी को मरे चार वर्ष हो चुके थे अब तक राजा ने न तो दूसरा विवाह किया और न कोई लड़का गोद लिया। मंत्री ने यही मौका राजा के मरवाने का अच्छा सोचा। कालिया नाम का एक नाई राजा की हजामत बनाया करता था, एक दिन मंत्री महोदय ने उस कालिया नाई को अपने मकान पर बुला कर कहा कि देख—आज जब तू राजा की हजामत बनाने जावे तब अपने उस्तरे (छुरे) से राजा का गला काट लेना, यदि तूने मेरी आज्ञा का पालन करते हुए राजा का गला काट लिया तो एक गांव इनाम में दूंगा, अगर

तूने मेरे कहे अनुसार ऐसा न किया तो मैं तुझको अप तेरे बालबच्चों सहित जान से मरवा दूंगा, मंत्री की यह बात सुनकर नाई कांप गया और उसने आज राजा की गर्दन काट लेने का मंत्री के सामने वायदा कर लिया।

इस समय सारे नगर में मंत्री की ही बात चलती थी, राजा का बहुत ही मुंह लगा मंत्री था, वह जैसा चाहे नगर में कर सकता था उसको कोई भी रोकने वाला नहीं था। अस्तु अब कालिया नाई राजा की हजामत बनाने महल में गया, और उसने यह निश्चय कर लिया था कि आज राजा का गला अवश्य काट लूंगा, यदि मैंने राजा का गला न काटा तो मंत्री मुझे अवश्य ही मरवा डालेगा। इसी विचार को रखते हुये उसने राजा के पास जाकर प्रणाम किया नियत स्थान पर उस्तरा, कटोरी और उस्तरा घिसने की पथरी और सभी सामान निकाल कर बैठ गया, थोड़ी देर में राजा साहब आये और हजामत बनवाने उस नाई के पास बैठ गये। अब तो नाई ने ठोडी के बाल भिगोने शुरू किये। जहाँ यह हजामत बन रही थी उससे कुछ दूरी पर एक पानी का हौज भी था। उसी हौज के किनारे पर एक कौवा आया और अपनी चोंच को पानी में

डुबो कर बाहर निकालता है। और किनारे के पत्थर पर चोंच रगड़ता है। उधर नाई भी कटोरी में से पानी लेकर पथरी पर डाल कर अपना उस्तरा घिसना शुरू करता है। उधर कौआ भी अपना काम करता है कौआ और नाई के इस काम को देखकर राजा हंसा और उसने झट से यह कहा—

फिर डोवे फिर घिरे, भर-भर लावे पानी।
तेरे मन की बात, कालिया हमने जानी॥

राजा के मुंह से यह निकला ही था कि झट से नाई ने उस्तरा जमीन पर रख दिया और हाथ जोड़कर राजा से कहा। हां‥हां‥अन्नदाता मन्त्रीजी ने कहा था। राजा बोला क्या कहा था? नाई ने कहा—यह कहा था कि जब तू आज राजा की हजामत बनाने जावे तब उनका गला काट लीजो। इसलिये अन्नदाता मेरा कोई कसूर नहीं है। राजा ने यह बात सुनकर फौरन मन्त्री को बुलवाया और कहा क्यों मन्त्रीजी तुमने इस कालिया नाई को मेरा गला काटने का हुक्म दिया। मंत्री ने बहुत इनकार किया मगर राजा ने एक ना सुनी और उसको अपनी नजर से हमेशा के लिये निकाल दिया और नाई को कुछ इनाम देकर ये कहा कि

आइन्दा महल में कदम न रखना, जा भागजा। नाई यह सुनकर राजा को प्रणाम कर चला गया।

सज्जनो इस दृष्टान्त से सिद्ध होता है कि जिसको वो पारब्रह्म परमेश्वर जीवित रखना चाहता है उसका जग में कोई भी बाल बांका नहीं कर सकता। इस लिये प्राणी मात्र को भगवान् की भक्ति पूजा करनी और उससे स्नेह करना चाहिये।

विलायती सती

धन्य सती विलायत की, धन्य यूरोपीय नार।
पति मरने के बाद फिर, करे और भरतार॥

भारतवर्ष से एक नवयुवक भाई आई. सी. एस. की शिक्षा प्राप्त करने के लिये विलायत गये। वहां जाकर अपनी शिक्षा प्रारम्भ करदी और आनन्द से रहने लगे। एक दिन वह युवक सैर करते-करते वहां के कब्रिस्तान की तरफ जा निकले तो क्या देखा कि एक योरोपियन (मेम) एक कब्र पर पंखा लेकर बैठी हुई हवा कर रही है। इस भारतीय नवयुवक ने जब यह देखा तो बहुत ही प्रसन्न हुआ और उस लेडी के पास जाकर बोला कि यह किसकी कब्र है? और तुम इस पर क्यों हवा कर रही हो? यह सुनकर लेडी ने कहा डोयर ये मेरे

खाविन्द की कब्र है। मेरे पति को मरे अभी चार घंटे ही हुये हैं। नवयुवक यह सुनते ही बोला कि देवी धन्य हो तुम वास्तव में सच्ची पतिव्रता हो । देखो ना पति की मृत्यु के पश्चात् भी तुम उसकी कब्र पर पंखे से हवा कर एक पतिपरायणा, पतिव्रता का परिचय दे रही हो, अब तक तो हम यही जानते थे कि हमारे धर्म प्राण भारतवर्ष में ही पतिव्रत धर्म पालन करने वाली नारियां होती हैं और जो पति की मृत्यु के पश्चात् अपने मृतक पति के शव के साथ सती हो जाया करती थीं, (जैसा कि आज कल भी कहीं न कहीं भारतवर्ष में सती होने का समाचार अखबारात में पढ़ लिया करते हैं) ।

उस नव-युवक की यह बात सुनकर वह लेडी क्रोध में भर गई और बोली—चलो-चलो बड़े आये पतिव्रत धर्म की महिमा गाने वाले ये सड़ा हुआ कानून तुम्हारे भारत को ही मुबारिक हो। नव-युवक ने कहा देवी जी फिर आप अपने इस मृतक पति की कब्र पर पंखा क्यों झल रही हैं ? वह बोली सुनो जिस समय मेरा पति मरने लगा था तब उस वक्त उसने मुझसे यह कहा था कि तुम मेरे मरने बाद दूसरा खाविन्द तो करोगी। मैं बोली हां करूंगी, फिर उसने कहा कि मेरी एक वसीयत है जो ये कि जब तक मेरी कब्र की मिट्टी

गीली रहे तबतक तुम दूसरा पति मत करना। इसलिये मेरा हाथ में पंखा लेकर इस कब्र पर हवा करने का यह मतलब है कि जल्दी से कब्र की मिट्टी सूख जावे तो मैं झट से दूसरा मन पसन्द पति करलूं। उस लेडी के मुंह से यह सुनते ही वह नवयुवक अपना सा मुंह लेकर वहां से चल दिया।

दोस्तो, यही दशा आज कल हमारे भारतवर्ष की फैशनपरस्त उच्छृङ्खल नारियों में भी घुसने की सम्भावना हो रही है। यदि इसका उपाय शीघ्र न किया गया तो हिन्दूजाति का पतन होने में तनिक भी सन्देह नहीं रहेगा।

भारतवर्ष की सती

भारत की सती नार पर, दुनिया है बलिहार।
उदय न सूरज फिर हुआ, हो गया हा हा कार॥

प्राचीन काल में कौशिव नाम का एक ब्राह्मण प्रतिष्ठानपुर में रहता था। वह अत्यन्त क्रोधी, निष्ठुर एवं कोढ़ी था। उसकी पत्नी शाण्डिली पतिव्रता एवं निष्ठावती थी। वह अपने पति को हर तरह से प्रसन्न रखने की चेष्टा किया करती थी। एक बार वह ब्राह्मण किसी सुन्दर वेश्या को देखकर उस पर मोहित हो गया।

और उसको घर ले चलने के लिये अपनी स्त्री से आग्रह करने लगा। उसकी स्त्री ने पहिले तो उसे बहुत समझाया, परन्तु जब वह किसी तरह भी मानने को तैयार नहीं हुआ तो उसे विवश होकर अपने पति की आज्ञा माननी पड़ी। वह अपने पति को कंधे पर बैठा और साथ में कुछ रुपये लेकर अंधेरी रात में वेश्या के तरफ चल पड़ी। रास्ते में शूलविद्ध अणिमाण्डव्य ऋषि तपस्या कर रहे थे। अंधेरे में उन्हें उस कोढ़ी ब्राह्मण के पैर का धक्का लगा, जिससे माण्डव्य ऋषि ने बिगड़ कर शाप दिया कि प्रातःकाल सूर्योदय होते ही इस नराधम का प्राणान्त हो जायगा, अब तो सती घबड़ाई। उसने सोचा कि यदि प्रातःकाल सूर्योदय न हो तब तो मेरे पति के प्राण बच सकते हैं, अन्यथा नहीं। अतः उसने भी अपने पतिव्रत के बल पर कहा कि 'जब तक मैं नहीं कहूंगी सूर्य उदय होगा ही नहीं।' सती वचन झूठा कैसे हो सकता था ? सूर्य देव की गति रुक गई, दश दिन तक सूर्य नहीं उगे समस्त ब्रह्माण्ड में हा हा कार मच गया। सभी देवता चिन्तित होकर जगन्नियन्ता ब्रह्मा जी के पास गये और उनके सन्मुख संसार के इस महान कष्ट का वर्णन किया। ब्रह्माजी ने सती के प्रभाव का सारा वृतान्त देवताओं को सुनाकर

प्रसिद्ध सती अत्र पत्नी अनसुईया को प्रसन्न करके इस कष्ट का निवारण करने को प्रार्थना करने के लिये कहा। सभी देवता अत्रि-आश्रम पर पहुंचे और अनसुईया जी जगत-हित की इच्छा से उस ब्राह्मण पत्नी के पास जाकर बोली–'हे देवि ! तुम अपना संकल्प त्याग दो' नहीं तो अकाल में ही प्रलय हो जायगा। सूर्योदय होने पर तुम्हारे पति के प्राण त्याग करते ही मैं उन्हें अपनी सतीत्व शक्ति से पुनः जिला दूंगी और उसका शरीर भी नीरोग हो जायगा। सती की बात सती ने मानली। सूर्य उदय हुआ और सूर्योदय होते ही ब्राह्मण का मृत शरीर जमीन पर गिर पड़ा। श्री अनसूया जी के सतीत्व के प्रताप से वह पुनर्जीवित एवं रोग रहित और युवा बनकर उठ खड़ा हुआ। उसके सारे मानस रोग भी मिट गये। देवता लोग श्री अनसूया जी एवं सती शाण्डिली को नाना प्रकार के वर देकर स्वर्ग को चले गये।

प्रिय पाठको ! यह है भारतवर्षकी पतिव्रता सती माता के धर्म का चमत्कार जिसने सूर्यनारायण तक को उदय होने से रोक दिया। भारत की वर्तमान महिलाओं को उपरोक्त सती के आदर्श पर चलकर संसार वासियों को ये बताना चाहिये कि अभी भारतीय महिलाओं में भी

पतिव्रत धारणा मौजूद है। भारत की सती नारी के सम्बन्ध में फारसी के सुप्रसिद्ध कवि शेख हाफिज शीराजी एक स्थान पर कहते हैं।

हम चूं हिन्दूजन कसे दर आशको दीवाना नेस्त।
शोखतन वर शमा मुर्दा कार हर परवाना नेस्त॥

अर्थ—ज्योति जिस समय जलती है तब पतंग उस पर आकर जल मरता है जब ज्योति बुझ जाती है तब पतंग नहीं आता। हिन्दू औरत धन्य है जब उसकी पति रूपी ज्योति बुझ जाती है तब भी वह अपने मृतक पति के साथ जिन्दा जलकर भस्म हो जाती है।

पानी का एक प्याला

करे भलाई और की, वो जग में इन्सान।
थोड़ी नेकी जो करे, भूल मत अहसान॥

किसी नगर का राजा अपने साथियों समेत शिकार खेलने के लिये बन में गया आपस में ये नेम तै किया कि जिसके सामने शिकार आ जावे वो ही घोड़ा दौड़ा कर उसके पीछे जावें। अस्तु—एक हिरन राजा के सामने से गुजरा राजा ने हिरन को देखते ही साथियों को छोड़ हिरन के पीछे घोड़ा दौड़ाया। हिरन बड़ी दूर तक भागता चला गया और राजा को एक घोर बन में ले

गया। इसी झगड़े में दुपहर होगई परन्तु हिरन तो निगाहों से दूर चला गया, अब राजा उस बन में अकेला रह गया और मारे प्यास के इसका दम निकलने लगा, यहां तक हुआ राजा धूप और गर्मी को सहन ना करते हुये झट से घोड़े से नीचे गिर पड़ा. और उसे अपने तन मन की सुध ना रही, इतने में इधर से एक पन्द्रह सोलह वर्ष का गड़रिये का बालक आ निकला उसने राजा को पड़े देख झट से अपने कपड़े से उसके मुँह पर हवा की थोड़ी देर में राजा को होश आया और उस बालक से पानी का संकेत किया, गड़रिये के बालक ने तुरन्त अपनी सुराही में से एक प्याला पानी भर कर राजा को दिया, राजा को पानी पीकर होश आया और उसने गड़रिये से कहा बेटा तुम कौन हो ? गड़रिये ने कहा। मैं गड़रिये का बालक हूं सामलिया मेरा नाम है बकरियां चराने का इस जंगल में काम करता हूं आज उन बकरियों में से कई एक बकरियाँ गुम हो गई हैं। उन्हें ढूँढते-ढूँढते आ निकला और आपको यहां प्यास के मारे पड़ा देख अपनी सुराही में से एक पानी का प्याला भर कर पिला दिया। इसमें मैंने कोई ऐसान नहीं किया, जो मानव धर्म था उसको निभाया है राजा ने प्रसन्न होकर एक कागज का पुरजा अपनी जेब से निकाल कर

और पेन्सिल से कुछ लिखकर सावलिया को देते हुये कहा कि ला भाई जब कभी तुम पर कोई संकट आये तब इसी पुरजे को लेकर हमारे नगर में हमारे पास आ जाना। इतना कह कर राजा ने उस बालक को बार-बार छाती से लगाया और वहाँ से चला गया।

इधर सावलिया की खोई हुई बकरियां भी मिल गई और वो उन सब बकरियों को लेकर संध्या होते-होते अपने घर आगया वन में जो कुछ गुजरा था वो सब अपनी माता से कह सुनाया और वो राजा का दिया हुआ परचा भी दे दिया। अस्तु, कुछ दिनों बाद बकरियों में मरी पड़ गई और सावलिया और उसकी मां को रोटी के भी लाले पड़ गये, तब तो एक दिन सावलिया की माता ने वही पुरजा निकाल कर सावलिया को देते हुए कहा, ले सावलिया अपने राजा मित्र के पास जा और कुछ ले आ सावलिया बहुत ही खुश हुआ और अपनी वही मिट्टी की सुराही और प्याला उठाकर कन्धे पर एक कंबरिया डाल कर चल पड़ा। कूँच पर कूँच करते-करते सावलिया उस राजा के नगर में पहुंच गया। और पूछते-पूछते राजमहल की ड्योढ़ी पर पहुंचा और द्वारपालों से कहा कि भाई हमको राजा साहब से मिलना है। उसकी यह बात सुनकर द्वारपालों

ने कहा चल-चल भाग यहाँ से गंवार कहीं का राजा से मिलना चाहता है। सावलिया ने अपनी कमली से वही राजा का परचा खोलकर दिखाया, परचा देखते ही द्वारपाल घबड़ा गये और उनमें से एक दौड़ा हुआ राजा के पास गया और कहा महाराज गडरिये का बालक सावलिया द्वार पर खड़ा है। राजा इतना सुनते ही द्वार की तरफ भागे और सावलिया को झट से आकर अपनी छाती से चिपटा लिया और बड़े आदर सत्कार से राजा उसको महलों के अन्दर ले गया। और अपने बराबर राजा ने उसको तख्त पर बिठलाया क्षेम कुशल पूछने के पश्चात् राजा ने अपने कर्मचारियों को हुक्म दिया कि इनके लिए बहुत बड़ा आलीशान हमारे नगर में हमारे महल के पास एक महल बनाओ। आज्ञा की देरी थी कि सावलिया के लिये बहुत बड़ा महल तैयार होगया, राजा ने अपने नौकरों द्वारा सावलिया की मां को भी गांव से बुलवा लिया। सारांश यह है कि सावलिया और उसकी मां बड़े आनन्द से उस महल में रहने लगे। नगर के सभी लोग सावलिया को छोटा राजा कहकर पुकारने लगे कुछ समय के पश्चात् सावलिया ने एक दिन सोचा कि राजा को आजमाना चाहिये। राजा के एक ही लड़का

था जिसकी आयु पांच वर्ष की थी और वह लड़का सावलिया के ही महल में खेला करता था, एक दिन सावलिया ने उस बालक को अपने पास बुलाकर अपने पास बिठाया, और उसके तमाम जेवर पोटली में बांध लिये और नौकरों से कहा कि इस बालक को महल से बाहर मत जाने देना और इसको इस कमरे में बन्द रखना और सब प्रकार से इसकी देखरेख करना और जो कुछ मैं काम करूं वह किसी से न कहना। दिनभर व्यतीत हो गया राजा और रानी अपने कुमार को महलों में न देख सावलिया के महल में ढुंडवाने को नौकर भेजा तब ता सावलिया ने उसके नौकर से कहा कि भाई यहां तो सवेरे से राजकुंवर नहीं आया है। नौकर यह सुन कर चला गया और राजा से सब हाल कह दिया अब तो राजा के महलमें हाहाकार मच गया कि राजकुमार को कौन ले गया। राजकुमार के एक दम गुम हो जाने की खबर बिजली की तरह फैल गई। सारे नगर में राजकुमार की ढूंढ होने लगी, और जगह-जगह पुलिस और सी. आई. डी. घूमने लगी नगर के समस्त नर नारी इस घटना से बहुत ही दुखी हो रहे थे कि इतने में सावलिया ने राजकुमार के जेवरों की पोटली उठाई और बाजार में राज के सुनार के पास

आकर बैठ गया और आहिस्ता से कहा कि, भाई सुनार तुम ये सब जेवर लेलो और जितने के ये जेवर हों उसके आधे रुपयें मुझे देदो। सुनार ने पोटली खोली और राजकुमार के भूषण पहिचान कर उसे सावलिया पर सन्देह हो गया। झट से उसने पुलिस को आवाज देकर बुला लिया और कहा कि ये महाराज के कुमार के भूषण हैं। इन जेवरों को ये सावलिया मेरे पास बेचने को लाया है। पुलिस ने झट सावलिया को पकड़ लिया और कहा कि तुम ये जेवर कहां से लाये हो? सावलिये ने झट कहा लाये कहां से हैं मैंने राज कुमार को जान से मार डाला और ये जेवर उतार लिये हैं। अब तो सैकड़ों आदमी वहां इकट्ठे हो गये। और पुलिस ने सावलिया को हथकड़ी पहिनाकर जकड़ लिया और राजा के पास लेकर चले राजा के सामने उपस्थित हो कर पुलिस ने कहा कि महाराज ये है राजकुमार का कातिल यह राजकुमार को मार उसके जेवर उतार बाजार में बेचने आया। राजा ये सुनकर आश्चर्य में रह गया। और थोड़ी देर चुप रहने के बाद सावलिया से बोला क्यों भाई सावलिया क्या तुमने मेरे बेटे को मार डाला है? सावलिया ने कहा, जी हां। राजा ने फिर कहा सच बताओ क्या तुमने ही बेटे को मारा है।

वह बोला, हां महाराज। राजा—यह तुम सच्च कहते हो सावलिया ! जी हां महाराज मैंने ही राजकुमार को आज मार डाला है। तब तो राजा ने तलवार म्यान से निकाली और उठ कहा कि, ले ये तलवार ले और मुझे और मेरे समस्त दरबार परिवार को मार कर कत्ल या तबाह करदे तब भी मैं तेरे एक पानी के प्याले का बदला नहीं चुका सकता हूं। यह सुनकर सावलिया हंस पड़ा और बोला राजन् ! चिन्ता न करो तुम्हारा पुत्र मेरे महल में आनन्द से खेल रहा है। मैं ने तो केवल ये सारा स्वांग आपकी आजमायश के लिए किया था इतने में राजकुमार राजमहल में आगया राजा ने सावलिया का खूब सत्कार किया।

पाठकवृन्द ! इस दृष्टान्त से ये शिक्षा लेनी चाहिये कि उस अखंड भू मंडलाकार पारब्रह्म परमेश्वर ने हमारे वास्ते कैसी-कैसी सुन्दर वस्तुयें दी हैं जिनको हम भोग कर इस जगती में आनन्द से जीवन व्यतीत कर रहें हैं। क्या कभी हमने भी सोचा कि जिस परमेश्वर ने हमारे लिए ऐसी-ऐसी सुन्दर वस्तु प्रदान की हैं। उस परमेश्वर के लिए हमने अपने इस मानव जीवन में क्या केवल छल, कपट से धन और नाम कमाकर यश की प्राप्ति कर लेना ही तो कर्म नहीं है। अस्तु, चेत में आओ

और उस भगवान के पवित्र चरण कमलों में अपने मन को लगाते हुए चौबीस घण्टों में से भगवत आराधना कुछ घण्टों के लिए अवश्य करनी चाहिए। तुम्हारे इस कर्म करने से परमात्मा प्रसन्न होगा और इस लोक में सुख देकर अन्त में अपने लोक में जगह देकर चौरासी लाख के योनिचक्र से छुटकारा कराकर तुम सबको मोक्ष पदवी प्रदान करेगा।

वर मांगने में चालाकी

चालाकी अच्छी नहीं, सुने सभी नर नार।
सर्वनाश हो जायगा, पड़ेगी यम की मार॥

किसी मनुष्य ने किसी देवता की आराधना की, अधिक दिन तक आराधना करने के पश्चात् देवता प्रसन्न हुआ और प्रगट होकर बोला कि "वरं ब्रूहि" तू वर मांग। इस पुरुष ने कहा कि जो मैं मांगू वही पाऊं, इसने इस कारण से इसको दुहराया कि सम्भव है वह देवता वर की चालाकी समझ कर वर देने से इन्कार कर जावें, देवता की बुद्धि उस चालाकी तक न पहुंची जब यह कहने लगा कि "जो मांगू वही पाऊं" इसको सुनते ही देवता ने कह दिया कि अच्छी बात है जो मांगोगे वही मिलेगा, इतनी सुनकर यह बोला कि अच्छा

तो दीजिये मेरा वर यह है कि मैं जब चाहूं तब तीन वर मांगलूं, देवता ने कहा बहुत अच्छा "तथास्तु" ऐसा ही होगा। इसके बाद देवता बोला कि इस समय तो वर की आवश्यकता ही नहीं क्योंकि तुम्हारे कथन में ही यह आया है कि मैं जब चाहूंगा मांग लूंगा, इस पुरुष ने उत्तर दिया कि इस समय कोई आवश्यकता नहीं, इतनी सुनकर देवता अन्तर्ध्यान हो गया और यह पुरुष अपने घरको चला आया। कुछ दिन बाद उस पुरुष ने देवता को याद किया, याद करते ही देवता ने आकर पूछा क्यों याद किया? उस मनुष्य ने कहा कि उन तीनों वरों की आवश्यकता है। देवता बोला मांगो, इसने कहा कि प्रथम वर तो यह दो कि मैं लखपती हो जाऊं, देवता बोला कि 'तथास्तु' ऐसा ही होगा, यह वर लेकर उस मनुष्य ने कहा अब दूसरा वर यह दो कि मेरा विवाह हो जावे, देवता ने फिर तथास्तु कह दिया। अब इस मनुष्य ने कहा कि अच्छा तो अब मैं तीसरा वर भी मांगलूं, देवता ने कहा कि मांगो, यह मनुष्य बोला अच्छा तो फिर तीसरा वर यह है कि मैं जब चाहूं तीन वर फिर मांग लूं, लाचार होकर देवता ने कहा अच्छा। इतना कह कर देवता अदृश्य हो गया और यह मनुष्य अपने घरके काम में लगा।

तीन महीने का समय नहीं बीतने पाया था कि यह मनुष्य लखपती हो गया, और चतुर्थ मास में इसका विवाह हो गया, फिर क्या था मौज उड़ने लगी किन्तु यह तृष्णा कब चैन लेने देती है, यह तो जितना द्रव्य ऐश्वर्य देखेगी उतनी ही बढ़ेगी, लाचार तृष्णा डायन के फन्दे में फंसकर उस मनुष्य ने फिर देवता को याद किया देवता ने आकर पूछा कि अब क्यों याद किया, इस मनुष्य ने उत्तर दिया कि वे वर मांगने हैं देवता बोले कि मांगो उसने कहा कि प्रथम वर तो यह है कि मैं राजा हो जाऊं और दूसरा वर यह दो कि मेरे पुत्र हों, देवता ने फिर वही 'तथास्तु' कह दिया, अब यह मनुष्य बोला कि अच्छा तो तीसरा वर यह है कि मैं जब चाहूं तीन वर फिर मांगलूं, देवता बोले कि बहुत अच्छा, दृष्टान्त बहुत बड़ा है उसको यहां पर छोड़ कर विचार तो करिये कि क्या किसी जमाने में ये तीन वर पूरे होकर इस देवता का पिण्ड छोड़ सकते हैं ? इस प्रश्न का तो उत्तर ही यह है कि हरगिज—हरगिज भी छुटकारा नहीं हो सकता क्योंकि तीन वर मांगने में चालाकी से काम लिया गया है।

नोट—श्रोता, पाठक एवं कथावाचक महोदय इसका भावार्थ स्वयं ही अपने मतानुसार लगा लें।

बाबू अफलातून

पढ़ पढ़ अंग्रेजी हुये, बाबू अफला तून ।
पानी को वाटर कहैं, घर में नाहीं चून ॥

एक एम.ए. पुरुष का विवाह हुआ, दुलहिन बिना पढ़ी आई किन्तु थी रूपवती। आप रूपवती दुल्हिन पाकर फूले नहीं समाते थे, इन महाशय ने किसी दिन अपनी दुलहिन से कहा कि वाटर लाओ। वाटर शब्द को सुनकर स्त्री घबड़ा गई और मन में विचार करने लगीकि ये मांगते क्या हैं ? अनुमान किया कि बाट (पत्थर) मांगते हैं, वह हाथ में एक पत्थर लेकर इनकी तरफ़ को चली, जब इनके पास आई और इन्होंने उसके हाथ में पत्थर देखा तो पत्थर देखते ही क्रोधित होकर बोले कि—"नौनसैंस" स्त्री घबड़ा गई और उसने पत्थर रख दिया। तब इनको स्मरण हुआ कि यह अंग्रेजी नहीं जानती, आप संकुचित हृदय होकर कहने लगे कि—पानी लाओ। वह मुरादाबादी गिलास में ठण्डा जल लेकर आई, इसको देखकर आप मग्न हो गये और जल लेने से पहिले ही कहने लगे कि—थैंक्यू। वह बिचारी अंग्रेजी नहीं पढ़ी थी उसने थैंक्यू शब्द से यह समझा कि बाबू जी यह कहते हैं कि तुम जल फैंक दो। उसने जल फैंक दिया, बाबूजी प्यासे ही रह गये।

सज्जनो ! यह अंग्रेजी भाषा बोलने का फल है। संस्कृत और हिन्दी को मार कर देश में अंग्रेजी भाषा के प्रचार करने में जो ये लोग उद्योग करते हैं इसमें इनका कोई भी दोष नहीं, कलङ्क उसी के ऊपर रखा जा सकता है जो होश में हो। ये गरीब तो बेहोश हैं। इन्हें अपने-अपने शरीर का ही ज्ञान नहीं, भाषा का ज्ञान किसको हो ?

ईश्वर स्वतः क्यों आता है ?

एक दिन अकबर ने बीरबल से कहा। ईश्वर की आज्ञा में देवता, ऋषि, मुनि तथा पारिषद् रहते हैं फिर इनमें से किसी को भी आज्ञा न देकर वह ईश्वर स्वतः क्यों अवतार धारण करता है ? इस प्रश्न को सुनकर बीरबल ने कहा कि अच्छा इस प्रश्न का उत्तर हम कुछ दिन पश्चात् देंगे। बीरबल ने एक होशियार कारीगर को तलाश किया और उसको शाह अकबर के लड़के को दिखलाया जो उस समय चौदह पन्द्रह महीने का था और उस कारीगर से कहा कि तुम हूबहू एक ऐसा ही लड़का मोम का बनाओ, देखने में इसमें और उसमें कोई भेद न रहे। कारीगर ने लड़का

बनाया जो सूरत शक्ल में सर्वथा इस राजकुमार के सदृश था। फिर बीरवल ने इस लड़के के लिए उसी प्रकार के वस्त्र बनवाये। जब यह सब मामला तैयार होगया तब एक दिन बीरबल ने बादशाह से कहा कि हुज़ूर गर्मी बहुत पड़ती है। हमारी इच्छा है कि आज सायंकाल नाव में सवार होकर यमुना की हवा खाई जावे। बादशाह ने स्वीकार कर लिया और सात बजे का समय भी दे दिया। नियत समय से पहिले नाव सज गई थी समय पर ही बादशाह नाव पर आ विराजे। बादशाह के साथ में शहर के रईस, अदालतों के हाकिम अमीर और उमराव, फौज के बड़े-बड़े आफिसर, बाडीगार्ड तथा बड़े-बड़े तैराक मल्लाह नाव पर आगये। सब आगये किन्तु बीरबल ने कुछ देर कर दी, पन्द्रह मिनट के बाद जब कि कुछ अंधेरा हो गया था बीरबल उस लड़के को लेकर आया। बादशाह ने कहा कि इस लड़के को क्यों ले आये? बीरबल ने कहा कि किले में यह लड़का रोता था, इसको मैं ले आया हूं, इसके लाने के कारण मुझे देर भी लग गई। यमुना-जी की लहरों की ठण्डी हवा लगने से इस बच्चे को नींद आगई। बादशाह ने कहा कि अच्छा बैठो। बीरबल नाव के किनारे पर बैठ गया। मल्लाहों को नाव

चलाने का हुक्म हुआ। नाव धीरे धीरे चलती हुई यमुना के बीच धार में पहुंची, बीरबल ने बड़ी युक्ति के साथ उस लड़के को यमुना में डाल दिया और एक दम चिल्ला उठा कि हाय हाय लड़का गिर गया। इस घटना को देखते ही बादशाह फौरन यमुना में कूद पड़े और तैरते हुए लड़के को जाकर पकड़ा। पकड़ते ही मालूम हो गया कि लड़का नकली बना हुआ है, उसको छोड़ दिया। इतने में बीरबल ने नाव को बादशाह के पास पहुंचवा दिया, बादशाह ऊपर चढ़े। दम लेकर बीरबल से गुस्सा हुये कि इतनी गुस्ताखी? बीरबल ने कहा कि आप मुझे कहते हैं, क्या आपको उचित था कि इतनी गुस्ताखी करें? बादशाह ने कहा कि मैंने क्या गुस्ताखी की है? बीरबल बोला कि यदि मैंने इंच भर गुस्ताखी की है तो आपने गज भर गुस्ताखी की है, यदि मैंने पाव भर गुस्ताखी की, तो आपने चार पनसेरी गुस्ताखी की। इस नाव के ऊपर शहर के रईस, अदालतों के हुक्काम, फौज के आफीसर, अमीर और उमराव, बाडीगार्ड, बड़े बड़े तैराक मल्लाह और खास में दीवान मौजूद, किसी का भी न हुक्म न देकर आप यमुना में खुद कूद पड़े, यह गुस्ताखी नहीं तो क्या है? आपने यह बहुत ही अनुचित किया। बादशाह बोले

कि ऐ बीरबल ? जिस समय हमको यह मालूम हुआ कि हमारा प्राण प्यारा पुत्र यमुना में डूबा जाता है, लड़के के प्रेम ने हमको खींच लिया, हम बातें करना हुक्म देना भूल गये और प्रेम में बँध कर एक दम कूद पड़े। बीरबल ने कहा कि बस हुजूर ! ईश्वर के अवतार का उत्तर हो गया। जिस समय ईश्वर के प्राण प्यारे भक्त के ऊपर कष्ट पड़ता है वह किसी को भी हुक्म न देकर खुद ही कूद पड़ा करता है, परमात्मा श्रीकृष्णचन्द्र जी ने गीता के चौथे अध्याय में सामान्यता से अवतार धारण करने की तीन आवश्यकतायें बतायी हैं

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥

सज्जनों की रक्षा करना, दुष्टों को दण्ड देना, धर्म की स्थापना करना ही, अवतार धारण करने की आवश्यकतायें हैं। इन तीन कारणों में से अवतार धारण करने का एक कारण बीरबल ने अद्भुत घटना से दिखला दिया और दिखलाया भी इस प्रकार से कि अकबर को मानना ही पड़ा।

सज्जनो ! परमात्मा सर्वशक्तिमान् है। सर्वशक्तिमान् का अर्थ है कि इसमें सब कार्य करने की शक्ति हो तो क्या परमात्मा अपनी शक्ति से अवतार

धारण नहीं कर सकता। यदि कहे कि नहीं कर सकता, तो फिर उसको आप एक शक्ति कम का ही परमात्मा मानोगे। अस्तु भगवान् के अवतार आदि पर तर्क करना सर्वथा निर्मूल है।

मन माना अर्थ

मन माने जो अर्थ कर, करते भारी भूल।
तर्क कुल्टाग्नि जब चले, नष्ट होय जड़ मूल॥

एक नगर में एक पंडितजी रामायण की कथा बांच रहे थे। जिस समय पंडितजी महाराजा जनक का प्रसंग छेड़ रहे थे उस समय कथा के श्रोताओं में एक ईसाई भी बैठे हुए थे। ईसाई महोदय झट खड़े होकर बोले। पंडितजी तुम जिस राजा जनक का कथा में चर्चा कर रहे हो वो राजा जनक तो ईसाई मत के थे और वो हजरत ईसा पर ईमान रखते थे। पण्डित जी उसकी यह बात सुनकर आश्चर्य में पड़ गये और बोले भाई तुम ये किस आधार पर कहते हो कि राजा जनक ईसाई मत के पोषक थे। क्योंकि जब इस पृथ्वी पर महाराजा जनक थे उस समय तो हजरत ईसा का जन्म भी नहीं हुआ था और नाहीं ईसाई मत का नाम निशान था। ईसाई महोदय ने कहा पण्डित जी तुम

झूठ बोलते हो और मैं सिद्ध कर दूंगा कि राजा जनक ईसाई थे। पंडित जी ने कहा अच्छा आप सिद्ध करिये कि राजा जनक कैसे ईसाई थे। ईसाई महोदय ने कहा पंडित जी आप तुलसीकृत रामायण को मानते हैं पंडित जी बोले हाँ मानते हैं। उसने कहा देखिये जिस तुलसीकृत रामायण को आप मानते हैं। उसी रामायण में साफ लिखा है कि—

सर समीप गिरिजा घर सोहा। बरनी न जाय देख मन मोहा॥

अर्थात् सर (तालाब के किनारे) ऐसा सुन्दर गिरजा घर बना हुआ है जिसकी सुन्दरताई देखकर हर एक का मन मोहित हो जाता है। पण्डित जी उस ईसाई के मुंह से इस चौपाई को सुनकर चकित हो गये और झट से बोले वाह भई वाह ईसाई साहब तुमने तो कमाल ही कर दिया। वह बोला पण्डित जी इसमें कमाल की कौन सी बात है मैंने तो तुलसी कृत रामायण की एक चौपाई से सिद्ध कर दिया कि राजा जनक ईसाई थे। पण्डित जी बोले ईसाई जी जरा इस चौपाई के आगे की चौपाई को तो पढ़िये। वह बोला मैंने सारी चौपाइयां पढ़ने का ठेका तो नहीं लिया है। पण्डित जी ने कड़े शब्दों में कहा ठेका वेका हम नहीं जानते तुमको आगे की चौपाइयां जरूर पढ़नी होंगी। पण्डित जी और ईसाई

की बड़ी देर तक तू तू मैं मैं होती रही। निदान जनता ने भी ईसाई महोदय से कहा कि पण्डितजी ठीक कहते हैं तुम आगे की और चौपाई क्यों नहीं बोलते या पढ़ते हो। यदि तुमने आगे की चौपाई नहीं पढ़ी तो हम सब तुमसे झगड़ेंगे। ईसाई ने कहा क्या मैंने जो चोपाई कही है वह रामायण में से नहीं है और उस चौपाई से क्या राजा जनक ईसाई मत के सिद्ध नहीं होते पण्डितजी बीच में ही बोल पड़े, ठीक है चौपाई तो रामायण की है परन्तु इस चौपाई से जनक ईसाई मत के थे ये सिद्ध नहीं होता, ईसाई महोदय ने कहा तो फिर आप ही चौपाई के आगे पीछे की चौपाइयां पढ़कर हमारे अकाट्य वाक्य खण्डन कर सिद्ध करिये कि जनक ईसाई मत के नहीं थे। पण्डितजी ने कहा तेरी ऐसी की तैसी ठहर तो सुन अगर तू इसी चौपाई को मानता है तो अभी देख कैसा तुझे उत्तर देता हूं।

सर समीप गिरजा घर सोहा। वरनी न जाय देख मन मोहा।
जै जै जै गिरराज किशोरी। जय महेश मुख चन्द्र चकोरी॥
जय गज बदन खड़ानन माता। जगत जननी दामनि दुतिदाता।

पण्डित जी ओर से बोले ईसाई साहब—

आगे याको अर्थ लगाता। तो ईसा औरत बन जाता॥

पण्डित जी की इस युक्ति को सुनकर समस्त जनता

खिलखिला कर हंस पड़ी और ईसाई महोदय वहां से भागते ही नजर आये।

बन्धुओ!

प्रायः देखा जाता है कि आजकल के नवीन मतों के मत वाले हिन्दुओं के सद् ग्रन्थों में से कोई ना कोई प्रमाण अपने मत को सिद्ध करने के लिये अर्थ का अनर्थ कर भोली भाली श्रद्धालु हिन्दू जनता को धोखा दे अपने मायावी जाल में फँसा कर अपने मत की उन्नति करने में संलग्न हैं। अस्तु, ऐसे मतों के मत वालों को जब तक युक्ति द्वारा मुंह तोड़ उत्तर न दिया जायगा तब तक इन मत वालों का मुंह बन्द नहीं होगा।

गृहस्थियों की सभा में सन्यासी जी

झूठा ज्ञान बघारते, धर त्यागी का भेस।
गंगा तरंग मन में बसा, देते पापी ठेस॥

एक नगर में एक सन्यासी व्याख्यान दे रहे थे। उनके व्याख्यानों को सभी नरनारी सुन रहे थे सन्यासी जी ने अपने व्याख्यान में कहा कि हरिद्वार, प्रयागराज नासिक, उज्जैन आदि-आदि स्थानों में जाकर और वहां गंगा यमुना गोदावरी में स्नान करने की कोई आवश्य-

कता नहीं है क्योंकि भाइयो तुम्हारे घर में ही गंगा जमुना बह रही है। जब तुम्हारे इस शरीर में घट के अन्दर गंगा जमुना ठाठें मार रही हैं तब तुम लोगों को भूतल पर बहने वाली गंगा जमुना आदि में स्नान करने की क्या आवश्यकता है ? अपने मनकी गंगामें ही रोज-रोज खूब डुबकी लगा लगा कर स्नान करो। महात्मा जी का व्याख्यान समाप्त हुआ लोग अपने अपने घरों को चले गये। महात्माजी भी उसी नगर में अपने एक सेवक के यहां ठहरे हुये थे। सो वहां चले गये। जिस सेवक के यहाँ स्वामीजी ठहरे हुये थे उस सेवक को महात्मा जी का आज का व्याख्यान अच्छा नहीं लगा उसने विचारा कि मन में गंगा जमुना बह रही हैं इस बात की परीक्षा क्यों न स्वामी जी पर ही की जाय। निदान स्वामीजी भोजन आदि पाकर एक कोठरी में विश्राम करने को चले गये और स्वामी जी अन्दर से कोठरी का दरवाजा बन्द कर सो गये। आध घण्टे बाद सेवक ने दो चार नगर के भले भले गृहस्थियों को (जो कि स्वामी जी के आज के व्याख्यान में थे) बुलाया और उनसे कुछ कानाफूसी करने के पश्चात् उस कोठरी का दरवाजा बाहर से बन्द कर ताला लगा दिया जिस में स्वामी जी सो रहे थे। गर्मी सख़्त पड़ रही थी गर्म-

गर्म लूयें ऐसी चल रही थीं कि घरों से बाहर निकलना प्राणी मात्र को कठिन हो रहा था तीन चार घण्टे बाद अन्दर से स्वामी जी दरवाजा खोलो-दरवाजा खोलो करके चिल्लाने लगे, परन्तु दरवाजा किसी ने भी नहीं खोला। सब चुपचाप बैठ सुनते रहे। स्वामी ने फिर आवाज लगाई भाई दरवाजा खोलो मेरा मारे प्यास के दम निकला जा रहा है। लोग फिर भी चुपचाप बैठे रहे अब की बार तो स्वामीजी ने अन्दर से दरवाजे को लात घूसे मारते हुये कहा अरे कोई है दरवाजा खोलो मूर्खो मेरा मारे प्यास के प्राण निकला जा रहा है। आखिरकार बहुत से मनुष्यों के सामने उस सेवक ने दरवाजे का ताला खोल दिया। दरवाजा खुलते ही स्वामी जी कोठरी में से भयंकर क्रोध धारण किये हुये निकले और अपने उस सेवक पर बरसते हुये बोले जिस पाजी ने दरवाजा बन्द कर मेरे साथ मजाक किया है उसको शर्म नहीं अब तो मैं मारे प्यास के मर गया सेवक ने हाथ जोड़ते हुये कहा महाराज क्रोध ना कीजिये आपके पास तो जल था पी क्यों नहीं लिया ? स्वामी जी ने कहा अरे मूर्ख मेरे पास जल कहाँ था, क्या तेरा सिर पीता। सेवक ने कहा महाराज प्रातःकाल जब आपने स्वयं अपने व्याख्यान में कहा था कि घट में ही

गंगा जमुना आदि बह रही हैं उनमें स्नान करो, जब आपके घट में गंगा जमुना गोदावरी आदि बह रही हैं फिर आप प्यासे क्यों मरे ? खूब पेट भर कर पानी पी लेने, इसकी यह बात सुनकर स्वामी जी को लज्जा आई कि वह डण्ड-कमण्डल उठा चलते बने ।

बन्धुओ ! प्रायः देखा जा रहा है कि आज कल अधिकतर नकली सन्यासी यत्र तत्र गृहस्थियों में बैठ वेदान्त के गूढ़ विषयों पर लेक्चर झाड़ते हुये गृहस्थियों को उनके गृहस्थ धर्म से वंचित कर रहे हैं। मन में गंगा जमुना उन परमहंस ज्ञानियों के लिये है जो कि कर्म उपासना से छुटकारा पाकर ज्ञान मार्ग में प्रवेश कर चुके हैं। हम गृहस्थियों के उद्धार के लिये तो भूतल पर बहने वाली गंगा जमुना आदि ही हैं इन्हीं में स्नान करने से हम गृहस्थियों को ज्ञान मार्ग की प्राप्ति हो सकती है। अस्तुः हमारी सब गृहस्थियों से प्रार्थना है कि वे ऐसे मिथ्या व्याख्यानों को कदापि ना सुनें और नाही ऐसे ढोंगी ज्ञानियों को अपने घरों में आश्रय दें ।

भगवान् को भगवान् पर कैसे चढ़ाऊं

व्यापक सब में ईश्वर, तुमको कहां दिखाऊं ।
ईश्वर, ईश्वर पर चढ़े, ये सिद्धान्त, बताऊं ॥

एक नगर के एक स्कूल में, स्कूल लगने से पहिले

तमाम लड़कों को हेडमास्टर साहब ने बराबर बराबर खड़ा कर कहा कि लड़को पहिले ईश्वर प्रार्थना करलो। पश्चात् सैकंड मास्टर साहब ने लड़कों से ये प्रार्थना कराई—

अजब हैरान हूँ भगवन् तुम्हें क्योंकर रिझाऊं मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं॥
तुम्हीं व्यापक हो फूलों में तुम्हीं व्यापक हो मूरत में।
भला भगवान् को भगवान् पर क्योंकर चढ़ाऊं मैं॥

तमाम लड़के मास्टर जी के पीछे २ इस प्रार्थना को बोलने लगे, परन्तु उन लड़कों में से एक लड़का जिसका नाम ध्यानदास था वह इस प्रार्थना को नहीं बोलता था और चुपचाप मुंह बन्द किये खड़ा रहा। मास्टर ने उस लड़के को चुप देखकर कहा क्योंरे ध्यानदास प्रार्थना क्यों नहीं बोलता? उसने कहा मास्टर जी मैं यह प्रार्थना हरगिज नहीं बोलूंगा। मास्टर ने कहा तुझे यह प्रार्थना बोलनी ही पड़ेगी। लड़के ने कहा मैं हरगिज नहीं बोलूंगा। मास्टर ने मानीटर से कहा कि लाओ मेरा हन्टर मैं इसकी अभी अक़ल ठीक किये देता हूँ देखें कैसे नहीं बोलेगा। मानीटर झट से हन्टर ले आया और मास्टर के हाथ में दे दिया। मास्टर ने ध्यानदास का कान पकड़ कर

लड़कों की (पंक्ति) लाइन से अलग खड़ा कर दिया। और हन्टर उठाकर कहा, बोल नहीं तो अभी तेरी चमड़ी उधेड़ता हूं। ध्यानदास ने कहा, मास्टरजी आप मुझे हन्टर से नहीं मार सकते, मास्टर बोला क्यों? लड़का बोला-सुनो—

वही व्यापक है हन्टर मे, वही व्यापक है लड़के में।
भला भगवान को भगवान से क्योंकर पिटाऊं मैं॥

कहिये मास्टरजी क्या हन्टर में और मुझ में परमात्मा नहीं है। मास्टर ने कहा भाई परमात्मा तो सर्व व्यापक है फिर भला हन्टर में और तुझ में भी परमात्मा क्यों नही हैं। लड़के ने कहा बस? फिर आप मुझे हन्टर नहीं मार सकते। मास्टर कुछ विचार कर कुरसी पर बैठना ही चाहता था कि इतने में ध्यान दास झट आंख बचाकर दौड़ा और कुरसी को पीछे की तरफ हटा दिया मास्टर जी झट जमीन पर गिर पड़े और बोले अबे ये क्या करता है? लड़के ने कहा—

वही व्यापक है कुरसी में, वही व्यापक है मास्टर में।
भला भगवान को भगवान पर क्योंकर बिठाऊं मै॥

मास्टर ये सुन कर बहुत शर्मिन्दा हुआ और ध्यानदास से कहा, भाई पीछा छोड़, लड़के ने कहा, "वही व्यापक है फूलों में वही व्यापक है मूरत में" मास्टर जी अगर

आप ऐसे २ भजन और प्रार्थना खुद गायेंगे या औरों से गवायेंगे तो संसार के सारे कार्य एक दम बन्द हो जायेंगे क्योंकि कौनसी ऐसी वस्तु है जिसमें परमात्मा मौजूद नहीं है, मास्टर ने हमेशा के लिये इस प्रार्थना को न गाने की प्रतिज्ञा कर ली।

हिन्दुओ! धर्म प्राण भारतवर्ष में छोटे छोटे नवयुवकों से जब ऐसे ऐसे ज्ञान और वेदान्त से भरपूर गाने गवाये जायेंगे तो आप ही सोचिये उन होनहार नवयुवकों को आह कर्मवीर किस प्रकार बना सकेंगे। भगवान की प्रार्थना करने की जो गृहस्थियों एवं बालकों की प्राचीन पद्धति है उससे ही हमारा तरण तारण हो सकता है, और हम अपने नवयुवकों को कर्मवीर तब ही बना सकेंगे जब कि हम कर्म काण्ड की शरण लेंगे। वेद भगवान के एक लाख मन्त्र हैं जिनमें ८० हजार मन्त्र कर्मकाण्ड के हैं और १६ हजार मन्त्र उपासना काण्ड के हैं, इन दोनों काण्डों के मन्त्र मिला कर ९६ हजार हो जाते हैं। अब एक लाख में से शेष बचे ४ हजार सो ये चार हजार मन्त्र ज्ञान काण्ड के हैं। जब हमें अभी अपने होनहार नवयुवकों को कर्म और उपासना के मार्ग पर चला कर उन्हें तीन आश्रमों के दुर्ग तक पहुंचाना है। खेद है कि उन्हीं नवयुवकों

को कुछ मूर्ख शिक्षक इतनी कठिन और ऊंची शिक्षा देकर उन बालकों के पवित्र जीवन पर कुल्हाड़ा चलाने की कुचेष्टा कर पतन का मार्ग दिखला रहे हैं।

विचित्र माया नगरी

माया नगरी देह से, देखा ध्यान लगाय।
भूले भटके जो यहां, उनको मार्ग दिखाय॥

पुरञ्जन नामक एक प्रसिद्ध राजा था और अज्ञात नामी उसका एक परम मित्र, पुरञ्जन ने अपने निज निवास के लिये पृथ्वी में भ्रमण किया एक दिन उसने एक ऐसा विचित्र नगर देखा जिसमें आवागमन के लिये ९ द्वार थे उनमें घूमती हुई एक सुन्दर स्त्री भी दिखाई दी उसके साथ १० नौकर थे जो सौ सिपाहियों की देख रेख करते थे और एक पांच सिर वाला सर्प उसकी चारों ओर से रक्षा कर रहा था। अकस्मात उससे पुरञ्जन की चार आंखें हो गईं दोनों में विशेष प्रेम भी हो गया अब दोनों राजा-रानी बनकर रहने लगे इस प्रकार उन्हें रहते हुए उस स्थान पर १०० वर्ष व्यतीत हो गये। उस नगर में सात द्वार तो ऊपर की ओर और दो द्वार नीचे की ओर थे। पुरञ्जन रानी की आज्ञा का पालन सर्वदा किया करता था। एक बार पुरञ्जन

अपना धनुषबाण लेकर और रथ में बैठकर पञ्चम प्रस्थ नामी जंगल में शिकार के लिये गया, रथ में पांच घोड़े जुते हुए थे और रथ के डण्डों में दो पहिये, एक धुरी तीन ध्वजदण्ड एक रस्सी पांच बन्धन तथा एक रथवान के बैठने का स्थान था। आवेष्टन वस्त्र (सात पर्दे) पड़े थे, रथ की गति पांच प्रकार की थी, पुरंजन सोने का कवच पहने हुये, अक्षय तरसक कमर में लगाकर इस विलक्षण स्वर्णमय रथ पर सवार होकर बन में गया। राजा के साथ ११ प्रकार की सेना थी। गर्व पूर्वक अपने धनुषबाण का प्रयोग करके शिकार खेला और अन्त में भूक और प्यास अधिक लगने पर घर को लौट आया। ईश्वर की कृपा से कुछ समय में ही रानी से ११०० लड़के और ११०० लड़कियां उत्पन्न हुईं जो पिता माता की कीर्ति तथा वैभव को बढ़ाने वाली थीं। इस प्रकार उसकी आयु का बहुत सा हिस्सा आनन्द पूर्वक व्यतीत हो गया। अकस्मात चण्ड नाम के एक गन्धर्व राजा ने ३६० गन्धर्व वीर और इसकी आधी कृष्ण वर्ण और आधी गौर वर्ण गन्धर्वाणियों को साथ लेकर पुरंजन के नगर पर चढ़ाई की और परस्पर घमासान युद्ध होने लगा। इस प्रकार ७२० गन्धर्व सेना से पुरंजन लगातार १०० वर्ष तक लड़ता रहा। गन्धर्व

राज-काल की एक दुर्भागिनी लड़की ने अपने योग्य पति की खोज में समस्त भूमण्डल को छान मारा था परन्तु किसी ने उसे स्वीकार नहीं किया था, अतः उसने देवर्षि नारद जी के कहने से अपने भयनामी सगे भाई का ही वरण कर लिया था यह दोनों पुरंजन के नगर में प्रवेश कर गये और उनकी यवन सेना ने भी उन नव द्वारों में घुसकर समस्त नगर को तहस-नहस कर दिया। पुरंजन की चोटी पकड़ ली इसके साथ भय का बड़ा भाई 'प्रज्वर' भी आ धमका और अपने भाई के सहायतार्थ बड़ा उद्योग किया यहां तक कि पुरंजन के नगर में आग भी लगा दी और मिलजुल कर उन्होंने पुरंजन को पकड़ लिया। पुरंजन ऐसा चक्कर में फंसा कि और तो और वह अपने अज्ञात मित्र को भी न बुला सका जो उसको इन समस्त बाधाओं से क्षणमात्र में मुक्त कर सकता था।

वास्तव में महर्षि व्यास जी ने यह एक दृष्टान्त दिया है जिसका तात्पर्य यह है:—

पुरुषं पुरञ्जनं विद्यात् पुरुषस्य सखेश्वर।
बुद्धिन्तु प्रमदां विद्यात् सवत्सरञ्चण्ड वेग॥
काल कन्या जरा साक्षात् प्रज्वारो द्वितीयोज्वरः।
रक्षारं जगृहे मृत्यु· क्षयाय यवनेश्वर·॥

अर्थात् पुरंजन नाम राजा जीव हैं जिसका परम सहायक मित्र अज्ञात परमेश्वर है, जीव अनेक योनियों में भ्रमण करके अपने योग्य शरीर की खोज करता फिरता है। नौ द्वारों वाला नगर (मनुष्य) शरीर है, जिसके नौ दरवाजा गुदा, लिंग, (जो नीचे की ओर हैं) मुख, कान, नाक, आंखें ऊपर के दरवाजे हैं।

ऐसे शरीर रूपी नगर में जीव निवास करता है। जहां उसे बुद्धि रूपी सुन्दर स्त्री मिलती है जिसकी पांच ज्ञानेन्द्रियां और पांच कर्म इन्द्रियां नौकर हैं जो सैकड़ों प्रकार के इन्द्रियों के कार्यों के निरीक्षक हैं उस कन्या की रक्षा करने वाला सर्प प्राण है जिसके १—प्राण, २—अपान, ३—उदान, ४—समान और ५—व्यान रूपी पांच शिर है जो रक्षक की भांति उसको सुरक्षित रखता है जिसके प्रताप से जीव पुरुष और बुद्धि स्त्री रूप दम्पति आनन्द से १०० वर्ष जीवन व्यतीत करते हैं। शिकार के लिये पुरंजन को रथ ले गया था वह मानव शरीर है जिसमें इन्द्रिय विषय (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, तथा गन्ध) रूपी ५ घोड़े जुते हैं, पाप पुण्य रूप दो पहिये हैं। तीनों गुण (सत्व, रज, तम) तीन ध्वजाये हैं। पांच प्राणों की रस्सी से पांच स्थान पर बंधा है। इन सब घोड़ों की मनरूपी एक ही लगाम है। बुद्धि सारथी है

हृदय जीव के बैठने का मुख्य स्थान है। सुख दुःख दोनों जगह बन्धन स्थान है। सातों धातु (मांस अस्थि आदि) ही उसके आभूषण हैं। जिस रथ पर सवार होकर जीव रूप पुरंजन विषय प्राप्ति रूप शिकार में प्रवृत होता है। ११ इन्द्रियों की सेना उसके साथ पांच विषय 'पंच प्रस्थ' वन हैं, जीव जगत की विषय-वासना रूपी मृग-तृष्णा से दुखी तथा श्रमित होकर हृदय रूप निवास में आ जाता है। जहां उसको बुद्धि भी विक्षिप्त मिलती है कुछ दिन व्यतीत होने पर अनेकों संकल्प, विकल्प तथा विषय-वासना रूपी संतानों की अत्यन्त वृद्धि होती है जिसके फेर में फंसकर अपने को भूल जाता है। काल की नाप तोल करने वाला सम्वत्सर गन्धर्वों का राजा 'चण्डवेग' है जिसके सेना नायक ३६० दिन तथा उजाली और अन्धेरी रातें गन्धर्व-राज की ३६० रानियां हैं और इस प्रकार ७२० व्यक्तियों की सेना मानव शरीर पर आक्रमण करती हैं और इस जीवरूपी पुरजन के शरीर रूप पुरंजन नगर का अध्यक्ष उसका अहंकार ही है जो बेचारा अकेले ही इतनी बड़ी सेना से लोहा लेता है।

जरा अर्थात् वृद्धावस्था गन्धर्व कन्या है जो प्रत्येक प्राणी को वरण करनेका उपाय करती है परन्तु कोई उसे

सहर्ष स्वीकार नहीं करता अतः अविज्ञवेश-मृत्यु भय-रूपी अपने सगे भाई को अपना पति बना लेती है और घात लगते ही समयानुसार शरीर-रूप नगर पर अपना कब्जा कर लेती है और उसके नाना प्रकार के आधि-व्याधि दुःख रूप नौकर पुरंजन पुर पर मुँह, नाक, और कान आदि नव दरवाजों से घुसकर नगर को छिन्न भिन्न करने लग जाते हैं मौत का छोटा भाई बुखार 'प्रज्वर' जो शरीर रूपी पुरजन नगर में आग लगा देता है ऐसी दीन हीन भयावनी दशा में मृत्यु रूपी यवन उसे आघेरता है जिसके कारण बिचारा पुरंजन (जीव) इतना घबडा जाता है कि वह अपने परम सहायक 'परमेश्वर' की भी याद भूल जाता है।

हमारा कर्तव्य है कि इस आध्यात्मिक दृष्टान्त को सामने रखकर प्रत्येक आधि-व्याधि तथा दुःखों के आक्रमण पर परम पिता परमात्मा का अवश्य स्मरण करें वही हमारी सब विपत्तियों को क्षणमात्र में दूर करेगा हमें उसके बचने का उपाय बतायेगा और बल भी प्रदान करेगा।

जड़ गुरुओं से उपदेश

जो-जो वस्तू हैं यहाँ, उनका कुछ उद्देश।
सीखो बन्धू, तुम जरा, मर्म भरा उपदेश॥

जगत्

पृथिवी का एक-एक परमाणु हमारा गुरु है और इस संसार वाटिका का पत्ता-पत्ता हमारी पाठ्य पुस्तक का एक पत्र (वरक) है किसी ने सच कहा है—

जर्रे जर्रे में हजारों राज हैं।
पत्ते-पत्ते में हजारों साज हैं॥
मारफत के राज से, पत्ता कोई खाली नहीं।
मारफत के फूल से, खाली कोई डाली नहीं॥

देखना-देखना वह नीम की तुच्छ खरीली पत्ती, इसी ने हमें आरा बनाने की शिक्षा दी है और पीपल के हरे-हरे हिलते हुये पत्तों ने हमें बिजली के पखे बनाने का ज्ञान प्रदान किया है, गुलाब की बेखिली कलियों ने अपने सुन्दर बनावट से बताया है कि लाल रङ्ग के कपड़ों पर हरी गोट मन मोहनी शोभा देती है। शहद की मक्खियों के छत्ते और बये की झौंझों ने ही मनुष्यों को गृह निर्माण कला और फूस की झोंपड़ियां बनाने की विधि सिखलाई है। चीलों और कौओं के परों की

बनावट देख कर ही मनुष्य पर अर्थात् हवाई जहाजों के बनाने का ज्ञान प्रगट हुआ है। जिनके द्वारा आज सभ्य पुरुष चिड़ियों की भांति आकाश पर उड़ते फिरते हैं और पृथ्वी पर पांव नहीं धरते। अरे पश्चिमी आविष्कारों का २४ घण्टे गुण गाने वालो! तुम जो विदेशों के भेजे हुए माल के दृढ़ और दिल लुभा लेने वाले सुन्दर पैकिंग पर लट्टू हो रहे हो तनिक सोचो तो सही कि परमात्मा ने तरबूजे खरबूजे आदि का पैकिंग भी किस कारीगरी से करके तुम्हारे लिये सुरक्षित किया है कभी उसके अदृश्य और सर्व शक्तिमान हाथों को भी धन्यवाद दो जिसने तुम्हें ऐसे-ऐसे उत्तम पदार्थ दे रक्खे हैं।

सूर्य क्या कहता है—

संसार में तेज पुञ्ज और शक्ति का भण्डार बनने की कामना रखनेवाले मनुष्यो! यदि तुम्हें संसार में मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करने की प्रबल इच्छा है तो मेरी तरह अपने स्थान पर स्थित रहो जगत में कोई भी उथल-पुथल और क्रान्ति हो परन्तु तुम अपना ध्यान अपने लक्ष्य केन्द्र से डिगने न दो समय आयेगा कि संसार के सब प्राणी आकाशस्थ तारागणों की भाँति तुम्हारे ज्ञान सूर्य की प्रदक्षिणा करेंगे। हां मेरी तरह

तुम अपने ज्ञान विज्ञान और कला-कौशल से संसार का अन्धकार दूर करते हुये यथा समय समस्त स्वार्थ और परमार्थ के काम २४ घण्टे करते रहो क्योंकि गया वक्त फिर हाथ आता नहीं यदि मै अपने समय पर उदय और अस्त होने से रह जाऊं तो पता नहीं कि संसार में क्या क्रान्ति मच जाय अतः तुम भी अपना प्रत्येक काम नियमित समय पर उत्साह पूर्वक किया करो।

चांद कहता है—

मेरी तरह कबूल सूरत बनो और हर उन्नति और पतन के समय मेरी तरह शान्त रहे। कैसा ही दुःख आ पड़े तुम्हारे मुख पर मेरी भांति मन्द-मन्द मुस्कान की छटा विराजमान रहे संसार में आज तक कोई एक हाल में न रहा है और न रहेगा।

॥ दोहा ॥

जो द्वितीया के चन्द्र सम, जग में छोटा होय।
बढ़ बढ़ के नित वह पुरुप, पूर्ण कलाधर होय॥

तारे कहते हैं—

प्रेम का ढिंढोरा पीटते हुए विरह अग्नि से प्रतिक्षण दग्ध और व्याकुल रहने वालो मनुष्यो! प्रियतम के आगमन की प्रतीक्षा करना हमसे सीखो। सुनो तो कवि क्या कहता है :—

तारे तमाम तारे नज़र में पिरो दिये।
अब और क्या करूँ मैं तेरे इन्तज़ार मे ॥

समुद्र कहता है—

क्षुद्र हृदय मनुष्यो ! मेरी तरह विशाल हृदय और उदार चित्त बनो। सदा अपने तन, मन और धन से संसारियों को लाभ पहुंचाते रहो मेरी तरह तुम्हारे भण्डार में भी कभी कमी नहीं आ सकती। देखो न, मेरा पानी सूर्य की किरणों द्वारा सर्वदा आकाश पर खिंचता ही रहता है परन्तु वर्षा ऋतु आने पर काले-काले बादलों द्वारा बरस-बरस कर और पृथ्वी तल पर तरह-तरह की बनस्पतियां, फल फूल और खाद्य पदार्थ समस्त प्राणियों के जीवनार्थ उत्पन्न करके नदियों के रूप में फिर लौट आता है और मैं सर्वदा ज्यों का त्यों भरा हुआ रहता हूं।

नदियां कहती हैं :—

काहिली से चुपचाप बैठ जाने वाले मनुष्यो ! सायं प्रातः, दिन-रात प्रतिक्षण मेरी जारी रहने वाली गति को देखो और सर्वदा कुछ न कुछ काम करते हुये अपने लक्ष्य की ओर चलते जाओ थकने का नाम भी न लो।

॥ शेर ॥

ख़ुदा के वास्ते तू काहिली का नाम ना ले।
कर इतना काम कि फ़ुरसत भी हो न मरने की ॥

यह भी ध्यान रहे कि थोड़ी सी धन सम्पति पाकर अथवा कुछ उन्नति करके अभिमान से पागल न हो जाओ यह शेर अपनी नोट बुक में लिख लो :—

दिखा न जोशोखरोश इतना जोड़ पर चढ़कर।
गये जहान में दरिया बहुत उतर चढ़ कर ॥

दर्पण (आइना) कहता है :—

मेरी तरह बुराई भलाई मुंह पर कह दिया करो परन्तु आनन्द जभी होगा कि उसके पीछे अपना हृदय-दर्पण पाक साफ रक्खो न किसी से राग हो न द्वेप।

फूल कहते हैं :—

जब तक ससार में जीवित रहो हमारी ही तरह आनन्द से हंसते और मुसकराते रहो और अपने मनोहर स्वभाव, प्रसन्न वदन और नम्र तथा सभ्य वाणी की सुरभि (सुगन्धि) से समस्त स्त्री-पुरुप अथवा अन्य प्राणियों के हृदय और मस्तिष्क को अल्हादित और मस्त बनाते रहो यही मानव-जीवन का उद्देश्य है परम कर्तव्य है। जब इस संसार-वाटिका से कूच करने का

समय आये तब भी धर्म वीरता के साथ धरती माता की सेवा में अपना सर्वस्व अर्पण करते हुये प्राण विसर्जन करो और चलते-चलते अपनी जगत कल्याण कारिणी सेवाओं को अन्तिम प्रणाम के समय फल स्वरूप भेंट करते जाओ।

कमल का फूल कहता है :—

देखो मैं दिन रात पानी में पड़ा रहता हूं परन्तु मुझे किसी ने कभी भीगते नहीं देखा तुम्हें भी यह चाहिये कि सांसारिक विषयों तथा प्रलोभनों की दल-दल में धसकर न रह जाओ। सब कुछ काम करते हुये संसार के पदार्थों में अपना मन लिप्त न करो उसे तो तुम केवल मेरी तरह भगवत् चरणों में ही लगाये रक्खो और यह शेर सर्वदा पढ़ते रहो।

जहाँ मैं हूँ, मगर क्या जानिये क्यों ?
मुझे दुनिया से कुछ मतलब नहीं है।

पानी का बुलबुला कहता है :—

धन और योवन पर फूला न समाने वाले मनुष्य अपने इस क्षणभंगुर शरीर पर इतना न इतरा, इस भव-सागर में मेरी ही तरह तू भी कुछ देर का महमान है, अतः इस नश्वर शरीर की ममता छोड़ और भगवान् महान् महिमा का ध्यान कर।

पृथ्वी कहती है :—

थोड़े कष्ट और मानव-कर्तव्यों के बोझ से घबरा-जाने वाले मनुष्यो ! मेरी तरह सहिष्णुता और धैर्य धारण करो देखो तो मेरे धैर्य और क्षमा का क्या ठिकाना है कि असंख्यों मन बोझा मेरे सिर और छाती पर धरा है परन्तु मैं घबराने का नाम नहीं लेती। न किसी से गिला करती हूं और होती तो कबकी चिल्ला उठती और तिलमिला कर इस तरह भारी बोझे को शिर से उतार फेंकती कि इस संसार रूपी नाटक का ड्रपसीन हो जाता पर मैंने तो समझ रक्खा है।

जो असीरी में हूँ पर मिस्ले असीरे नख़वीर।
न ग़में क़ैद न परवाय रिहाई मुझको ॥

कंघी कहती है :—

जब तक मनुष्य मुसीबत पर मुसीबत नहीं उठाता और कष्टों के सहन में जानकी बाजी नहीं लगाता तब तक अपने लक्ष्य स्थान पर नहीं पहुंच सकता। जैसाकि फार्सी के एक कवि ने कहा है—

ता शाना खिफत ख़र न निही दर ख़रे अर्रा।
हर्गिज़ बसरे ज़ुल्फ निगारे न विही ॥

अर्थ—ऐ प्रेमी ! जब तक तू कंघी की तरह आरी के नीचे सिर नहीं रखेगा तब तक तू यार की ज़ुल्फों तक नहीं पहुंच सकता।

महदी कहती है--

जब तक कोई मेरी तरह पत्थर के नीचे न पीसा जायगा अपने प्यारे के पांवों के तलवों तक न पहुंच सकेगा जैसा कि फार्सी का कवि कहता है—

ता हम चु हिना सूदा नकर्दी तहे सङ्ग।
हर्गिज़ बकफे पाय निगारे न रसी ॥

पतिङ्गा कहता है—

जल मरना ही मेरे जीवन का उद्‌देश्य है।
समय परवाने की हालत से ये रोशन होगया ॥

जिन्दगी का लुत्फ कुछ जल-जल के मर जाने में है।

समय तथा ऋतु परिवर्तन कहता है—

ऋतुओं का परिवर्तन समय तथा संसार की क्रांति का मुंह बोलता चित्र है। कवि कहता है--

सुबह होती है शाम होती है।
उम्र यों ही तमाम होती है ॥

अतः इस असार संसार और परिवर्तनशील माया से प्रेम करने वालो ! तुम बसन्त ऋतु में भले ही भिन्न-भिन्न प्रकार के मनोरंजनों से हंसो और खेलो परन्तु पतझड़ के दृश्य को जो आवश्यक है मन से न भुलाओ।

मालिक का नूरे जहां का मजार (समाधि) कहती

है कि धन, वैभव सुन्दरता और साँसारिक भोग सर्वदा रहने वाली वस्तुयें नहीं हैं। यह तो चलती फिरती छाँह है। जिन वैभवशाली पुरुषों के तुच्छ इशारे से संसार में प्रलय का दृश्य दृष्टिगोचर होने लगता था आज सैकड़ों मन मिट्टी के नीचे दबे पड़े हैं जिन रमणियों के सुन्दर शरीरों पर संसार आसक्त था आज कब्रों के अन्दर दीमक चाट गई है उनकी इस दशा पर कोई उनका दुःख सुख पूछने वाला नहीं है। कोई ध्यान-श्रवण लगा कर सुने तो उनकी समाधि से यह आवज आ रही है :—

जिनको अपने हुस्नों खूबी पर बहुत कुछ नाज था।
मिस्ल परवाने के जिन पर होते थे लाखों फदा॥
जिनको भाता ही न था कुछ ऊर्दो कम्बर के सिवाय।
अब उन्हीं की कब्र से आती है यह हरदम सदा॥
बर मजारे माग़रीबां नै चिराग़े नै गुले।
नै परे परवाना सोजद ने सदाये बुलबुले॥

काम बड़ा बलवान

मनकी चंचलता प्रबल, क्षण में लेत उड़ान।
ज्ञानी ध्यानी सब कहे काम बड़ा बलवान॥

काशीपुर के समीप गंगा पार रामनगर के जंगल में एक बड़ा त्यागी, वैरागी, ज्ञानी, ध्यानी, धर्मधारी,

ब्रह्मचारी आश्रम बनाकर रहता था । नित्य प्रति सत्य सिद्धान्त वेद-वेदान्तों का मनन करता हुआ यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि रूप अष्टांग योग के उपयोग से आत्मानन्द का भोग किया करता था । अतएव शब्द स्पर्श रूप-रस गन्ध आदि विषयरूप रोग के शोग को मिटा दिया था । एक दिन किसी शास्त्र के स्वाध्याय करते समय महर्षि व्यास जी के कर कमलों से अंकित यह श्लोक दृष्टिगोचर होने पर असम्भव आलाप सा प्रतीत हुआ ।

मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वानैकान्तस्थानिनो भवेत ।
बलवानिन्द्रिय ग्रामो विद्वांसमपि कर्षति ॥

बस इस श्लोक को अनहोनी बात समझ कर उस ग्रन्थ में से काट दिया । भगवान वेदव्यासजी अजर अमर एवं चिरंजीवि होने के कारण उस समय जीवित थे । व्यासजी ने ध्यानयोग के बल से इस तत्व को समझकर बिचारा कि यह ब्रह्मचारी भोला भाला है कहीं भोले मन की असावधानी से जगत जाल विषय बवाल में फसकर अपना सर्वनाश कर बैठे इसलिये चलो उसे जगा देवें ।

तदनन्तर महर्षि वेदव्यास उस जगल में पहुंचे । और तपोवन से अपनी दिव्य योगमाया को फैलाने लगे ।

केवल अपनी इच्छा मात्र से ही सौन्दर्य लावण्यमयी समस्त श्रृङ्गारों से सजी धर्जा विलक्षण अद्भुत् आकृति को बनाते हुए ऐसी कमनीय कामनी कान्ति में आकर (रूप धर कर) अपने कोमल विमल संलाप अलापों को इधर उधर हंस पंक्ति की कुञ्जन के समान भ्रमर मालकी सघन घन घटाओं में दामन की दमक चमक के सदृश रूप यौवन की ललित लावण्यता की लहरों को लहराती हुई मूर्त्ति से विचरने लगे। चारों तरफ सुन्दर स्त्री रूप धारी भगवान् व्यास चकित चहल चकार की तरह घूमने लगे। विरहिणी हिरनी की तरह घबराती बिललाती घूमती घूमती महाराज के आश्रम में पहुंची ब्रह्मचारी जी को प्रणाम करने के बाद प्रार्थना करने लगी भगवन् हमारे कुटुम्ब परिवार के लोग इस समीप के तीर्थ यात्रा को गमन कर रहे थे कि बीच में ही कुछ लुटेरों ने लूट लिया और जो बीच में बोला उसे खूब मारा पीटा। इसी अवसर में प्रारब्ध की सहायता से केवल मैं इकली भागकर चली आई हूं। भगवान् ने बड़ी दया की और आपके चरणों तक मुझे पहुंचाया है अब मुझे पूरी आशा है कि आपकी छाया माया में सुख पाकर रात्रि व्यतीत कर प्रातःकाल चली जाऊंगी ब्रह्मचारी गंगाराम जी बोले कि देवी जी ये उदासी, निरासी, वनवासी जनों का

आश्रम है यहां स्त्री के रहने की गुञ्जाइश कहां ? तुम यहाँ से शीघ्र चली जाओ और समीप के नगर में अपने रहने का बानक बनाओ। ये सुनकर लरझाती, मुरझाती, घबराती और बिलखती हुई सुन्दरी बोली, दयालु मैं अबला इस अन्धकार और घोर भयावनी रात्रि में कहो कहां जाऊं ? आप कृपा कीजिये और इस दासी को केवल आज की रात अपने आश्रम में विश्राम करने की आज्ञा दीजिये भगवन् ! क्षमा कीजिये शरण आई को इस तरह धक्का देकर निराश न कीजिये यदि आप ही मुझे भगा देंगे तो भला कहां शरण मिलेगी। सुन्दर स्त्री रूपधारी व्यास की इतनी प्रार्थना सुन कर महाराज जी पिघल गये और बोले कि अच्छा आओ चलो मैं तुम्हारे रहने के योग समीप कुटिया बतलाता हूं वहाँ तुम निर्भयता से आज की रात निवास कर प्रातःकाल अपने घर चले जाना। ऐसा कहकर आगे-आगे महात्मा जी चले, और पीछे-पीछे वो महिला, परन्तु महिला की मनोहर गति ने महात्मा की बुद्धि को अपने वश में कर लिया था। परन्तु फिर भी महात्मा ब्रह्मचारी जी ने अपने आप को बहुत कुछ समाला और जब कुछ दूर वाली कुटिया पर जा पहुंचे तब ब्रह्मचारी जी ने अपने मन की चंचलता को देखकर पहिले से ही पक्का प्रबन्ध

करना प्रारम्भ कर दिया और उस महिला से कहा कि सुभगे ! आज की रात तुम इस कुटिया में ही जाकर विश्राम करो और अन्दर से किवाड़ बन्द कर सो जाना और प्रातःकाल होते ही यहाँ से चली जाना। और हे सुभगे ! यदि कोई तुम्हें किवाड़ खोलने के लिये कहे तो किवाड़ न खोलना कारण कि इस घोर वन में एक बड़ा भयंकर ब्रह्मराक्षस रहता है। सम्भव है कि वो ऐसा जैसा रूप बनाकर तुम्हारे पास आकर किवाड़ खोलने को कहे और वो लाख उपद्रव करे परन्तु तुम मुँह से बोलना ही नहीं यदि तुम कुछ बोलोगी तो उसकी त्रास की फांसी में फंस कर या विश्वास की दल-दल में घुसकर किवाड़ खोलोगी तो वो निश्चय ही तुम्हें खा जायगा और हमारे शिर मुफ्त में पाप आयेगा। अच्छा तुम भीतर जाओ और द्वार के किवाड़ सावधानी से लगाओ, हम भी अपनी कुटिया में जाकर विश्राम करते हैं। इतना कहकर गंगाराम ब्रह्मचारी वहाँ से चल पड़े। अब ब्रह्मचारी गंगाराम से मनशाराम भी लड़ पड़े परन्तु ब्रह्मचारी जी ने बड़ी धीर गम्भीर वीरता के साथ अपने मन को विषय से मोड़ लिया और भगवान के भजन, सुमरण ध्यान में खूब जोड़ दिया पर जैसे-जैसे रात्रि जाने लगी वैसे-वैसे ही भंग तरंग के समान मन की

उमंग अंग-अंग में लहराने लगी और महाराज के ज्ञान ध्यान रूपी पत्तों को विषय रूप आंधी उठाने लगी इतने पर भी महाराज बराबर मन को विषय एवं चंचलता से हटाते रहे। परन्तु जल तो स्वभाव से ही नीचे को जाता है और अनेक उपाय करने पर कदाचित् ऊपर को आता भी है तो भी जरा चूकते ही पुनः नीचे का नीचे ही जाता है महाराज ने लाखों यत्न करके अपनी वृत्तियों को रोकना चाहा पर विषय वायु ने बराबर विरोध ही मचाया और अन्त में महाराज को ही हराया। अब तो ब्रह्मचारी जी ने अपनी कुटिया से उठकर उसी दामिनी की कामना में कलमलाते हुये पहुंचे और वहां जाकर महाराज ने कुटिया के द्वार को बार-बार बजाया और वचन भी मधुर स्वर में बोले कि देखो प्रिये हमें तुमसे कुछ एक परम आवश्यक गुप्त समाचार कहना है इसलिए तुम जल्दी किवाड़ खोलो। यह सुनकर स्त्री-भेषधारी महर्षि वेदव्यास मन ही मन मुस्कराये और प्रगट में कुछ भी उत्तर न दिया। ब्रह्मचारी जी का हृदय तो काम कटारी ने छिन्न-भिन्न कर डाला था। इसलिये पुनः तो बिना कामिनी के देखे एक-एक क्षण कोटि-कोटि कल्प के समान प्रतीत होने लगा। ब्रह्मचारी जी ने बार-बार किवाड़ हिलाये पर जब कुछ भी जवाब न

पाया तो अपने मन को इस कल्पना से समझाया कि संभव है सो रही होगी एवं थकावट के कारण बेहोशी आगई होगी, भला उसका क्या दोष है। आओ कुटिया के ऊपर चढ़कर छप्पर का फूस हटावें और सहज ही में नीचे उतर जावें एवं निद्रा मुद्रित सुख मण्डल पर शनै-शनै दृष्टि जमावें और आनन्द एवं प्रेम के सागर में गोते लगावें। अनन्तर विचारों के विवश होकर ब्रह्मचारी जी कुटिया के ऊपर चढ़ लगे छप्पर पर फूस हटाने। परन्तु वहां विचित्र ही रचना का नाटक देखने में आया कि जैसे ही ब्रह्मचारी जी धम से कुटिया में कूदे या गिरे सो ही महर्षि वेदव्यास की क्रूर चपेटिका (थप्पड़) इनके मुंह पर पड़ी। दूसरा थप्पड़ व्यासजी ने जमाया तो ब्रह्मचारी जी का होश ठिकाने आया और ज्योंही आंख खोलकर देखा तो वहाँ कहां इनके दिल-दरिया को मन्दराचल की तरह मथने वाली रूपवा हाव-भाव शाली स्त्री-रूपी काम कान्ता कहां—विचित्र ही रचना है यह सब अनुभव में आया। अस्तु ब्रह्मचारी जी त्राहिमाम्-त्राहिमाम् कह कर भगवान् व्यास के चरणों में रखते हुये बोले भगवन् आपने अपने योग शक्ति से खूब माया फैलाई, मिथ्या अहंकार वाली मेरी बुद्धि को दया के डण्डों से खूब जगाई और मेरी भूल प्रथम ही मुझे सिखा दी ताकि

मैं कभी भी उस भूल में भूलकर जड़मूल से न खोजाऊँ और इस अनमोल बेतोल मनुष्य देह को धूल में मिला कर नरक लगर की महा आपत्तियों की ज्वाला में गिर कर भस्म न हो जाऊं। धन्य हो ! आप धन्य हो !! आपको बार-बार प्रणाम है। भगवान् व्यासजी ने बरजोर स्वर में कहा वत्स तुम अपने अन्तःकरण में किसी प्रकार की ग्लानि मत करो देखो यह काम बड़ा प्रबल है इससे सदा बचते रहना।

बन्धुओ ! यदि आप वास्तव में इस भयंकर काम से तन और मन को अपने वश में करना चाहते हो तो उसका सीधा और सरल उपाय यही है कि आप अपने अपने गुरुदेव की उपासना करते हुये सात्विक पदार्थों का सेवन करें। अस्तु धर्मशास्त्रों में बताये हुये मार्ग पर चल लोक और परलोक में सुख के भागी बनने का प्रयत्न करें।

गरीबों की दुनियां

देज पुरुष की दुःखभरी इससे हो होशियार।
अन्त समय तुम देखना पड़ेगी यमकी मार॥

पुराने जमाने में भारतवर्ष का कोई राजा था। सुना है कि वह नित नये फूलों के बिस्तरपर सोता था। राजा ने अपने यहाँ नाना प्रकार के फूलों के बाग लगा रक्खे

थे। इतना ही नहीं बल्कि जामका हजारों गमलों में भी भांति-भांति के पुष्प लगे हुये थे। राजा के बागीचों में से रोजाना हजारों प्रकार के फूल मालीगण उतार कर राजा की सेज के लिये महलों में पहुंचाया करते थे। उस राजा के एक खास बांदी थी। जिसका काम यह था कि वह राजा के वास्ते रोज उन्हीं फूलों की सेज बिछाया करती थी। एक दिन उस बांदी के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि आज तो मैं भी इन फूलों की सेज पर सोकर देखूं कि कैसा आनन्द आता है बांदी के दिल में गुदगुदी सी पैदा हुई। और वह झट से फूलों की सेज पर लेट गई। पलङ्ग पर बिछी फूलों की सेज पर लेटते ही नींद आ गई। फूलों की भीनी-भीनी सुगन्धि ने बांदी के दिल पर वह प्रभाव डाला कि बांदी अपने आपे को ही भूल गई। आधी रात्रि के समय जब राजा महलों में आया तब उसने अपनी फूलों की सेज पर बांदी को सोता देख क्रोध में उसका मुख लाल पड़ गया। और बांदी को चोटी से पकड़ कर पलङ्ग के नीचे गिरा दिया और बांदी को हुकम दिया कि मेरा हन्टर लाओ। बांदी ने झटपट हन्टर लाकर राजा को दे दिया। राजा ने हन्टर घुमाकर जोर-जोर से बांदी पर मारने शुरू किये।

हन्टर की मार से बांदी का बदन घायल हो गया और खून बहने लगा, परन्तु बांदी की आंखों से ना तो एक आंसू ही निकला और ना वह चिल्लाई। बल्कि उस पर ज्यूं ज्यूं हन्टर पड़ते थे त्यूं त्यूं बांदी ऐसे हंसती थी जैसे कि कोई सौदाई या दीवाना हस रहा हो। बांदी को इस तरह हंसते देख राजा ने अपना हाथ रोका और पूछा कि तू इतनी मार खाकर भी हंसती है इसका क्या कारण है। अगर तूने हंसने का ठीक-ठीक कारण बता दिया तो मैं तुझे क्षमा कर प्राणदान दे दूंगा। यदि तूने हन्टर खाकर अपने हंसने का ठीक कारण ना बताया तो आज मेरे हाथों से तेरी मौत हो जावेगी। राजा के ये शब्द सुन बांदी ने हाथ जोड़कर कहा कि हे अन्नदाता बेशक मुझसे आज बड़ी भारी भूल हो गई है। यदि सत्य पूछो तो राजन् मेरी भूल नहीं है बल्कि भूल तो इन फूलों की सेज की ही है कि इस सेज पर मैं जरासी देर के लिये सो गई जरासी देर के सोने में ही इस सेज ने मेरी यह दशा करदी कि मेरी चमड़ी उधड़ कर रह गई। जो इस सेज पर रोज सोता है ना मालूम उसकी क्या दशा होगी। राजा बांदी की यह बात सुन चुप हो गया। बांदी ने फिर कहा राजन् मैं तो आज चन्द हन्टर खाकर बहुत सस्ती छूट रही हूं।

परन्तु मैं बार-बार यह सोच रही हूं कि नित्य प्रति सेज पर सोने वाले की न मालूम क्या दशा होगी। राजा को उसी दम ज्ञान हुआ और वह बांदी से क्षमा मांग सदा के लिये फूलों की सेज पर ना सोने की प्रतिज्ञा कर भगवत भक्ति में लग गया।

बन्धुओ! यही हालत आज उन सरमाये. दारों की है जो गरीबों पर आये दिन अपने धनरूपी हन्टर से खाल उधेड़ रहे हैं। समय आवेगा कि एक दिन उन्हें भी कोई ज्ञान देने वाली बांदी मिल जावेगी। जिससे कि वे लोग ज्ञान प्राप्त कर निर्धनों की तन मन धन से सहायता कर यश के भागी बनेंगे।

इन्द्रियों पर विजय

विजय इन्द्रियों पर करे वो जग में बलवान।
देव, मनुज और ऋषिगण कर उसीका मान॥

एक समय कुन्ती पुत्र अर्जुन धनुर्विद्या सीखने की इच्छा से इन्द्रपुरी में श्री शुक्राचार्य के पास गये और उन्हें प्रणाम करने के बाद हाथ जोड़ कर कहा कि महाराज मैं धनुष विद्या सीखने की इच्छा से आपके पास आया हूं। शुक्राचार्य ने कहा वत्स! मैं तुमको धनुष विद्या सिखाऊँगा। अभी कुछ विश्राम करो। यह कहकर

शुक्राचार्य ने अर्जुन को एक कुटी विश्राम के लिये बता दी। अर्जुन ने उस कुटी में विश्राम किया। एक दिन सन्ध्या के समय अर्जुन अपनी कुटिया के किवाड़ लगा अन्दर बैठा हुआ था। इधर शुक्राचार्य महाराजा इन्द्र की प्रधान अप्सरा उर्वशी के पास गये और उससे बोले कि सुन्दरी इन्द्रपुरी में कुन्ती पुत्र अर्जुन मेरे से धनुर्विद्या सीखने के लिये आया है। सो तुम उस अर्जुन के पास जाकर उसकी परीक्षा लो कि वह अपनी इन्द्रियों पर या मन पर कहां तक काबू रखता है। यह सुनकर उर्वशी जो आज्ञा कह कर चुप हो गई, शुक्राचार्य वहां से चले गये। थोड़ी देर बाद उर्वशी ने अपना खूब शृङ्गार किया और हाव भाव के साथ अर्जुन की कुटिया की ओर चल पड़ी। फिर वहां जाकर उर्वशी ने दरवाजा खटखटाते हुये कहा 'किवाड़ खोलो, किवाड़ खोलो' मैं तुम्हारे दर्शनों के लिये बड़ी दूर से आई हूं। अर्जुन ने जब यह करुणाभरी पुकार सुनी तब दरवाजा खोलकर बाहर आया तो देखा कि एक सुन्दरी खड़ी है। अर्जुन ने कहा देवी! क्या आज्ञा है? क्या कारण है जो तुम इस समय रात्रि में मेरे पास आई हो, उर्वशी ने कहा प्यारे अर्जुन! मै इस समय तुम्हारे पास यूं आई हूं कि तुम मुझसे गन्धर्व विवाह करलो। अर्जुन ने कहा

देवी मेरा तुम्हारा जब गन्धर्व विवाह हो जायगा तब तुम्हें क्या लाभ होगा ? उर्वशी ने कहा कि हे अर्जुन मेरा तुम्हारा गन्धर्व विवाह हो जाने से फल स्वरूप एक रूपवान, गुणवान, बलवान पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी। जिससे दुनियां में हमारी और तुम्हारी अमर कीर्ति फैल जायेगी। अर्जुन उसकी यह बात सुनकर बोला—बस ? इतनी सी बात के लिये तुम मुझसे गन्धर्व विवाह रचा रही हो। तुम्हें तो पुत्र ही चाहियेना, वह बोली हां।

अर्जुन ने कहा तो फिर नाहक नौ मांस तक पेट में बोझा टांगे-टांगे फिरोगी गर्भ का कष्ट होगा फिर भी पता नहीं कि लड़का या लड़की हो यदि तुम बलवान और तेजस्वी पुत्र ही चाहती हो तो मैं तुमको एक ऐसा उपाय बताता हूं कि (हर्रा लगे ना फिटकरी रंग भी चोखा आवे) जिससे तुम्हें पुत्र मिल जाय, वह बोली बताओ ? अर्जुन ने कहा—

सारे झगड़े छोड़ आ मेरी निगह का बन जा।
मैं तेरा बेटा बनूं तू मेरी मा बन जा॥

मैं अब तक समझता था कि मेरी माता कुन्ती ही संसार में बड़ी रूपवान है परन्तु आज तुम्हारे रूप को देखकर मैं अपनी माता कुन्ती को भूल रहा हूं। अस्तु मैं परमात्मा से यही प्रार्थना करूंगा कि हे भगवान यदि

पुनः मेरा मनुष्य जन्म हो तो तुम्हारे ही उदर से हो। अर्जुन के ये पवित्र विचार सुन उर्वशी लज्जित हो अर्जुन को श्राप दे वापिस शुक्राचार्य के पास लौट आई।

पाठक वृन्द उपरोक्त आख्यान से समझलें कि इस धर्म-प्राण भारत में अर्जुन जैसे भी क्षत्री पुत्र हो गये हैं जिन्होंने अपनी इन्द्रियों को विषय वासना से सर्वथा अलग रख भारत के मुख मण्डल को दूसरे लोक में जाकर भी उज्ज्वल रक्खा। यदि आज, इस युग का अर्जुन होता तो वह उर्वशी जैसी सुन्दरी से अवश्य ही विवाह रच अपनी काम पूर्ति कर लेता। अस्तु भारत के नवयुवकों को अर्जुन के इस आदर्श को अपना कर अपनी चंचल इन्द्रियों का दमन करेंगे।

'असल की नकल करने से असल का अभाव'

रावण ने जब राम का, रूप लिया था धार।
माता के तुल्य लंक में देखी सारी नार॥

रावण और उसके सङ्गी साथियों ने कुम्भकर्ण के महल में जा नाना प्रयत्न कर कुम्भकर्ण को जगाया। कुम्भकर्ण के जगते ही रावण ने कहा भाई साहब ऐसा सोना भी किस काम का जिससे सोने की लंका खाक हो रही है इतना ही नहीं तुम्हारे सोने से बहिन सूर्पनखा के नाक कान कट गये और पुत्र मेघनाथ तक इस संसार

से कूंच कर गया रावण की यह घबड़ाहट देख और बात सुन कुम्भकर्ण ने कहा भाई साहब ऐसी कौन सी आपत्ति आ गई जिससे कि शूर्पनखां बहिन के नाक-कान कट गये और मेघनाथ का मरण हो गया । रावण ने पंचवटी से लेकर आज तक की सारी कथा सुनाते हुये कहा कि सीता मेरे कब्जे में नहीं आती है । कुम्भकर्ण ने कहा स्त्रियां तो जेवर की भूकी होती हैं, तुमने सीता को जेवर का लालच क्यों नहीं दिया, रावण ने कहा मैंने तो जेवर क्या सीता के सामने सोने की लंका तक रख दी, परन्तु उसने लंका की तरफ देखना तो दूर किनारे थूका तक नहीं । जब जब मैं उसके पास गया तब तब वह अपने मुख से राम राम ही कहती थी । कुम्भकर्ण ने कहा भाई साहब तुम तो मायावी हो अपनी माया से राम की सूरत बनाकर क्यों नहीं सीता के सामने गये । रावण बोला सुनो भाई मैं एक दिन राम की सूरत बनाकर सीता के सामने गया तो उस समय मेरी जो दशा थी वह वर्णन से बाहर है अर्थात् जब मैंने राम की सूरत बनाई तब मन्दोदरी को छोड़कर मयसीता के लंका में जितनी भी महिलायें थीं वह सबकी सब मां, बहिन, बेटियां मुझे दिखाई देने लगी मैंने उसी दम राम के रूप को त्याग दिया ।

बन्धुओ !

देखा राम की नकल कर उन जैसी सूरत बनाते ही रावण ने लंका में महिलाओं को किस रूप में देखा था आपने ऊपर पढ़ ही लिया है अस्तु असल असल ही है, और नकल नकल ही है। भारतियों को भी दूसरे देशवालों की नकल करने से सिवाय हानि के लाभ नहीं हो सकता है।

समझ का फेर

फेर समझ का है बुरा इसमें जो पड़ जाय।
मुरली मनोहर नाम को अपना पती बताय ॥

एक आठ वर्ष की कन्या नित्य प्रति भगवान् की पूजा सेवा किया करती थी और पूजा के बाद दोनों हाथ जोड़कर भगवान् की प्रतिमा के सामने इस प्रकार जोर-जोर से कहती थी—

काली मर्दन, कंस निकन्दन गिरवरधारी,
"मुरली मनोहर त्वं शरणम्"

उस कन्या की ये प्रार्थना तो ऐसी थी कि बिना इस छन्द के पढ़े वह जल तक न पीती थी। जब उस कन्या की १५-१६ वर्ष की आयु हुई तब उसके माता-पिता ने योग्य वर से उसका विवाह बड़ी ही धूमधाम से

कर दिया। सुसराल में जाकर भी उस लड़की ने अपना पूजा पाठ नहीं छोड़ा। उस लड़की को एक दिन यह मालूम हुआ कि मेरे पतिदेव का नाम "मुरली मनोहर" है तब उस कन्या ने अपने भोलेपन में आ या अपनी समझ के फेर में फंस विचारा कि पतिदेव का नाम बिना कोई संकट पड़े स्त्री को नहीं लेना चाहिये वह सोचने लगी कि मेरे काली मर्दनवाले प्रार्थना के छन्द में मेरे पतिदेव का नाम आता है इसलिये उसने पूजा पाठ तो नित्य जारी रखा परन्तु प्रार्थना के छन्द को बोलना छोड़ दिया। उस भोली को ये खबर न थी कि जिस छन्द में मुरली मनोहर नाम आता है उससे मुराद मेरे पति के नाम से नहीं बल्कि परमेश्वर के नाम से है। अस्तु कुछ काल बाद उस लड़की ने एक कन्या को जन्म दिया और उसने अपनी उस कन्या का नाम "चम्पो" रख लिया अब तो पूजा पाठ के बाद वह लड़की इस तरह प्रार्थना करने लगी—

काली मर्दन कंस निकन्दन गिरवरधारी,
चम्पो के चाचा त्वं शरणम्

बन्धुओ! प्रायः देखा जाता है क्या स्त्री क्या पुरुष कभी-कभी समझ के फेर में आ वास्तविक बात को भूलकर अनधिकार चेष्टा कर बैठते हैं। भोलापन भी

कभी कभी हानिकारक सिद्ध हो जाता है जिससे मानव समाज को कभी न कभी अवश्य नीचा देखना पड़ता है। नर नारियों को चाहिये कि वो खूब सोच समझकर जिस कार्य को भी करेंगे वह फलीभूत होगा।

नकली भक्ति से ज्ञान

जितना प्रेम एक नार से उतना हर से प्यार।
फिर तो तेरा होयगा भव से बेड़ा पार॥

एक राजा के महल में एक महतरानी रोजाना सफाई के लिए जाया करती थी। उस महतरानी की झाड़ू बुहारू देख राजा रानी सभी प्रसन्न थे। राजा की ड्योढ़ी में वह महतरानी बे खटके चली जाया करती थी। एक दिन वह महतरानी बीमार पड़ गई और अपने पती (महतर) से कहा कि आज आप राजमहल की ड्योढ़ी में और अन्दर चौक में जाकर सफाई कर आओ और देखना झाड़ू बुहारू अच्छी तरह से लगाना, मेहनत से काम करना जिससे कि राज परिवार खुश हो जाय। महतर जरा रंगीन स्वभाव का था वह अपनी महतरानी की बात सुन झाड़ू टोकरा उठा राज महल की तरफ चल दिया। और जब राज ड्योढ़ी की सफाई कर चुका तब वह महल के चौक में झाड़ू देने लगा

इतने में उस मेहतर ने ऊपर कमरे में खड़ी हुई रूपवान राजकन्या को देखा राजकन्या पर उसकी दृष्टि पड़ते ही वह दीवाना होगया और झट अपने घर आ झाड़ू टोकरा फेंक चरपाई पर लेट जोर-जोर से रोने लगा उसकी ये दशा देखकर महतरानी ने कहा कि तुम्हारी कैसी तबियत है और तुम क्यों रो रहे हो। महतर औरत की बात सुनकर साफ-साफ कहने लगा कि मेरी तबियत राजकन्या पर आगई है मैने महल में झाड़ू लगाते-लगाते जिस समय राजकन्या को देखा है तभी से मेरे दिल पर एक चोट लग गई है। अब तो राजकन्या से या तो मेरी शादी होगी या मैं अपने प्राण गवां दूंगा महतर की यह बात सुन कर महतरानी के पांव के नीचे से मिट्टी निकल गई और उस पर सन्नाटा सा छा गया। थोड़ी देर चुपचाप रहने के पश्चात् वो बोली अरे मुँह बन्द कर तू क्या कहता है कहीं तेरी मौत तो निकट नहीं आगई कहां राज कन्या और कहां तुम महतरानी ने बहुत समझाया परन्तु मेहतर ने एक न मानी और उसने कहा कि चाहे अब मेरी जान जाय या रहे मेरा तो दिल राजकन्या पर आगया है। जब तक मेरा उसका प्रेम न होगा तब तक मैं अन्नजल का त्यागन करता हूं और यूं ही तड़फ २ कर प्राण गवां

दूंगा । भंगन समझदार थी वह एकदम अपने घर से चलकर सीधी राजमहल में पहुंची और बांदी द्वारा राज-कन्या को इत्तला कराई कि तुम्हारी भंगन तुमसे एक जरूरी काम के लिये मिलने आई है । बांदी ने जाकर राजकन्या से महतरानी का समाचार कह दिया । राज कन्या सुनकर कमरे से बाहर आ गई और महतरानी से पूछा क्या बात है तू इतनी क्यों घबड़ा रही है और तेरे पर ऐसा कौन संकट है जिससे तू इस समय मेरे पास आई है । महतरानी ने हाथ जोड़ कर अपने पति की तमाम विथा सुना दी और कहा कि वह कहता है कि जब तक राजकन्या से मेरा प्रेम न होगा तब तक मैं अन्न-जल नहीं खाने और पीने का चाहे मेरी जान क्यों ना चली जावे । राजकन्या रूपवान होने के साथ ज्ञान-वान भी थी थोड़ी देर उसने विचार किया और वह महतरानी से बोली अच्छा तू जा और अपने महतर से कहदे कि वह ४० दिन तक घरबार छोड़ साधु का भेष बना समाधि लगा कर यदि साधना करे तो फिर मैं बचन देती हूं कि उससे जरूर प्रेम करूंगी और उससे विवाह भी रचा लूंगी । महतरानी राजकन्या के ऐसे बचन सुन झट पट अपने घर आई और महतर से जो राजकन्या ने कहा था सब कह सुनाया ।

महतर इतना सुनते ही घरबार छोड़ नगर से दो मील की दूरी पर जा एक बागीचे में तन पर भस्म रमा समाधि लगाकर बैठ गया। जब उसको समाधि लगाये २०–२५ दिन हो गये तब उस नकली साधु की प्रसिद्धि नगर में फैल गई और शनैः शनैः नगर के नर-नारियों की उसके समीप अपार भीड़ होने लगी—एक सिद्ध महात्मा जी राज के बगीचे में आये हुये हैं यह चर्चा हर एक नरनारी की जबान पर होने लगी इतना ही नहीं अब तो नकली महात्मा के पास पुजापे का भी ढेर आने लगा इसी बीच में ४० दिन पूरे होने को आये और महात्माजी की चर्चा राजा के कानों तक पहुंच गई तब तो राजा के मन में भी आया कि मैं भी सिद्ध महात्मा के दर्शनों को चलूं निदान राजा ने अपनी रानी और राजकन्या एवं अपने समस्त परिवार को संग ले सवारी में बैठ महात्मा के दर्शनों के लिये कूच कर दिया। राजा और उसके समस्त परिवार ने बाग में जाकर क्या देखा कि हजारों नरनारियों ने उस महात्माजी को चारों ओर से घेर रक्खा है। महात्माजी भी अपने लम्बे २ बालों की जटा बनाये आंख बन्द किये समाधि लगाये बैठे हैं। तब तो राजा झट सवारी से उतर महात्माजी के चरणों में परिवार सहित जा विराजमान हुये और हाथ जोड़कर

दण्डवत किया। उसके पश्चात् राजकन्या महात्मा जी के पास पहुंची और हाथ जोड़कर बोली कि हे मेरे आशिक मैं आगई हूं अब तो आँखें खोलो देखो मैं वही राजकन्या हूं जिस पर तुम मर रहे थे। नकली महात्मा के कानों में जब यह शब्द गये तब उसने अपने नेत्र खोले तो क्या देखा कि नगरी का राजा रानी राजकन्या और समस्त राज-परिवार एवं नगर के नर और नारी हजारों की संख्या में हाथ जोड़े दर्शनों के लिये बैठे हुये हैं और उसने यह भी देखा कि जेवर, कपड़े, वर्तन, फलफूल आदि का ढेर भी उसके पास रक्खा है, यह सारा वैभव देख उस नकली साधु ने अपनी आंखें बन्द करली और उसने अपने मन में यह विचारा कि एक औरत के लिये मैंने नकली साधु बन ४० दिन तक समाधि लगाई उस का परिणाम यह हुआ कि आज मेरे सामने संसार की समस्त सुख देने वाली वस्तुयें उपस्थित हैं और नगर का राजा भी हाथ बाँधे बैठा है। उसने सोचा जब एक औरत के प्रेम में साधु बनने से यह दृश्य है यदि वास्तव में यही योगसाधना और भक्ति उस पारब्रह्म परमात्मा के लिये अन्तरात्मा से करता तो आज मेरा मन-कमल खिला होता और परमात्मा का भी साक्षात्कार हो जाता। बस उसने राजकन्या को अपना गुरु बना वहां से उठ बन

में जा ईश्वर प्राप्ति के लिये घोर तपस्या करने लगा।

बन्धुओ! नकली और झूठे आडम्बर करने से जब सासांरिक पुरुषों पर भी उस झूठी भक्ति और झूठे भेष का प्रभाव पड़ता है तो क्या उस परमात्मा की यदि हम वास्तविक आराधना करें तो हमारा बेड़ा पार नहीं हो सकता? हो सकता है यदि आप लोग थोड़ा बहुत समय भी भगवत भक्ति में व्यतीत करें। मनुष्य को चाहिये जैसा उसका दुनियां को मोहित करने वाला भेष हो वैसा ही अन्तरात्मा से भी हो। वह भेष किस काम का जिसको देखकर तो तुम पर मोहित हो जावें परन्तु हृदय में दुनियादारी एवं परधन हरने की वासनायें भरी पड़ी हों। अस्तु धर्मशील पुरुषों को सर्वदा सत्यमार्ग पर चल परमात्मा तक पहुंचने का प्रयत्न करना चाहिये।
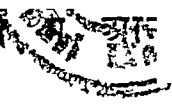
नवीन समाज की स्थापना

एक भरता को छोड़कर दूजे से सम्भोग।
व्यभिचारी व्यभिचार को कहते वैदिक नियोग॥

किसी समय कोई एक अर्द्धनास्तिक पुरुष ने अपनी प्रतिष्ठा के लिए एक नवीन समाज की स्थापना की और स्वयं उसका बानी बना। बहुत दिनों तक अपने थोथे पन्थ का इधर उधर प्रचार करने के बाद उसने एक

थोथे पोथे की रचना की कि जिसके चौथे समुल्लास में लिखा कि विवाहिता स्त्री जो विवाहित पति धर्म के अर्थ परदेश गया हो तो आठ वर्ष, विद्या और कीर्ति के लिए गया हो तो छः और धनादि कामना के लिए गया हो तो तीन वर्ष तक बाट देखने के पश्चात् नियोग करके सन्तान उत्पत्ति करले, जब विवाहित पति आवे तब नियुक्त पति छूट जावे और वह सन्तान विवाहित पुरुष की ही माने जावे। एक नगर में एक ब्राह्मण और उसकी धर्मपत्नी दोनों रहते थे ब्राह्मण की आयु ३० वर्ष और उसकी पत्नी की आयू २० वर्ष की थी ब्राह्मण देव एक सरकारी दफ्तर में मुलाजिमत करते थे परन्तु भाग्य-वश उसका घर अभी तक सन्तान रहित था। उसी नगर में ऊपर लिखी समाज की भी स्थापना हो चुकी थी और इतवार के इतवार एक मकान में उस समाज के सदस्य एकत्र हो कुछ किया करते थे। कुछ दिनों के फेर में आ वो ब्राह्मण भी उस पार्टी में आने जाने लगा और चार आने महावर देते हुए वहाँ का सदस्य बन गया। कुछ दिन पश्चात् उस ब्राह्मण ने उस समाज के बानी का लिखा थोथा पोथा भी खरीद अपने घर ला रखा और कभी-कभी उसको पढ़ भी लिया करता था। इतना ही नहीं अब तो उस धर्मपाल ब्राह्मण के

साथ उसकी पत्नी भी कभी-कभी उस पार्टी में आने जाने लगी।

संयोगवश धर्मपाल की बदली अपने नगर से रंगून के लिए होगई जब वो घर से चलने लगा तब वह अपनी स्त्री से बोला कि इतनी दूर एक दम तुम्हें संग ले चलना उचित नहीं। तुम यहाँ आनन्दपूर्वक रहो और मैं तुम्हारे खर्च आदि के लिए प्रत्येक महीने २० रुपया भेज दिया करूंगा। सब बातें समझा उसका पति रंगून चला गया। और वह वहाँ से प्रत्येक मास २०) रुपया भेजता रहा।

इधर उस नवीन समाज के कुछ कार्यकर्ता शनैः शनैः धर्मपाल के घर उसकी स्त्री के पास आने जाने लगे। एक दिन मंत्री जी ने उसकी औरत से धर्मचर्चा करते हुये कहा कि देवी जी तुम्हारे कोई औलाद नहीं हुई। वह बोली, नहीं, मंत्री जी मेरे ऐसे भाग्य कहाँ कि मैं सन्तान का सुख देखूं। तब तो मंत्रीजी ने झट कहा कि हम तुम्हें एक सरल और सुगम उपाय बताते हैं उस उपाय के उपयोग से तुम्हारे अवश्य एक नहीं अनेक सन्तान उत्पन्न होंगी। वह बोली मंत्री जी आपका बड़ा उपकार होगा। बताइगे वह कौनसा उपाय है मैं उसको अवश्य करूंगी। मंत्रीजी ने अपने झोले में से पञ्चम

वेद थोथा पोथा निकाला और उसका चौथा समुल्लास खोल रख दिया और कहा, देखो ये वेद की आज्ञा है इसमें स्पष्ट लिखा है कि जब पुरुष धन कमाने की इच्छा से परदेश जावे तब उसकी स्त्री बाद में पर पुरुष से नियोग (सहवास) कर सन्तान उत्पत्ति कर ले। धर्मपाल की स्त्री मंत्री जी के मुख से ये शब्द सुन और उस पोथे में इस नियोग कर्म को पढ़ थरथराने और कांपने लगी। तब तो मंत्री महोदय ने कहा, देवी जी इसमें घबड़ाने की कोई बात नहीं है। वह बोली महाशयजी ये आप क्या कह रहे हैं? पतिव्रता स्त्री के लिए यह कैसे संभव हो सकता है कि वह अपने पुरुष को छोड़ अन्य पुरुष से सहवास करे। मंत्री जी ने कहा देवी ये कोई मेरा या इस पोथे के रचयिता का तो मत है ही नहीं ये तो वेद भगवान् की पवित्र आज्ञा है। तुम्हारे पति हमारी संस्था के अनन्य भक्त एवं सदस्य हैं यदि आज वह यहां उपस्थित होते तो इस वेद पोषक सिद्धान्त के सामने नत मस्तक हो जाते। इसलिये देवी जी संकोच छोड़ आप शीघ्रातिशीघ्र इस सुगम उपाय का कर संतान से परिपूर्ण अपना घर देखिये। वह बोली अच्छा मंत्री जी मुझे स्वीकार है। मंत्री जी बोले मैं प्रबन्ध किये देता हूं यह कह मंत्री जी ने अपने एक हट्टे-कट्टे मोटे

ताजे मित्र को बुला धर्मपाल की स्त्री के सामने उपस्थित कर दिया और कहा कि देवी जी आप इनसे नियोग कर लें। भगवान् आपकी मनोकामना पूर्ण करें। धर्मपाल जी रंगून से बराबर खर्च भेज रहे हैं और इधर उनकी स्त्री ने भी नियोग के कार्य को प्रारम्भ कर दिया १२ वर्ष बीत गये धर्मपाल रंगून से घर नहीं आये घर पर स्त्री के नियोग से इतने समय में तीन बच्चे पैदा हो गये। और चौथे बालक का गर्भ भी रह गया। बाद १२ वर्ष के धर्मपाल रंगून से अपने घर आये और दरवाजे पर खड़े हो लगे अपनी स्त्री को आवाज देने। पति की आवाज पहिचान दरवाजा खोल एक बच्चे को सँग ले बाहर आई और पति का देखकर प्रसन्न हुई। पति ने अपनी स्त्री के संग जब बालक देखा तो बोला—

'यह कनकऊआ कैं का'

अर्थात् यह लड़का किसका है ? इसके उत्तर में स्त्री ने जवाब दिया—

ओ३म् दुहाई तें का

मुझे ओ३म् की कसम है मैं सत्य कहती हूं कि ये लड़का तेरा है।

ब्राह्मण ने देखा कि मैं तो १२ वर्ष में आज आया हूँ और यह लड़का आठ नौ वर्ष का दीखता है यह क्या

बात है। धर्मपाल ने अपने मस्तक पर हाथ मारते हुये कहा— 'धन्य हमारे कर्मा'

हमारे कर्म को धन्य है हम रंगून में ही बने रहे और यहां लड़का पैदा हो ही गया इसको सुनकर औरत बोली कि— 'दो खेलत हैं घरमा'

यह एक ही लड़का नहीं है दो लड़के और घर में खेल रहे हैं। इसको सुनकर ब्राह्मण बोला—

धन्य हमारे भागा

इसको सुन औरत फिर बोली कि—

"मैं फागुन की ग्याभा"

मैं फाल्गुण से फिर गर्भवती हूं। अपनी औरत की यह दशा देख और उस संस्था के पोथे को पढ़ बहुत ही पश्चाताप किया। और सदा के लिये उसने उस संस्था को तिलाञ्जलि दे दी।

बन्धुओ! इस दृष्टान्त का भावार्थ यह है कि प्रायः आजकल के कुछ नासमझ मनुष्य अपनी काम पिपासा को बुझाने के लिये वेद आदि धर्म ग्रन्थों की आड़ लेते हुए भारतवर्ष में व्यभिचार को उन्नति के शिखर पर ले जाने का प्रयत्न कर रहे हैं। हालांकि भगवान् मनु ने अपनी मनुस्मृति में साफ लिखा है कि—

जब पति परदेश में धन कमाने की इच्छा से जावे

और तीन वर्ष तक लौटकर न आवे और उसकी स्त्री से काम वासना के बिना न रहा जाय तब वह स्त्री जहाँ उसका विवाहित पुरुष है उसके पास चली जावे। अब आप तनक विचार करें कि मनु की कितनी अच्छी और कितनी सच्ची आज्ञा है। अस्तु समस्त नर नारियों को मनु के इस महान् आदर्श पर चल अपने गृहस्थ धर्म की रक्षा करनी चाहिये।

"तुम से लेना हराम है"

स्वतन्त्र देश का भिखमंगा कहता मुझे हराम।
ओ क्या देगा और को जो है स्वयं गुलाम॥

सुना है कि एक समय भारतवर्ष से एक भारतीय नवयुवक मिश्र देश में गया और वहाँ उसने एक होटल में रहने का प्रबन्ध किया। एक दिन वह मिश्र के बाजार में सैर करता हुआ फिर रहा था कि उसकी दृष्टि एक फकीर पर पड़ी। उसने देखा कि वह फकीर बिल्कुल सूख कर कांटा होगया है और उसके तन पर मैले कुचैले फटे पुराने नाम मात्र को कपड़े है वह फकीर 'खुदा के नाम पर मुझे कुछ दो' यह सदा लगा रहा है। फकीर के इस दृश्य को देख उस नवयुवक ने अपनी जेब से पांच रुपये निकाल कर उसको दे दिये। फकीर ने पांच

रुपये ले लिये और बहुत ही खुश हुआ परन्तु वह फकीर कुछ झिझका और उस नौजवान से बोला भाई तुम किस मुल्क के रहने वाले हो ? यह सुन कर नौजवान अपने मस्तक पर बल डालते हुए बोला मेरा वतन हिन्दुस्तान है और मैं हिन्दुस्तानी हूं। नौजवान के ये शब्द सुनते ही फकीर ने उसके पाँचों रुपये फेर दिये, नौजवान ने कहा बाबा यह रुपये वापिस क्यों कर रहे हो ? फकीर ने कहा बस चुप रहिये वह मुझे या किसी और को क्या दे सकता है जो गुलाम हो, तुम गुलाम मुल्क के गुलाम हो और मुझे गुलाम से कुछ लेना हराम है। नौजवान मिश्र देश के एक फकीर की यह बात सुनकर दंग रह गया और उसने आँसू आंखों से बहाते हुए कहा बाबा सच कहते हो।

'आधीन होकर बुरा है जीना है जीना अच्छा स्वतन्त्र होकर'

बन्धुओ ! इसमें सन्देह नहीं पराधीन सपने सुख नाहीं। सत्य बात है दासता का बन्धन भी बुरा बन्धन है। आओ हम सब भारतीय साम्प्रदायिक विवादों को छोड़ एक झण्डे के नीचे आ सदा के लिये दासता के बन्धन से मुक्त होने का प्रयत्न करें विशेष लिखना उचित नहीं।

आत्मारूपी मिश्री

मनुष्य देह में भर रही, मिश्री आतम रूप।
विषय वासना नमक ने, डाल दिया अधकूप॥

एक चीटी नमक के पहाड़ पर रहती थी और दूसरी चींटी मिश्री के पहाड़ पर रहती थी एक दिन वह नमक के पहाड़ वाली चींटी मिश्री के पर्वत वाली चीटी के पास गई और एक दूसरे से परस्पर राम २ श्याम २ हुई बात करते २ नमकीले पर्वत पर रहने वाली चींटी ने कहा—सखी तुम्हारा हृदय बड़ा प्रसन्न दीख रहा है और तुम्हारा शरीर भी खूब तगड़ा है ऐसी कौन सी वस्तु खाने को मिलती है जिसके खाने से तुम प्रेम की बन्शी बजा रही हो उसने कहा बहिन मै मिश्री के पर्वत पर रहती हूं और जब मन में आवे तब जी भर कर मिश्री को खा लेती हूँ मिश्री के खाने से मेरा मुख सदा प्रसन्न रहता है और इसी के खाने से मेरे पास कोई रोग भी नहीं फटकता। अब तो नमक वाली चींटी के दिल में मिश्री खाने की उमंग उठी वह झट से बोली बहिन हमको भी मिश्री के पर्वत को बता मैं भी वहाँ जाकर तुम्हारी तरह मिश्री खाऊँगी क्योंकि मैने आज तक मिश्री खाई नहीं है तेरी मिहरबानी से मुझे भी आज मिश्री खाने का शुभ अवसर मिल जायेगा। मिश्री वाली चींटी ने कहा—चलो मैं लिये

चलती हूँ इसमें मिहरवानी की क्या बात है जितना जी चाहे उतनी मिश्री खालो कोई रोकने वाला तो है ही नहीं तुम्हारा ही तो मिश्री का पर्वत है इतना कह नमक वाली चींटी को वह अपने साथ लेकर चली और मिश्री के पर्वत पर चढ़ कर नमक वाली चींटी को छोड़ दिया और बोली लो बहिन जितनी मन भावे उतनी मिश्री खालो इतना सुन नमक वाली चींटी मिश्री के पर्वत पर घूमघाम कर मिश्री वाली चींटी के पास आकर बोली बहिन ! ये तो नमक का पर्वत है इसमें मिश्री का तो कहीं नाम तक नहीं है। तब तो मिश्री वाली चींटी ने विचार किया कि क्या कारण है जो मिश्री के पहाड़ पै घूमने पर भी इस नमक वाली चींटी को मिश्री की प्राप्ति नहीं हुई। मिश्री खाने वाली चींटी चतुर औरबुद्धिमान थी उसने फट नमक वाली चींटी के तरफ देखा तो क्या देखा कि उसके मुंह में एक छोटी सी नमक की डली पड़ी है उसने नमक की डली मुख में पड़ी वाली चींटी से कहा बहिन तेरे मुख में तो एक नमक की डली पड़ी है जब तक तू इस नमक की डली का त्याग नहीं करेगी तब तक तुझको मिश्री की प्राप्ति नहीं होगी। उसने चट से अपने मुख में से नमक की डली को निकाल कर फेंक दिया और जब वह मिश्री के पर्वत पर गई तब उसे मिश्री के पिघलने में कौन देरी

थी जाते ही उसको मनमानी मिश्री खाने के लिये प्राप्त हो गई।

बन्धुओ ! हमारे कहने का तात्पर्य अथवा इस दृष्टांत का भावार्थ यह है कि अन्तःकरण रूपी मिश्री का पर्वत है और उसके अन्दर आत्मारूपी मिश्री भरी पड़ी है। विषय वासना रूपी नमक की डली को तुम मुख में रख कर मिश्री के पहाड़ पर फिरते हो इसीसे तुमको यह आत्मानन्द रूपी मिश्री की प्राप्ति नहीं होती है यदि तुम भी नमक वाली चींटी की तरह अपने मुंह से विषय वासना रूपी नमक की डली को फेंक मिश्री के पर्वत पर फिरोगे तब तुम्हें अवश्य आत्मानन्द रूपी मिश्री मिल जावेगी इसमें सन्देह नहीं। आत्मानन्द प्राप्ति हो जाने के पश्चात् तुम्हें मोक्षपद की भी प्राप्ति हो जावेगी हमारा यह कथन नहीं है कि दुनियाँ या हमारे बालबच्चे स्त्री माता बहिन आदि सब नाशवान और मतलब के हैं ठीक है इतना होते हुये भी और इन सब को अपनाते हुये भी गृहस्थाश्रम के धर्म का पालन करते हुये भी आत्मानन्द की साधना के साथ प्राप्त कर सकते हैं जो लोग यह कहते फिरते हैं कि गृहस्थ आदि परिवार और यह संसार मतलब और नाशवान हैं इसको त्याग दो और केवल आत्मानन्द की प्राप्ति में लग जाओ यह उन सज्जनों का कथन

मिथ्या है। देखा जाता है जो लोग संसार त्याग कर उपदेश दिया करते हैं वही लोग इस संसार में ऐसे लिपटे रहते हैं जैसे कि चन्दन के वृक्ष से सर्प लिपटे रहते है। बलवान आत्मा और और विजेता तो वही हैं जो संसार में रहते हुये और गृहस्थ धर्म का पालन करते हुये आत्मानन्द एवं परमपिता परमानन्द परमेश्वर मंगलमय अखण्ड भूमण्डलाकार की प्राप्ति कर लेते है।

स्वार्थ का घरबार

जब तक पैसे पास हैं तब तक संग हजार।
पैसा निकसो गाँठ से झट देत है मार॥

लूकूट पुरी में एक बड़ा भारी साहूकार रहता था और उस साहूकार के छः पुत्र थे। जब यह साहूकार ६० वर्ष का बूढ़ा हो गया तब उसके समस्त धन को उन लड़कों ने अपने कब्जे में कर लिया निदान यह अपने बूढ़े पिता से बोले—पिता जी! आप मकान की ड्योढ़ी मे बैठे रहा करें और भोजन चौके में जाकर कर आया करें तुमको घर के किसी भी काम से कोई सरोकार नहीं है, देखना किसी गैर आदमी को मकान के अन्दर न आने देना, बस इतना ही काम तुम्हारे जुम्मे है। बूढ़े पिता ने अपने लड़कों की बात को मान ड्योढ़ी में आसन

जमा लिया । दो चार मास व्यतीत होने के पश्चात् लड़कों की स्त्रियों ने अपने पतियों से कहा कि तुम्हारे बाप ड्योढ़ी में हरवक्त बैठे रहते हैं और हमको मकान के भीतर बाहर जाने में बड़ी अड़चन होती है इतना ही नहीं तुम्हारे पिता थूक २ करके सारा रास्ता खराब कर देते हैं और जब चौके में रोटी खाने को आते हैं तब भी थूक-थूक के चौके को गन्दा एवं अपवित्र कर देते हैं इसलिये आप अपने पिता के रहने का प्रबन्ध किसी दूसरी जगह कर दीजिये क्योंकि अभी ससुर जी के मरने का भी कुछ पता नहीं है, क्या जाने वह कब मरेंगे ? सच बात तो यह है कि उन्होंने हमको बड़ा दुखी कर रक्खा है । बड़े बेटे की बहू ने झट से अपने पति से कहा कि आप ऐसा करिये अपने पिता को मकान के ऊपर जो बरसाती है उसमें रख दीजिये क्योंकि छत के ऊपर पाखाना और पेशाब की जगह भी पास है और उन्हें वहां थूकने का भी आराम मिलेगा वे जहां चाहें वहां थूक लिया करेंगे बड़े लड़के की बहू की इस बात को उसके पति और पांचों देवरों ने स्वीकार कर लिया वह सब भाई अपने पिता के पास गये और उस बूढ़े पिता के हाथ पांव पकड़ कर ऊपर छतपर लेजाकर बरसाती (कमरे) में डाल दिया और बड़े लड़के ने मन्दिर में बजाने की एक घन्टी अपने पिता के

हाथ में देदी और कहा लीजिये पिताजी जब तुम्हें किसी वस्तु की जरूरत हो तब तुम इस घन्टी को बजा देना घन्टी की आवाज सुनते ही तुम्हारे पास तुम्हारे पोतों में से कोई एक पोता आजावेगा वह तुम्हारे कहे अनुसार तुम्हारी जरूरत की वस्तु लायेगा। अस्तु अब बूढ़े पिता को पानी, भोजन आदि वस्तुओं की जब जब आवश्यकता पड़े तब तब वह घन्टो बजा दिया करें, तब उन्हें जिस चीज की आवश्यकता होती थी वहीं वह चीज मिल जाती थी। पिता के साथ पुत्रों का यह बर्ताव देख बड़े लड़के का बेटा जिसका नाम गम्भीरचन्द था उसके दिल पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा एक दिन गम्भीरचन्द ने गम्भीरता से विचारते हुए अपने पिता और उनके पांचों भाइयों एवं अपनी माता और पांचों चाचियों को इस अज्ञानता एवं उनकी उस मूर्खता को सुझाने के लिये एक युक्ति निकाली। गम्भीरचन्द आज सवेरे ही ऊपर छत पर जा अपने दादा के पास से चुपके से घन्टी उठा लाया और उस घन्टी को लाकर अपने सन्दूक में बन्द करके रख दिया। बूढ़े के लड़के भोजन आदि कर अपनी अपनी नौकरियों एवं कामों पर चले गये। अब बूढ़े पिता को भूख लगी पिता ने घन्टी उठानी चाही परन्तु घन्टी बहुत ढूँढ़ने पर भी ना मिली बूढ़े ने एक दो आवाज

लगाते हुए कहा अरे आज घंटी खो गई है अब क्या बजाऊं, मुझे भूख लगी है रोटी दे जाओ। परन्तु बूढ़े की यह आवाज वहां कौन सुनता क्योंकि घर वालों को यह मालूम था कि बूढ़े को जिस चीज की इच्छा होगी तब वह घंटी बजा देगा। इधर बूढ़े के पास पीने को पानी भी नहीं था भूख और प्यास से बिचारे के प्राण घबड़ा रहे हैं। शाम के छः बज गये परन्तु घरवालों ने बिना घंटी की आवाज के भोजन पानी ऊपर भेज दें बल्कि वह लोग तो बूढ़े के पास तक भी ना गये और नाही किसी ने सुधबुध ली। रात्रि के आठ बजे बूढ़े के छः के छः लड़के बूढ़े के पास आये तो देखा बूढ़े पिता जमीन पर पड़े जिंदगी के दो तीन मिनट जो बाकी हैं उन्हें पूरा कर रहे हैं। बड़े लड़के ने पास बैठकर कहा कहिये पिता जी कैसी तबीयत है खाना खाया कि नहीं पिता ने हाथ के इशारे से कह दिया नहीं छोटे लड़के ने अपने बड़े भाई की स्त्री को बुलाकर पूछा भाभीजी आज पिता जी को खाना पानी दिया था नहीं वह बोली खाना पानी ऊपर कैसे भेजती आज सुबह से अभी तक घंटी की आवाज तो आई नहीं। उसकी यह बात सुन उसके पति ने अपने पिता से कहा पिता जी आपने घंटी क्यों नहीं बजाई बूढ़े पिता ने धीमी सी आवाज में कहा बेटा आज

घन्टी न मालूम कहां गुम हो गई। बड़े लड़के ने घर वालों को बुला सब से पूछा कि आज इनकी घन्टी कहां गई और कौन ले गया हमें पता नहीं, हमें खबर नहीं सबने कहा तब तो गम्भीरचन्द ने करारे स्वर से कहा पिताजी दादाजी की घन्टी तो आज सबेरे ही मैं उठाकर ले गया और लेजाकर उसको अपने सन्दूक में बन्द कर दिया उसने लड़के से कहा क्यों तूने घन्टी यहां से उठाई और क्यों सन्दूक में बन्द की, लड़के ने कहा सुनिये पिताजी मैंने घन्टी उठाकर इसलिये सन्दूक में रखली है कि जब तुम्हारी दादा के बराबर अवस्था एवं हालत होगी तब तुमको भी मैं इसी बरसाती में डाल यही घंटी तुम्हारे हाथ में दूंगा और कहूंगा पिता जी जिस चीज की आवश्यकता हो घंटी बजा दिया करें। पिता पुत्र की इधर तो यह वार्ता हो रही थी उधर उस बूढ़े ने अपने मन में बार बार विचारा कि तूने सारी आयु व्यर्थ खो दी जिन पुत्रों को बड़े कष्ट एवं लालन पालन से पाला था वह तो सब धन को लेकर अलग हो गये अब कोई पानी भी नहीं देता। बस यही सोच करते करते उस बूढ़े साहूकार के प्राणपखेरू पंच भौतिक शरीर से निकल यम पुरी चले गये—गम्भीरचन्द की इस यथार्थ भावना को सुन और पिताजी की भूख प्यास के कारण मृत्यु देख

समस्त घर वालों का सिर मारे शर्म के नीचे को झुक गया अस्तु।

प्रिय पाठको! मनुष्य का कर्तव्य है कि जब उसके पुत्र गृहस्थ चलाने के योग्य हो जायें तब उनको गृहस्थ का भार सौंप स्वयं अपने बलबूते पर निश्चय कर जीवन की शेष आयु परमात्मा के चिन्तन में लगाते हुए विरक्त हो जाय और कभी भी बेटे आदि की सहायता न लेनी पड़े ऐसा प्रबंध पहले से ही खुद करलें जिससे कि उनको किसी के मुख की तरफ न ताकना पड़े।

सत्यपालन की महिमा

पालन कर सत धर्म का, जो चाहे कल्यान।
एक सत्य के कारने, पावे पद निरवान॥

विश्वपुरी नगरी में एक धर्मावतार महाराजा सूर्यकेतु की राजधानी थी। राजा का स्वभाव बचपन से ही सत पुरुषों एवं सतवादियों के सत्संग करने का था ५० वर्ष की आयु होने पर भी राजा ने सत्य को नहीं छोड़ा। एक दिन राजा ने बहुत बड़ा दरबार जोड़ा और समस्त प्रजागण एवं राज्यकर्मचारियों से कहा जो हमारे नगर में रहना चाहे वह तन, मन, वचन से सत्य बोलने और धर्म पालने की पूरी प्रतिज्ञा करे यदि किसी

ने अपने स्वारथ के फेर में आ झूठ बोला तो वह घोर दण्ड का भागी बनेगा। इतना ही नहीं उस राजा ने अपने सारे नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि सभी जाति के नर और नारी सत्य बोलें जो झूठ बोलेगा उसको प्राण दण्ड दिया जावेगा राजा की ऐसी घोषणा को सुन कर नगर के व्यौपारियों में बड़ी खलबली मच गई और समस्त व्यौपारियों का एक झुण्ड राज सभा में आया और उस दल के मुखिया ने राजा के सम्मुख हाथ जोड़ कर कहा कि महाराज वणिज व्यौपार का काम बिना झूठ बोले न चल सकेगा। जिस चीज की कीमत हम सचाई से ग्राहक को बतावेंगे तो किसी को विश्वास न होगा और कोई ग्राहक हमारी वस्तु को नहीं खरीदेगा समस्त वनिज व्यौपार चौपट हो जायगा इसलिये आपसे हमारा निवेदन है कि आप सत्य पालन की घोषणा को व्यापारियों और प्रजाजनों पर मत लागू कीजिये। राजा ने उनसे कहा मिथ्या एवं झूठ बोलने से व्यापार की उन्नति नहीं होती है बल्कि अवनति होती है इसलिये मेरी सारी प्रजा को कभी मिथ्या भाषण नहीं करना चाहिये क्योंकि झूठ बोलने से अपनी आत्मा पर से दूसरे पुरुषों का विश्वास उठ जाता है। अतएव तुम सबको अब झूठ नहीं बोलना होगा।

राजा के इस आदेश और घोषणा को सुन सारी प्रजा सत्य धर्म में चलने लगी। जब किसी व्यापारी का कोई माल न बिके तब वह राजा के दरबार में जाकर निवेदन करता था और कहता था कि पृथ्वीनाथ! यह वस्तु सत्य बोलने से नहीं बिकी अब आज्ञा हो सो करें। महाराज चन्द्रकेतु ने कहा भाई! सत्य बोलने और धर्म पालने में बड़ी कठिनाइयां एवं बाधाओं का सामना करना पड़ता है परन्तु यह सब कठिनाइयां थोड़े ही काल तक रहती हैं। यदि तुम इतने पर भी अधीर होते ही हो तो लो मैं एक राज्य की तरफ से बाजार खोले देता हूं जिस में कुछ दुकानें भी खुलवाये देता हूं, जिस व्योपारी की वस्तु सत्य बोलने से नगर में न बिके वह वस्तु राज्य के बाजार में राज की ओर से खुली दुकानों पर बेच जावें दुकानदार उसे खरीद लेवेंगे। राजा ने ऐसा ही किया अब तो सारे नगर में सत्यभाषण का नियम होगया। कथा पूछते हो देश देशान्तरों में हजार-हजार कोश तक विश्वपुरी नगरी की और उसके राजा की कीर्ति फैलने लगी दूसरे देश के भी व्यापारीवर्ग भी सूर्यकेतु राजा की नगरी में आ यहां से माल खरीदने लगे। जैसे-जैसे और देश के व्यापारी वहां आने लगे वैसे-वैसे राजा की नगरी सारे भारतवर्ष में व्यापार की

मुख्य मण्डी बन गई। सूर्य केतू राजा के नगर का निवासी एक नीच पुरुष था उसके मन में इस सत धर्म व्यवहार एवं कीर्ति और प्रचार को देख-देख कर दुख होने लगा और वह इस दुख से व्याकुल हो रोने लगा इसने राजा सूर्य केतु के सत धर्म विचार को मिटाने का दिल में निश्चय किया। यह दुष्ट नर पिशाच प्रतिदिन रात्रि को श्मशान (मरघट) में जाकर छै महीने तक शनिश्चर देव को सिद्ध करने की इच्छा से एक मंत्र का जाप करता रहा। जब छै मास पूरे हुये तब शनिश्चर देव सन्तुष्ट होकर प्रगट हुये और उससे बोले कि वर मांगो यह सुन उस दुष्ट ने कहा कि मैंने यह शनिश्चर की मूर्ति (जो कि उसके पास रक्खी थी) बनारस से बनवा कर मंगवाई है इसलिये हे शनिदेव आप इस मूर्ति में विराज जाइये और इस मूर्ति में यह गुण चाहता हूं कि अगर यह मूर्ति भगवान् लक्ष्मीनाथ विष्णु के भी पास (घर) में जावे तो वह भी निर्धन हो जावें, और यदि यह मूर्ति किसी सज्जन के पास जावे तो वह सबका शत्रु बन जाय और उसके सब शत्रु बन जायें। यदि कंचन जैसी काया वाले के घर जाय तो वह कुष्ठी हो जाय, यदि यह मूर्ति ज्यादा आयु वाले के घर जाये तो वह थोड़ी आयु वाला हो जाय और यह मूर्ति कीर्तिवान

महा महिमा वाले के घर जाय तो उसकी दुनिया से महिमा मिठ जाय। शनिश्चर देव ने उसकी यह प्रार्थना सुन तथास्तु-तथास्तु कह दिया और शनिदेव अन्तरध्यान हो गये। यह दुष्ट भी मूर्ति को लेकर नगर में चला आया और इधर-उधर चक्कर लगा-लगाकर कहने लगा कि यह शनिश्चार देव की प्रतिमा बिक्री के लिये है जो भी इसका ग्राहक हो सो बोले, इस मूर्ति की कीमत एक लाख रुपया है। नगर में कोई भी एक लाख रुपया देकर इसको खरीदने के लिए तैयार नहीं हुआ तदनन्तर यह दुष्ट घूमता-घूमता जौहरियों के बाजार में पहुंचा और वहां भी उसने यह ही आवाज लगाई एक जौहरी ने इसको पास बुलाकर कहा तुम जो इस मूर्ति का मूल्य एक लाख रुपया मांगते हो सो इसमें क्या-क्या गुण हैं, यह सुन दुष्ट ने कहा यदि यह मूर्ति राजा के घर जाय तो वह राजा तुरन्त भिखारी हो जाय यदि यह अच्छे भले के घर जाय तो वह रोगी हो जाय और यह ज़्यादा आयु वाले के घर जाय तो उसकी आयु का अन्त हो जाय यदि यह अपार कीर्ति वाले के घर जाय तो उसकी कीर्ति नष्ट हो जाय आदि-आदि चमत्कार इस मूर्ति में हैं। उस दुष्ट के मुख से यह बात सुन जौहरी ने कहा ऐसा कौन मूर्ख है जो अपना धन देकर अपने

ऊपर विपता मोल ले। जाओ नाई आगे जाओ किसी और को टटोलो वह दुष्ट वहां से चला और चलकर राज महल के द्वार पर आ राजा को खबर कराई राजा द्वारपालों से सुन बाहर आया और दुष्ट से कहा भाई क्या बात है। उसने कहा राजन् मैं एक व्यापारी हूं और शनिश्चर की यह मूर्ति बेचने के लिए लाया हूं आपके सारे शहर में चक्कर लगा चुका हूँ परन्तु किसी ने भी इस प्रतिमा का पूरा मूल्य देकर नहीं खरीदा है अब मैं आपके द्वार पर आया हूं मुझे क्या आज्ञा है राजा ने कहा अच्छा इस मूर्ति की क्या कीमत है और इसमें क्या गुण है। दुष्ट ने कहा, राजन् आप और आपकी प्रजा सत धर्म पालन करने में सारे संसार में प्रसिद्ध है और आपकी सत्यवादिता का डंका नभ मंडल तक बज रहा है इसलिये आपकी सेवा में उपस्थित हुआ हूं आप यह मूर्ति लीजिये और इसका मूल्य एक लाख रुपया दीजिये या आज से असत्य बोलने की छुट्टी दीजिये, रहा इस प्रतिमा में क्या गुण है सो सुनिये यदि यह प्रतिमा राजा के घर जाय तो वह भिखारी हो जाय यदि वह कीर्तिमान् के घर जाय तो उसकी कीर्ति नष्ट हो जाय, आदि आदि गुण इस प्रतिमा में विद्यमान हैं। राजा उसकी यह बात सुनकर अति आश्चर्य में

पड़ गया और विचारने लगा कि यह भी परमेश्वर की महिमा अपार है ! अब क्या मुझे सत प्रतिज्ञा छोड़ देनी चाहिये और असत्य को ग्रहण करना चाहिये नहीं-नहीं यह तन धन तो नाशवान है और सत्यधर्म अटल है अस्तु राजा ने उसको एक लाख रुपया देकर उस मूर्ति को ले लिया जैसे ही राजा मूर्ति लेकर महलों में गया वैसे ही उसने अपनी शक्तियों की रंगत दिखलाई, राजा की कंचन जैसी काया में गलित कोढ़ रोग प्रगट हो गया और सब उसके मित्र आदि शत्रु बनकर कहने लगे इस राजगद्दी का स्वामी कोढ़ी पुरुष नहीं हो सकता है इसलिये अब आप वन में पधार जाइये क्योंकि आपने अपने सत धर्म को निभाने के लिये यह मूर्ति मोल ली है न कि औरों को दुख पहुंचाने के लिये। यह सुन राजा ने सोचा—

कवि शोभ संसार में, मतलब के सब यार।
नहि प्राणियों के लिए, करे कोई भी प्यार॥

भाई सब अपने-अपने मतलब के यार हैं तुम लोग घबड़ाओ नहीं मैं अभी जंगल में चला जाता हूं। यह कह राजा केवल दूशाला कन्धे पर डाल वन की ओर चल दिया और चलते-चलते कुछ रात्रि समाप्त होने पर एक परम सुन्दर कुटी दृष्टिगोचर हुई राजा ने रात्रि भर

आराम करने की अभिलाषा से कुटी में प्रवेश किया और वहां एकान्त में शांति पाकर शयन करने लगा परन्तु रोग के कारण उसे नींद न आई। राजा कोढ़ की पीड़ा से व्याकुल हो ही रहा था कि अचानक बादलों में बिजली की तरह उसके मुख से एक प्रभा प्रगट होती हुई प्रतीत हुई और मुख से अलग होते ही वह मूर्ति अलग हो राजा के सामने हाथ जोड़ कर प्रार्थना करने लगी कि महाराज मैं अब आपके पास रहने में असमर्थ हूं क्योंकि जहां शनिश्चर जैसे देव की छाया हो भला वहां हमारा क्या काम। यह सुनकर राजा ने कहा देवी तू कौन है, तब उसने उत्तर दिया कि मैं कीर्ति हूं, राजा विचार करने लगा कि क्या करना चाहिये, इतने में ही पहले की तरह एक चित को चकित करती हुई चपल चंचला के समान रूपवती प्रतिमा प्रगट हुई और बोली, राजन् मैंने आपके प्रचंड भुजदंड की प्रबल छत्र छाया में अति आनन्द उठाया है, अब आपने शनिश्चर देव को अपनाया है इसलिये अब हमारे जाने का समय आया है कृपया आज्ञा दीजिये। राजा ने उसको भी देख कहा, हे मातेश्वरी! तुम कौन हो, वह बोली राजन् मैं त्रिभुवन विख्यात लक्ष्मी हूं, राजा कुछ कहना ही चाहता था कि इसी

बीच में एक आश्चर्यजनक अद्भुत चमत्कार का प्रसार हुआ। और उस चमत्कार में एक डरावनी औरत दिखाई दी और वह कहने लगी राजन् मुझे भी जाने की आज्ञा दीजिये, राजा ने कहा तुम कौन हो, वह बोली मैं आयु हूं। इसके पश्चात् विवेक, वैराग्य, शील, सन्तोष आदि परिवार के सहित भगवान् मूर्तिमान् सत्य भी प्रगट होकर विदा माँगने लगे, राजा के पूछने पर पता लगा कि यह सत्य भगवान् हैं तब राजा ने प्रणाम कर हाथ जोड़ प्रार्थना की कि मैंने सबसे नाता रिस्ता तोड़ केवल आप से नाता जोड़ा है अब आप भी अन्त में मुझे किस पर छोड़े जारहे हैं. कृपया आप अपने मन से ही पूछिये, राजा ने पुनः कहा मैंने आप ही के लिए शनिश्चर देव लिया, आप मुझे तजकर जाते हैं अब मैं किसकी सेवा करूँ आपके ही कारण कीर्ति, लक्ष्मी. आयु भी मेरे को तज कर जा रहे हैं यदि आपने भी मुझको त्याग दिया तो मेरी लाज कौन रक्खेगा। यह सुनकर सत्य भगवान बहुत शर्मिन्दा हुये और घबड़ाये कि बड़े चक्कर में आये और सोचने लगे कि अब तो निभाय बनेगी शरण में आये राजा की लाज रखनी ही पड़ेगी। क्योंकि इस राजा ने यह सारी आपत्ति विपत्ति हमारे ही

लिये सही हैं अब हमको भी यही उचित है कि हम राजा की लाज का रखते हुये इसको पहिले जैसा सुख प्रदान करें, यह विचार कर सत्यदेव बोले—राजन् ! धीरज धरो कीर्ति, आयु, लक्ष्मी तुम्हारे पास से नहीं जावेगी क्योंकि मैं तुम्हारे संग हूं जिसने सत्यधर्म को अपने हृदय में धारण कर लिया उसने समझलो समस्त संसार विजय पाली है। इसके अनन्तर सब दिव्य शक्तियों के साथ सत्यदेव ने जब राजा के हृदय में पहिले की भांति आसन जमाया तब तो कीर्ति, लक्ष्मी, आयु आदि का भी दिल ललचाया और परस्पर एक दूसरे को देखकर कहने लगीं चलो बहिन हम भी वहां चलें जहां हमारे प्रिय मण्डल के सहित सत्यदेव विराजमान् हैं क्योंकि सत्य में सब छोटो स्थित हैं। इतना कहती हुई वह तीनों की तीनों सत्यवादी राजा के हृदय में प्रवेश कर गई इसी बीच राजा को एक थरथर सी आई, खून इधर से उधर शरीर में चक्कर खाने लगा राजा ने अपने शरीर को देखा तो वहाँ कोढ़ का नाम निशान भी न था। इतने में सत्यदेव ने राजा को समझाया कि पुत्र चलो तुम फिर अपने राजसिंहासन पर शेर की भाँति शुशोभित हो जाओ और अपनी प्रजा को सत्यधर्म का पथ दिखाते हुये मोक्ष के भागी बनो। ऐसी आज्ञा मानकर राजा

अपने राज्य में आया और उसने पहिले से भी ज्यादा तेज, प्रताप और ध्यान को सारी प्रजा में फैलाया और मानव जीवन में ही मुक्त कहलाता हुआ आत्मज्ञान को पाकर परमपिता परमात्मा के लोक को चला गया।

बन्धुओ! सत्धर्म पालन करने से क्या लाभ है यह आपनें उपरोक्त दृष्टांत से भली भाँति समझ लिया होगा, विशेष कहनें सुनने एवं लिखनें की आवश्यकता नहीं सारांश यह है कि दुर्जन और दुष्ट पुरुषों की छाया से सदैव बचते रहो।

दुर्जन की दुर्जनता का परिणाम

दुर्जन को झट मार दो कहते चतुर सुजान।
इनके मारे पुण्य है कहते श्री भगवान॥

एक दुष्ट मनुष्य अपने गांव से निकल एक निर्जन बन में गया और वहां पर एक जंगली उजाड़ रास्ते के पास हीन दीन मलीन अवस्था में बहुत पश्चाताप पूर्वक सिर धुनता हुआ बैठ गया। कुछ दिनों के बाद उसी रास्ते से २०० आदमियों का दल तीर्थ यात्रा करता हुआ चला आया उन सबने इस दुष्ट मनुष्य को घोर जंगल में अकेला बैठा हुआ देखकर कहा कि हे भाई तू यहां इस भयकर वन में अकेला बिना अस्त्र शस्त्र के

कैसे रहता है और तू कहां से आया है, तेरे में वैरागी के लक्षण भी प्रतीत नहीं होते हैं, क्योंकि वैरागी इतना हीन दीन मलीन मुख नहीं होता है। वैरागी का मुख तो सदा प्रसन्नता पूर्वक चन्द्रमा के समान शोभायमान दिखाई देता है। अतएव मालूम होता है कि तुम विषयों के त्यागी नहीं हो बल्कि कोई अभागी हो, शायद तुम्हें स्त्री पुत्र धनादि सुखों की हानि हुई है या किसी शत्रु ने सताया है या राज्य ने दबाया है, भला कहो तो किस मुसीबत के मारे इस कंटकमय वन में आये हो और अब तुम्हारी क्या इच्छा है। उस दल के मुखियाओं की यह बात सुन वह दुर्जनजन कहने लगा मैं त्यागी, वैरागी नहीं हूं और मेरी सम्पत्ति, स्त्री पुरुष आदि की कोई हानि नहीं हुई है और नाहीं किसी शत्रु ने सताया है, न राजा ने दबाया है परन्तु मेरे स्वभाव ने ही यहां पहुंचाया है देखो यह रास्ता कितने ही वर्षों से बन्द पड़ा था, इस रास्ते से कभी भी कोई आदमी नहीं चलता था कारण कि यहां अनेक हिंसक पशु सिंह, व्याघ्र रीछ आदि रहते थे, और जो भी पुरुष इधर से आता जाता था उसे हिंसक पशु मार डालते थे परन्तु अब थोड़े दिनों से यह मार्ग फिर चलने लगा है इससे मालूम होता है कि अब हिंसक पशु मर गये होंगे और उनकी जगह नये-

नये पशु यहां रहते होंगे और उन नवीन पशुओं को मनुष्य का माँस खाने का सौभाग्य अभी प्राप्त नहीं हुआ होगा इसी लिये तो वह मनुष्यों को अपना भोजन ना जानकर उल्टे ही डर कर भाग जाते हैं अगर एक बार भी उनके मुंह को मनुष्य के रुधिर का रस लग जाय तो फिर वह भी पहिले हिंसक पशुओं की भांति नरहत्या करने लगें बस इसी कारण मैं यहां आया हूं मैं यहाँ जंगल में रहूं और जो सिंह, व्याघ्र आदि यहां आवें तो उनको छेड़ूं ताकि वह, मुझे मारे और खावे और उनके मुख का मनुष्य के लहू का रस आजावे फिर तो वह और मनुष्यों को भी मारे और खाया करें और यह हिंसा पुनः होती रहे बस मैंने यह विचारा है कि अपने प्राण जायें तो जायें पर आगे की हिंसा तो होने लग जाय और यह रास्ता पहिले की तरह फिर हो जाय। उस दुर्जन की यह बात सुन लोग अत्यन्त चकित होने लगे और बोले भाई यह तो स्वभाव से ही दुष्ट है, अरे यह आत ताई है वह आत ताई होता है जो ग्राम आदि को आग लगावे यह भी वैसा ही काम करना चाहता है किसी ने सच कहा है मक्खी आप मरे औरों को मारे, लो इस दुष्ट को क्या सूझी है, अरे इस पापी को मारने से बहुत सी आत्माओं की रक्षा होगी

इसको मार देने से आगे होने वाली हिंसा रुक जायेगी आओ इस दुर्जन को मार डालें ऐसा कह उन यात्रियों ने उसे मार डाला।

श्रोताओ! हिंसक प्राणियों का संसार से वध कर देना ही उत्तम है गीता में भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ने अर्जुन को आततायियों को मारने का ही उपदेश दिया है आततायी उसको कहते हैं जो घर में आग लगाने वाला, विष देने वाला, शस्त्र हाथ में लेकर मारने आने वाला, धन हरण करने वाला, भूमि हरण करने वाला और स्त्री हरण करने वाला यह छः प्रकार के आततायी होते हैं। ऐसे आततायी को बिना विचारे ही मार देना चाहिये, इससे मारने वाले को कोई भी पाप नहीं लगता। कौरवों में भी आततायी के ये छः ही लक्षण मिलते हैं इन लोगों ने जन्तुगृह में अग्नि लगाई थी, भीम को विष दिया था, अस्त्र लेकर लड़ने आये थे, धन तथा भूमि का हरण कर लिया था और द्रौपदी के वस्त्र हरण आदि द्वारा स्त्री हरण कार्य भी थे।-इस दशा में ऐसे आतता-यियों, दुर्जनों, एवं दुष्टों को आर्य शास्त्र के सिद्धान्ता-नुसार इनके मार देने में कोई पाप नहीं होता है।

अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणि धनापहः ।
क्षेत्रदार हरश्चैव षड़ेते ह्यातताथिनः ॥
आततायिन मायान्त हन्यादेवाऽविचारयन् ।
नाऽऽततायि वधे दोषो हन्तुर्भवति कश्चन ॥

———

मोह की महिमा

मोह की महिमा है प्रबल इसमें नाहीं सुख ।
जो इसमे रहा फंस, वह पायेगा दुःख ॥

एक बूढ़े को उसके पोते ने किसी बात पर दो तीन घूसे लात मारकर घर से बाहर कर दिया । तब वह बूढ़ा नगर के बाहर जा बैठ गया और रोते हुये पोते को गालियां देने लगा इतने में एक तपस्वी महात्मा उस मार्ग से आ निकले, उन्होंने उससे आकर पूछा—वृद्ध जी ! क्या तुमको कोई दुःख देता है जो तुम रोते हो ? बूढ़े ने कहा साधू बाबा क्या बतायें हमारे पुत्र और पोते सब के सब बड़े निकम्मे हैं, देखो ना मेरे धन को छीन अपने काबू में कर अब मुझे अच्छा खाने को भी नहीं देते हैं । मैं जरा भी कुछ मुंह बोलता हूं तब वह लोग मुझे मारने लगते हैं । आज तो मुझे पोते ने लातों और घूसों से खूब मारा है और मुझे घरसे बाहर निकाल दिया इसी-लिये मैं दुखी होकर रोता हूं और पोते को गालियां भी

दे रहा हूं। सिवाय इसके बाबा मैं और कर भी क्या सकता हूं। तेजस्वी महात्मा ने कहा भाई यह पुत्र और पोते तो सब अपने-अपने मतलब के यार हैं, और यह सुख के साथी हैं। जब तक तुम इन सबको सुख देते रहो तब तक तुम्हारे लड़के और पोते तुम्हारी खूब चाव से सेवा एवं खातिर करते रहे मगर अब तुम इन लोगों को दुःख देने के अतिरिक्त प्रसन्न करने के काबिल नहीं रहे तभी तो यह तुम्हारा अपमान और निरादर करते हैं। दुनियां में सब लोग अपने-अपने सुख के लिये एक दूसरे से परस्पर स्नेह करते हैं। जिसका जिससे जब तक मतलब रहता तब तक वह उससे प्यार करता है और उसका साथी रहता है, बिना मतलब और स्वार्थ के कोई किसी से प्रीति करता है, इसलिये उठो और मेरे साथ चलो शेप आयु को उस अखण्ड ब्रह्माण्ड नायक कोटा-नि-कोट सूर्य के समान प्रकाशमान परमेश्वर श्री कृष्णचन्द्र के भजन आराधन में बिता दो। देर करने का अब समय नहीं है उठो, इतनी बात सुन बूढ़े ने उस महात्मा की तरफ क्रोध भरी दृष्टि से देखते हुये कहा आपको किसने चौधरी बनाया है जो हमको समस्त परिवार तथा घर छोड़ने का उपदेश करने लगे हो, हम उसके दादा वह हमारा पोता तुम कौन हो जो हमारे उसके बीच में उप-

देश करने को खड़े हो गये हो। भगवान हमारे पोते को जीता रक्खे चाहे वह हमको मारा ही करे, क्या बालकों के मारने के पीछे अपना घरबार छोड़ा जा सकता ? आये कहीं के उपदेश देने वाले, चलो-चलो यहाँ से यह झूठे उपदेश किसी और को देना। महात्मा चुप हो गये और विचारने लगे कि देखो इसी का नाम मोह की महिमा है। इस बूढ़े की ऐसी दुर्दशा होते हुये भी यह मोहजाल में ऐसा फंसा है कि जिससे इसका छुटकारा होना असम्भव है।

भाइयो ! वास्तव में हम सब की भी यही हालत है इसलिये हम सबको उचित है कि अपने जीवन निर्वाह के लिये अपना प्रबन्ध स्वयं कर आयु के थोड़े भाग को परमेश्वर की याद में व्यतीत करें। जो पुरुष अपने घर वालों एवं कुटम्बियों के बलबूते पर आयु का शेष भाग विताने की इच्छा रखते हैं उन्हें अन्त में इस बूढ़े की भाँति दुःख उठाना पड़ता है।

धन किसी का भी नहीं हुआ

इस जगती में है नही धन काहू का मीत।
सावधान हो बावरे कर ईश्वर से प्रीत॥

चार आदमी अपने नगर से किसी दूसरे गांव को चले जा रहे थे रास्ते में एक अशर्फियों की थैली पड़ी दिखाई दी। चारों ने उस थैली को उठा लिया और एक

बगीचे में बने देव मन्दिर में जाकर उन अशर्फियों को आपस में बांटने का विचार करने लगे। उन चारों में से एक ने कहा भई अशर्फियां तो मिल ही गई हैं सबको बराबर गिन-गिन कर मिल ही जावेंगे पर इस समय भूख बहुत लग रही है दो आदमी हम में से जाकर पाँच रुपये की मिठाई निकट वाले गांव में से ले आयें उस मिठाई को खाकर फिर इन अशर्फियों का बटवारा करेंगे क्योंकि इस बहाने अशर्फियों के अचानक मिलने और उनको बाटने का मिठाई खाकर सगुन भी हो जायगा। चारों ने यह बात स्वीकार करली और उनमें से दो आदमी मिठाई लेने को चले गये जब मिठाई लाने वाले मन्दिर में बैठे हुये दोनों मनुष्यों की निगाह से ओझल हो गये तब उन दोनों ने चलते-चलते आपस में यह सलाह की कि मिठाई में जहर डालकर ले चलो जिससे कि वह दोनों हमारे साथी जहर मिली मिटाई खाते ही मर जायेंगे और हम तुम उन अशर्फियों को आधा-आधा बांट लेंगे यह सोच मिठाई ले उसमें विप मिला वापिस बागीचे की तरफ चल पड़े। इधर मन्दिर में बैठे हुये उनके दोनों साथियों ने भी सलाह की कि यार जब वह दोनों मिठाई लेकर पास आवें तब हम तुम इन बन्दूकों से गोली मार कर उन दोनों को मार डालेंगे उनके मर-

जाने के पश्चात् इन अशर्फियों को हम तुम आधा-आधा बाँट लेंगे। ज्योंही वह दोनों मिठाई लिये हुये आते इनको दिखाई पड़े त्योंही इन्होंने उन पर गोलियाँ बरसाना एवं दागना शुरू की यह दोनों तुरन्त मर गये। तब उन दोनों ने अपनी अपनी बन्दूक को रख झट उनके पास आ मिठाई को चट से उठा लिया और बोले यार पहिले मिठाई खालो पीछे अशर्फियों का बटवारा करेंगे, जैसे ही उन्होंने मिठाई खाई तैसे ही कुछ क्षण में वह भी खतम हो गये और वह अशर्फियों की थैली वहाँ ही पड़ी रही।

बन्धुओ! संसार में हजारों ही नहीं बल्कि लाखों बड़े बड़े विजेता पुरुष इस धन के ऊपर मर गये परन्तु यह धन किसी का भी ना हुआ, यह धन तो भगवत की महामाया चंचल लक्ष्मी है यह भला एक जगह रह सकती है कभी नहीं, इस माया को तो जन्म से ही घर घर दर-दर विचरने का स्वभाव है अस्तु ज्यादा धन की लालसा करना भी प्राणों की आहुति देनी है।

क्या ये जमीन और मकान तुम्हारे संग जायगा

महल, अटारी, बाग ये, नाहीं जावे संग।
धन पाकर तू कर रहा, क्यों निर्धन को तंग॥

एक नदी के किनारे एक नगर आबाद था उस नदी के पास ही एक विधवा स्त्री का मकान था और उसके मकान के पास एक बाग था यह बाग नगर के राजा का था। राजा एक दिन अपने बाग में आये और देख भाल के पश्चात् राजा ने विचारा कि अगर इस विधवा स्त्री का मकान लेकर बाग में मिला लिया जावे तो हमारा यह बाग बहुत ही बड़ा हो जावेगा। इतना ही नहीं बड़ा हो जाने पर सुन्दर और चौरस भी हो जायगा राजा ने उस स्त्री को अपने पास बुलवाकर कहा तुम अपना मकान हमें दे दो हम इस मकान को तोड़ कर अपने बाग को बना लेंगे स्त्री ने कहा, राजन्! मेरे पति देव स्वर्गवास हो गये हैं और वह एक लड़का और एक लड़की छोड़ गये हैं मैं इन दोनों बच्चों को लेकर कहां जाऊंगी इसलिये महाराज मैं यह अपना मकान नहीं दूंगी। राजा यह सुन क्रोध में भर गया और नौकरों को हुक्म दिया कि इस औरत को और इसके बच्चों को मय सामान के मकान से इसको बाहर निकाल दो नौकरों ने राजा का हुक्म पा स्त्री बच्चों को सामान सहित

मार पीटकर मकान से बाहर कर दिया उस स्त्री के पास एक गधा था उस बेचारी ने उस गधे पर अपने दोनों बच्चों को चढ़ा और कुछ सामान रख रोती हुई वहां से चल पड़ी। जब वह विधवा स्त्री रोती २ कुछ थोड़ी दूर गई तब वहां पर एक संन्यासी साधु खड़े मिले उन संन्यासी महात्मा ने पूछा, देवी तू क्यों रोती है ? तब उस स्त्री ने अपना सारा हाल उन संन्यासी महात्मा से कहा। महात्माजी ने थोड़ी देर विचार करने के बाद कहा साधवो तू हमारे साथ एक दफा राजा के पास चल, हम किसी न किसी युक्ति से राजा को समझावेंगे और तेरा छीना हुआ मकान राजासे वापिस दिलवानेका भरसक प्रयत्न करेंगे। वह बिचारी महात्माके साथ चल पड़ी जब महात्मा राजा के पास गये तब उन्होंने राजा से कहा। राजन् ! इस दीन हीन विधवा स्त्री की यह इच्छा है कि यदि थोड़ी सी मिट्टी मेरे मकान की जमीन की मिल जावे तो मैं जहां भी जाकर मकान बनाऊंगी वहां पर उस मिट्टी को गाड़कर अपने बड़ों की एक समाधि यादगारी के लिये बनाऊंगी राजा संन्यासी के मुख से यह शब्द सुन बोला मिट्टी खोद लो। महात्माजी ने झट से बहुत सी मिट्टी खोदकर एक बोरी में भर कर राजा से कहा कि हे राजन् ! इस मिट्टी के बोरे को जरा

आप उठाकर इस गधे पर लदवा दीजिये। राजा बोला इतना भारी मिट्टी का बोरा क्या हमसे उठाया जायगा, जो हम इस बोरे को गधे पर लदवा दें संन्यासी ने कहा राजन् जब यह मिट्टी का बोरा आपसे नहीं उठाया जाता है तब इतनी बड़ी जमीन और यह मकान आपसे कैसे उठाया जावेगा। इस विधवा स्त्री का आपने जो मकान छीन लिया है किस तरह उठाकर आप मृत्यु के समय अपने साथ ले जावेंगे। सच्चे संन्यासी का सच्चा उपदेश सुनकर अज्ञानी राजा को ज्ञान एवं वैराग्य हो गया उसने झट से उस स्त्री का छीना हुआ मकान वापिस करते हुये अपना भी तमाम बाग उसको दे दिया।

बन्धुओ! मूर्ख, अज्ञानी, औरों की धरती एवं धन को जो अधर्म से अपने कब्जे में कर लेते हैं वह बड़ा भारी पापकर्म करते हैं। वर्तमान युग में भी प्रायः देखा जा रहा है कि कुछ सभा, सोसाइटियां, एवं ट्रस्टों में भी कुछ ऐसे नीच अज्ञानी पुरुष मौजूद हैं जो निर्धनों एवं गरीबों की ज़मीन मकान और उनके पूजा करने के धर्म स्थानों को हड़प करने का बीड़ा उठा रहे हैं। उन पतितों और पामरों को यह बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिये कि जब तुम्हारी अर्थी निकलेगी तब गरीबों और निर्धनों की जमीन मकान तो दूर किनार बल्कि

तुम्हारे छल कपट एव धर्म की आड़ में लूट के धन से पैदा किये हुए धन से बनवाये हुये बंगले, मकान भी साथ नहीं जावेंगे। हां इतना अवश्य होगा कि तुम जैसे नीच बुद्धि वाले पुरुषों को अवश्य ही रौरव नरक में वास करना पड़ेगा इतना ही नहीं तुम्हारे पीछे बाल बच्चों पर भी तुम्हारे किये हुये पापाचारों का वह प्रभाव होगा कि उनको भी भारी आयु तुम्हारे कारण कष्ट भोगना पड़ेगा। इसलिये ऐ अज्ञानी! और पृथिवी नर पिशाचो! संभलो और होश करो, सभाओं, ट्रस्टों कमेटियों की आड़ में दूसरे की परम्परा से चली आई भूमि और स्थानों को छीनने एवं हड़प करने से बाज़ आओ इसी में तुम्हारा कल्याण है।

हे राम अब तो मौत आजाय

मौत बुलाई, आगई, अब काहे घबराव।
सम्मुख आई मौत जब बोले बोझ उठाव॥

एक लकड़ी के बेचनेवाला बूढ़ा लकड़हारा गर्मियों के दिनों में दोपहर के समय में जंगल में से लकड़ियों को काट उनका गट्ठा बना सिर पर रख नगर में बेचने के लिये चला आ रहा था। सूर्य नारायण की तेजी से पृथ्वी में बिछी हुई धूल भी भाड़ की बालू के समान तप

रही थी गर्म २ लूँ ऐसी चल रही थी कि जिसके डर के मारे पक्षियों तक ने अपने घोंसलों से निकलना बन्द कर दिया था परन्तु यह लकड़हारा सिर पर लकड़ियों का गट्टा रक्खे हुये चल रहा था चलते चलते वह धूप के मारे व्याकुल हो गया और एक वृक्ष के नीचे छांह में लकड़ियों का गट्टा सिर पर से फेंक कर बैठ गया और बैठते ही बोला हे राम ! तू मौत को भेज दे उसका यह कहना ही था कि एक बड़ी डरावनी सूरत वाली स्त्री (मौत) उसके सामने आकर खड़ी हो गई और बोली कि मुझे तुमने क्यों बुलाया है, लकड़हारे ने कहा तू कौन है, उसने कहा मैं मौत हूं लकड़हारा यह सुन घबड़ाया और झट से बोला मैंने तुम्हें इसलिये बुलाया है कि तुम ज़रा इस लकड़ी के गट्ठे को मेरे सिर पर रखवा दो, मौत ने यह सुन उसके सिर पर लकड़ी का बोझ उठवा चलती बनी ।

बन्धुओ ! दुनियां दिखावे के लिये एवं ऊपर के मन से हर एक मनुष्य मौत को बुलाता है परन्तु अन्तर आत्मा से कोई भी मौत को निमन्त्रण नहीं देता ।

अपनी अपनी आन पर मर मिटे

अकड़ अकड़ कर चल रहा झूठी तेरी शान ।
पति पतनी की जिन्द से लोग हुये हैरान ॥

एक जेंनटल मैंन नवयुवक ने बी० ए० पास किया और जब वह नौकरी करने लगा तब उसके साथ एक लप्टेन ने अपनी लड़की का विवाह कर दिया परन्तु वह लड़की भी बी० ए० पास थी जेन्टलमैंन बाबू को जैसी औरत की इच्छा थी वैसी ही मिल गई कुछ दिनों के पश्चात् वह पति-पत्नी बम्बई में जाकर मुलाजिम हो गये औरत लड़कियों को स्कूल में पढ़ाती थी और बाबू एक दफ़्तर में काम करने लगे । इन दोनों का ऐसा प्यार मोहब्बत था कि इनको देखकर आस पास तथा मोहल्ले के लोग भी चकित रह गये । इतवार का दिन था बाबू ने अपनी औरत से कहा प्यारी आज छुट्टी का दिन है तुम पूड़े (चोले) बना लो मैं बाजार से घूमघाम कर अभी आता हूँ और पूड़े खाकर आराम करूँगा । यह कह बाबू बाजार को चले गये पीछे उस औरत ने पूड़े बनाये एक घण्टे बाद बाबू लौटकर आये और बोले पूड़े तैयार हैं वह बोली हां तैयार हैं बाबू ने कहा तो लाओ, औरत ने एक थाली में दस पूड़े रख बाबू को दिये और दूसरी थाली ग्यारह पूड़े डाल अपने सामने

रख खाने को तैयार हुई बाबू ने दस पूड़े अपनी थाली में देख और ग्यारह पूड़े अपनी औरत की थाली मे देख उनका पारा चढ़ गया और क्रोध करते हुये बोले दस पूड़े तो तेरा पति खावे और ग्यारह तू खावे, क्या इसी का नाम पति सेवा है बेशर्म कहीं जाकर डूब मर, उसकी स्त्री ने कहा चाहे में भूखी प्यासी ही रहूं मगर मैं अपनी जिद निभाते हुये पूड़े तो ग्यारह ही खाऊंगी । अब तो इन दोनों में पूड़ों के लिये खूब लड़ाई हुई निदान लड़ते लड़ते उनमें यह फैसला हुआ कि अपने अपने बिस्तर पर सो जाओ और जो पहले बोले वह ही दस पूड़े खावे यह ही उसकी सजा है । इतना कह दोनों जने अपनी २ पलङ्ग पर पांव पसार लेट गये । बाबू दिल में कह रहा था कि चाहे मैं नौकरी से बरखास्त हो जाऊं मगर पूड़े तो ग्यारह ही खाकर दम लूंगा । इधर उसकी औरत ने भी पड़े पड़े सोचा चाहे मैं जीते जी जलकर मर जाऊं, परन्तु पूड़े तो ग्यारह ही खाऊंगी । उन दोनों की मूर्खता तथा जिद का यह परिणाम हुआ कि इतवार का तमाम दिन और तमाम रात लेटे लेटे बीत गई मगर उन दोनों में से कोई एक भी ना बोला । दूसरे दिन सोमवार को जब १० बजे सब लड़कियां स्कूल में आगई तब अपनी मास्टरानी जी को वहां न देख कुछ लड़कियां इनके घर

आईं और किवाड़ खुटखुटाते हुये बोलीं बहिन जी! बहिन जी! दरवाजा खोलिये क्या आज छुट्टी करदें स्कूल की? मगर मकान के अन्दर से आवाज आये तो कैसे क्योंकि यहां तो वे दोनों अपनी अपनी जिद तथा आन पर अड़े हुये हैं और वह दोनों अपने अपने मन में सोच रहे हैं कि मर मिटेंगे मगर शान पर धब्बा न आने देंगे इधर लड़कियों ने बहुत सी आवाजें दी और शोर मचाया तब तू चल मैं चल मोहल्ले के बहुत से पुरुष भी वहां जमा हो गये और एक दूसरे में बातें हुई भाई कल दुपहर से इस वक्त तक बाबू जी के मकान का दरवाजा अन्दर से बन्द है दो चार समझदार पुरुषों ने कहा भाई पुलिस को बुलवाइये और यह दरवाजा तुड़वा कर उनकी खबर तो लेनी चाहिये शायद दोनों अन्दर मर गये हो इतने में एक आदमी दौड़ा दौड़ा थाने में गया और जाकर थानेदार से बोला जल्दी चलिये एक भयानक तथा बड़े ही रंज की बात है । सिपाहियों सहित थानेदार बाबू के मकान पर आ गया पुलिस ने आते ही मकान को चारों तरफ से घेर लिया इधर थानेदार मुहल्ले वालों के ब्यान ले हुक्म दिया कि दरवाजा तोड़ लो। दरवाजा तोड़ने के बाद थानेदार और सबने क्या देखा बाबू और उसकी औरत दोनों अपने अपने पलङ्ग

पर अकड़े हुए पड़े हैं और उन्होंने यह भी देखा कि उन दोनों के मुख से सांस तक नहीं निकलता है सबने समझ लिया यह तो मर गये लोग कहने लगे भाई देखो इन दोनों के प्यार तथा प्रेम की भी हद है मरे भी तो साथ ही मरे। अस्तु उन दोनों को एक अर्थी पर लिटा कपड़ा डाल सुतली से बांध मरघट की ओर कन्धे पर उठा राम राम सत्य है कहते हुए ले चले। जो लोग अर्थी को उठाए तथा अर्थी के साथ थे वह सब गिन्ती में भी पूरे इक्कीस थे आखिरकार उन दोनों को एक चिता में लिटा ऊपर से लकड़ियाँ चुन दीं। तब एक नौजवान चिता में आग लगाने के लिए बढ़ा, इतने में झट बाबू की औरत चिता में पड़े पड़े बाबू से कहने लगी नाथ! मैं हार गई और "तुम ही खाऊंगी" मैं अपने कान को पकड़ कर कहती हूं कि अब जिद ना करूंगी इक्कीस आदमी जो मरघट में बैठे हुए थे उन्होंने चिता के भीतर से जब औरत के यह शब्द सुने तब तो वह मरघट से एकदम भाग खड़े हुए और कहने लगे भागो भागो यह दोनों तो भूत और भूतनी बन गये, देखो ना दस तो यह औरत खायेगी और ग्यारह इसका पति (बाबू) खायेगा और भाई हम तुम कुल इक्कीस आदमी हैं भागो भागो नहीं हम सबकी क्यामत आ जायेगी। झट पट वह लोग

अपने अपने घरों को धा गए इधर वह पति-पत्नि चिता पर से उठे और दोनों ने अपनी इस मूर्खता पर बड़ा पश्चाताप कर लौट कर घरको आये तो क्या देखा सब पूड़ों को बिल्ली खा गई यह देख दोनों जने सिर धुन कर रोने लगे।

बन्धुओ! जो स्त्री-पुरुष जरा जरा सी बातों तथा छोटी छोटी वस्तुओं पर आपस में हठ तथा झगड़ा करते हैं उनका आखिरी परिणाम बुरा ही निकलता है इसलिये पति-पत्नी को एक दूसरे से परस्पर प्रेम तथा मुहब्बत का व्यवहार कर अपने घर को लड़ाई झगड़े से पवित्र रखना चाहिये।

पापी का अन्न खाने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

अन्न पाप का खाय के बुद्धि हुई मलीन।
निज गौरव सब मिट गया हो गये तेरह तीन॥

जिस समय भीष्मपितामह बाणों की शय्या पर महाभारत के युद्ध में घायल होकर पड़े हुये थे उस समय भीष्मपितामह पाण्डवों को धर्म का उपदेश सुनाने लगे वहां बैठी हुई द्रौपदी भी उनका उपदेश सुन रही थी। भीष्म के इस पवित्र धर्म उपदेश की छाप पाण्डवों के हृदयों पर खूब लग रही थी। उसी समय धर्म उपदेश

सुनते सुनते द्रोपदी हंस पड़ी, द्रोपदी को हंसता देख भीष्मपितामह ने कहा बेटी ? तू इस समय विना कारण क्यों हंसी, जब कि मैं इस समय धर्म का उपदेश तुम्हारे पतियों को दे रहा हूं तब तुम ऐसे गम्भीरमय उपदेश को सुन क्यों हँसी। द्रोपदी ने कहा महाराज ! जिस समय आपके नेत्रों के सामने भरी सभा में दुःशासन मेरे बालों को पकड़ करके लाया था और दुर्योधन ने सभा बीच मुझको खड़ा कर मुझे नङ्गी करने लगा था उस समय आपका यह धर्म उपदेश कहां चला गया था। आपने दुर्योधन को यही धर्म-उपदेश सुनाकर अधर्म के कार्य करने से क्यों नहीं रोका। भीष्मपितामह द्रोपदी की यह बात सुन रो पड़े और बोले बेटी ! तू ठीक कहती है उस समय हमने पापी दुर्योधन के अन्न को खाया था और उस अन्न के खाने से हमारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी, बुद्धि भ्रष्ट हो जाने के कारण हमको उस समय किसी प्रकार की भी धर्मचर्चा करने की ना सूझी बेटी ! पापी के अन्न को खाकर चित्त मलीन हो जाता है और मलीन चित्त में धर्म का लेषमात्र भी ज्ञान नहीं रहता है।

अस्तु द्रोपदी ! पाण्डवों के नोंकीले और तेजबाण मेरे शरीर में लग लग कर पापी दुर्योधन के अन्न से बने खून को शरीर से निकाल चुके हैं इसलिये अब मेरा

अन्तःकरण, मन, बुद्धि पवित्र हो गई है इसीलिये अब मुझे धर्म उपदेश देने का अधिकार हो गया है, क्योंकि मेरे शरीर में अब पापी दुर्योधन के अन्न का एक किनका भी नहीं है। द्रोपदी यह सुन चुप हो गई।

महानुभाओ ? इस उपरोक्त आख्यान से हमें यही शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये कि हम पापी लोगों के अन्न से आयुभर बचते रहें और जीवन पर्यन्त धर्मात्माओं के धर्म उपदेश लाभ उठाते रहा करें।

"दया से बढ़ कर कोई यज्ञ नही"

दया से बढ़ कर यज्ञ भी नाहीं सुख की खानि।
दया धर्म जो पालते उनकी जग में शानि॥

कानपुर नगरी में एक बड़ा धनवान वैश्य रहता था, वह वैश्य नितप्रति बड़े बडे विद्वानों को बुला यज्ञ कराया करता था इन यज्ञों के कराने से उस वैश्य का सारा का सारा धन खर्च हो गया अब यज्ञ कराना तो दरकिनार रहा वैश्य को खाने पीने तक की तङ्गी हो गई एक दिन उस वैश्य की स्त्री ने कहा तुम किसी राजा के पास जाकर अपने किसी एक यज्ञ के फल को बेच आओ और यज्ञ के फल को बेच रुपया ला अपना गुजारा

करो। वैश्य ने कहा अच्छी बात, निदान उसकी स्त्री ने वैश्य को चलते समय नौ रोटियां बनाकर दीं और कहा तुम यज्ञ का फल बेचने जा रहे हो ना मालूम किसी नरेश के पास पहुंचने में कै दिन लगें यह नौ रोटियां मार्ग में भूख मिटाने के लिये काम आयेंगी वैश्य वह रोटियां उठा चल पड़ा। चलते चलते वैश्य तीन कोस की दूरी पर निकल गया तो उसने उस जंगल में एक कुंआ देखा कुंये के चारों तरफ वृक्षों की छाया देख थोड़ी देर सुस्ताने की इच्छा से वह कुंये के पास बैठ गया। थोड़ी देर बैठने के पश्चात् वैश्य ने देखा कि एक वृक्ष की खोह में एक कुतिया व्याई हुई पड़ी है जिसके नौ बच्चे हैं और वह बच्चे उस कुतिया को चूस रहे हैं और वह कुतिया तीन दिन से भूखी है यह बात वैश्य ने अपनी प्रबल बुद्धि से जान लिया। कुतिया का तीन दिन भूखी रहने का कारण यह था कि तीन दिन से लगातार मूसलाधार वर्षा हो रही थी विचारी कहीं भी अन्न की तलाश में न जा सकी। इसलिये कुतिया बहुत दुर्बल हो गई थी और उसमें अब कहीं जाने आने की तथा चलने फिरने की शक्ति भी न रही थी। धर्मात्मा वैश्य ने एक एक रोटी करके कुतिया को नौकी नौ रोटियां खिला दीं और खुद भूखा रह गया। उन रोटियों के

खाने से कुतिया की जान में जान आई और वह कुतिया जी उठी और सब बच्चे भी मरने से बच गये; अब वैश्य वहाँ से चल पड़ा और दूसरे दिन श्री १०८ महाराजाधिराज वेणिमाधव प्रसादसिंहजी देव विजयपुर नरेश के पास पहुंचा और कहा राजन् मैं एक यज्ञ के फल को बेचने के वास्ते आपके पास आया हूं क्या आप मेरे बहुत से किये हुये यज्ञों में से किसी एक यज्ञ का फल मोल ले लेंगे।

राजा साहब ने तुरन्त अपने राज्य के बड़े २ विद्वान् विख्यात ज्योतिषियों को बुला लिया और उनसे कहा ज्योतिष एवं अपने ज्ञान और प्रसंग लगाकर देखो कि इस वैश्य ने जितने भी यज्ञ किये हैं उन सब यज्ञों में किस यज्ञ का फल श्रेष्ट एवं उत्तम है उसी फल को हम खरीद लेंगे। राजा साहब की यह बात सुन ज्योतिषियों ने प्रसंग लगाकर कहा महाराज इस वैश्य ने रास्ते में कुतिया को जो रोटियां खिलाई हैं उनसे नौ जीवों के प्राण बच गये हैं वह ही इसके सब यज्ञों से उत्तम यज्ञ है। आप उसी फल को यदि यह बेचे तो खरीद लीजिये यह सुन राजा ने वैश्य से कहा। वैश्य ने कहा महाराज इस यज्ञ के फल को मैं नहीं बेचूंगा, यदि आप किसी और यज्ञ के फलको खरीदें तो बेचूंगा राजाने और यज्ञों

के फलों को अथवा फल को खरीदने से इन्कार कर दिया और वैश्य को कुछ धन देकर बड़े सन्मान से बिदा किया।

बन्धुओ! दया के बराबर संसार में कोई भी यज्ञ नहीं है मनुष्यमात्र के लिए दयारूपी यज्ञ ही कल्याण कारी है। गोस्वामी श्री तुलसीदास जी का पवित्र आदेश है कि—

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये, जब लगि घट में प्रान॥

अस्तु यदि आप संसार सागर से पार होना चाहते हैं तो दयारूपी यज्ञ नित्यप्रति किया करो दया से बढ़ कर मनुष्य के लिये कोई और सुगम एवं सरल मार्ग नहीं है जो लोग दया नहीं करते और दया को बुरा बतलाते हैं वह लोग हिमालय के समान भूल करते हैं। परन्तु पापी मनुष्य के मारने में दया का त्याग करना पड़ेगा।

संसार में कौन बड़ा ?

अपने अपने चित्त में सभी बड़े बलवान्।
भगत बड़े भगवान् से कहते खुद भगवान्॥

एक समय प्रयागराज के पवित्र तट पर एक विचित्र सभा हुई। सबसे पहले पृथ्वी ने खड़े होकर कहा कि मैं

सबसे बड़ी हूं क्योंकि मैंने समस्त भूमण्डल को अपने ऊपर उठा रक्खा है, इतने में शेषनाग बोल पड़े तू कैसे बड़ी है बड़ा तो मैं हूं क्योंकि मैंने तुझे भी अपने फन पर बिठा रक्खा है। इतने में शिवजी ने शेषनाग से कहा तू कैसे बड़ा, बड़ा तो मैं हूं देख मैंने तेरी माला बनाकर पहिन रक्खा है, तब तो कैलाश पर्वत भी आगे आये और बोले वाह भोले बाबा वाह ! आप कैसे बड़े हैं बड़ा तो मैं हूं, मैंने आपको परिवार सहित ऊपर बिठा रक्खा है। क्रोध से भरा हुआ झट रावण उठा और उसने कैलाश पर्वत से कहा, भाई तू कैसे बड़ा, बड़ा तो मैं हूँ मैंने तुझे भी अपने हाथों पर उठा लिया था, इतने में रावण को डाटते फटकारते हुये बाली ने कहा तू कैसे बड़ा, बड़ा तो मैं हूँ मैंने तुझे छः मास तक अपनी काख में दबाये रक्खा, फिर भगवान् श्री राम जी नें कहा बाली तुम कैसे बड़े, बड़े तो हम हैं क्योंकि हमने तुम्हें एक ही बाण से मार दिया इतनें में एक भगवान् का भक्त खड़ा हुआ और उसने हाथ जोड़कर श्रीरामचन्द्रजी से कहा, भगवन् आप कैसे बड़े हैं बड़े तो हम भक्त लोग हैं जिन्होंने आप से भी सेवा कराली है। यह सुनकर सारी सभा में सन्नाटा छा गया और भगवान राम मुस्कराते हुये अपने भक्त से बोले। वत्स ! ठीक कहते

हो मैं संसार में किसी के भी बंधन में नहीं आता परन्तु मेरे भक्तों को ही यह गौरव प्राप्त है कि वह जहां चाहें जब मुझे अपनी अन्तर आत्मा की प्रेम भरी झनकारों से बुला लेते हैं तब मैं उनके बड़े से बड़े कठिन से कठिन कार्य को स्वयं कर उनकी समस्त आपत्ति विपत्ति दूर कर देता हूं।

भाइयो! इस ऊपर लिखे दृष्टान्त का सारांश यह है कि मनुष्य स्वयं बड़ा बनने के लिये चाहे कितनी ही सम्पत्ति एवं शारीरिक शक्ति लगा दे परन्तु बिना धर्म-शील हुये या बिना भगवद् भक्ति किये कदापि बड़ा नहीं बन सकता है।

हम यहीं जल कर मरेंगे

जन्म भूमि भारत महि है सब की यह मात।
इसमें जल २ कर मरें सीधी सच्ची बात॥

श्री १०८ राय बहादुर धर्म धुरीण राज काशीनाथ सिंह बहादुर गया के आनन्द भवन में बहुत बड़ा बाग है उस बाग में नाना प्रकार के पुष्प प्रतिदिन खिलते हुए अपनी मन मोहिनी सुगन्धि से वहां के पुरुषों को अपने वश में कर लेते हैं। रायबहादुर साहब ने बड़ी-बड़ी दूर

से भिन्न २ प्रकार के पुष्पों के वृक्ष मंगवाकर अपने पवित्र बाग में लगा रक्खे है। पवित्र बाग कहने का यथार्थ कारण यह है कि राय बहादुर साहब ने दिसम्बर मास सन् १९३९ के दूसरे सप्ताह में अखिल भारतवर्षीय श्री रूपकला हरिनाम यश संकीर्तन सम्मेलन के विराट महा अधिवेशन को इसी बाग में चार दिन तक कराया था, इस सम्मेलन में ५००० के लगभग जनता ने सम्मिलित हो भगवान के पवित्र नामों का उच्चारण किया था और सम्मेलन समाप्ति पर राय बहादुर जी ने उसी बाग में एक चबूतरा जिस पर कि भगवान राम श्री जानकी एवं भ्राताओं सहित वैठे थे अभी तक यादगार में स्थापित कर रक्खा है। परन्तु एक दिन उस बाग में जहां भांति २ के पुष्प खिल रहे थे वहां एक साधू आगया और लगा फूलों की वाटिका को देखने उसने देखते २ क्या देखा कि काला भौंरा हर एक पुष्प पर बैठ २ कर उसकी सुगन्धि ले रहा है। परन्तु वह भौंरा चम्पा के फूल पर नहीं बैठता है और नाहीं उसके निकट जाता है, भौंरे की यह हरकत देख साधू ने चम्पा के फूल को सम्बोधन करते हुये कहा—

चम्पा तुझ में तीन गुण रंग, रूप, अरु बासु।
अवगुन तुझ मे कौनसा, भंवर न आवे पास॥

साधू के यह शब्द सुन चम्पा के फूल ने उतर दिया कि—

साधू मुझ में तीन गुन रंग, रूप और वासु।
जगह जगह के मित्र को कौन बिठाये पास॥

साधू जी इस भौंरे का मन चंचल है जभी तो यह जगह २ मारा २ फिरता है और किसी एक जगह स्थाई रूप में नहीं बैठता है इसीलिये मैं इस चंचल मन वाले एवं जगह २ फिरने वाले आवारा भौंरे को फटकने भी नहीं देती। साधू इतना सुन उस बाग से बाहर हो जंगल की तरफ चल दिया, जंगल में जाकर साधू ने एक विचित्र दृश्य देखा। उसनें देखा कि एक पुराने वृक्ष पर हजारों की संख्या में तोते बैठे हैं और उस वृक्ष में बड़े जोर से आग लग रही है तब तो महात्मा जी ने जोर से आवाज लगा कर कहा—

आग लगी इस वृक्ष में अरु जलने लागे पात।
रे पक्षी तुम क्यों जलो जब पंख तुम्हारे पास॥

साधू की यह बात सुन एक बूढ़े तोते ने ऊंचे स्वर से गरज के कहा—

मीठे फल खाते रहे अरु गन्दे कीने पात।
अब धर्म हमारा है यही जलें वृक्ष के साथ॥

भारत वासियो! उपरोक्त दृष्टान्त से हमें यह शिक्षा

ग्रहण करनी चाहिये कि हम सब इसी भारत भूमि में उत्पन्न हुये और इसी में सबने अपनी आयु पर्यन्त खूब चैन की बन्शी बजाई अब इस मातृभूमि को छोड़ कहाँ जायें हमारे लिये तो पाकिस्तान, अछूतस्तान तथा पाकिस्तान जो कुछ भी है वह हिन्दुस्तान ही है। यदि एक विन्दु समुद्र से अलग हो जाये तब उस विन्दु की मृत्यु अवश्य हो जायेगी। अस्तु जो लोग हमारी जन्मभूमि हिन्दुस्तान में पाकिस्तान एवं अनेक स्थान बनाने तथा इसके टुकड़े करने के प्रयत्न कर रहे हैं वह पुरुष अखंड मात्रीभूमि हिन्दुस्तान के अनादि गौरव को नष्ट भ्रष्ट करने की कुचेष्टा करते हैं।

डिप्टी का बाप

धन्य २ वर दायिनी भारत की सरकार।
थारी कृपा कटाक्ष से डिप्टी होत चमार॥

एक नगर में नत्थू नाम का चर्मकार रहता था यह चर्मकार अपने खानदानी पेशे यानी चमड़े की वस्तुयें बनाने में बड़ा ही निपुण था इसके एक लड़का था जो राजभाषा पढ़ डिप्टी का पद प्राप्त कर एक शहर में डिप्टी कलट्टरी पर नियुक्त हुआ। यह लड़का अपनें पुराने

छप्पर भूल कोठी में रहने लगा बदन पर पहिनने के लिये यदि सौ रुपये का सूट है तो पांव में जूता भी २०) रुपये से कम नहीं मूंछ डाढ़ी के नाम से तो बाल भी न था प्रतिदिन अपने हाथों से मूंछ डाढ़ी बनाने का तो उसके पीछे एक रोग सा लग गया था उसका गोल २ चेहरा टिमाटर के समान चिकना प्रतीत होता था उसने यहां रहकर एक इंग्लोइण्डियन मैम से दोस्ती गांठ उसको अपने पास कोठी में रख साहब बहादुर का अनुकरण करने लगा, मक्का की रोटी छोड़ केक बिस्कुट खाने लगा दिन में कई २ बार चाय पीना साधारण सी बात होगई रात्री में लेडी के साथ ब्रान्डी पीना एक कर्तव्य सा होगया। रोटी आदि पकाने के लिये एक मुसलमान रख लिया। सारांश डिप्टी साहब डिप्टीरूपी कूप में ऐसे गर्क हुए कि उन्होंने अपनी औरत बालबच्चों एवं माता पिता तक को भी तिलांजली दे दी। इनके माता पिता स्त्री बच्चे घर पर भूखों (फाकों) मरने लगे दो २ दिन तक चूल्हा नही जले कुनबा बड़ा है क्योंकर पले, कर्ज कोई देता नहीं, बेटा खबर लेता नहीं घर की यह दशा देख बूढ़े नत्थू ने विचार किया चलो अपने बेटे के पास चलें वह तो उस शहर का डिप्टी है उससे धन ले आवें। यह सोच नत्थू ने बिस्तर लिया एक हाथ में, और घी

भी थोड़ा सा साथ ले चल पड़ा और डिप्टी की कोठरी के द्वार पर पहुंच गया यह बूढ़ा तो बिचारा पुरानी भेष भूषा का हामी था घुटनों तक धोती आधे हाथ तक बगल बंडी पहिने हुये देख डिप्टी (लड़का) ने इनसे अपना मुँह छिपाते हुये एक कमरे में ठहरा दिया। नत्थू बेटे की इस हरकत को देख मन ही मन में अनेक विचार कर ही रहा था कि इतने में उस मेम (लेडी) ने आकर बूढ़े के सामने डिप्टी से पूछा यह बूढ़ा कौन है, लड़के ने कहा यह बूढ़ा हमारे गॉव का तिरखान (बढ़ई) है हमारे घर से थोड़ा घी लाया है। लड़के की यह बात सुन बूढ़ा पिता क्रोध में भर गया और बोला हे भगवान ये क्या हो गया, अब घोर कलियुग आगया. बेटे ने अँग्रेजी पढ़ी, सर पै चुड़ेल एक आ पड़ी, यह कह बूढ़े ने अपने लड़के की तरफ संकेत कर पुनः बोला, है खब्त होगया आपको, भूले हो अपने बापको, उन दिनों को बेटा याद करो जबकि तुम गांव में थे मैंने तुमको पाल पोष एवं पढ़ा लिखा इतना बड़ा किया और अब तू डिप्टी होकर अपने बाप को इस आवारा औरत के सामने गांव का बढ़ई बता गाँव का महमान कहता है। धिक्कार है तेरी शिक्षा एवं डिप्टी कलक्टरी पर।

बन्धुओ! वर्तमान शिक्षा दीक्षा ने हमारे त्रिकाल

दर्शी ऋषि महर्षियों के पवित्र आदर्श की जड़ों को खोखला कर दिया है। जो बात लार्ड मेकाले ने अपने पिता को पत्र लिखा था वह पत्र नहीं लिखा था लार्ड मेकाले ने हिन्दुस्तानियों के सम्बन्ध में जो कुछ भी पत्र में लिखा था वह सब सोलह आने ठीक उतरा। लार्ड मेकाले का पत्र यह था—

No Hindu who has received English Education ever remains sincerly attached to his religion. Some continue to profess it as a mother of policy, but other profess themselves plus athist and some embrace christimity. We desire to foen a class who may be interpullious between as and the million we goxeen, a class of plia Indian in blud and colour, but English in liste, in opinion, in morals, and in intellect.

अनुवाद—"वह व्यक्ति हिन्दू कभी नहीं रहता जो कि अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करता है और वह अपने धर्म को छोड़ बैठता है अथवा अपने धर्म से हार्दिक सहानुभूति नहीं रखता। और लोग पालिसी से ऐसा करते हैं कि वह ईश्वर को नहीं मानते तथा कुछ ईसाई धर्म को ग्रहण कर लेते हैं, हम एक जत्था बनाना चाहते हैं जो हमारे तथा उन लाखों मनुष्यों के मध्य में जिन

पर कि हम (हुकूमत) शासन करते हैं अनुवादकों के कार्य कर सके। यह जत्था रक्त तथा रंग में हिन्दुस्तानी हो किन्तु आचार, व्यवहार, चरित्र, चिन्ता आदि में अंग्रेज होना चाहिये"।

"त्यागी महात्मा धनवानों से दूर रहते है"

ईश्वर चिन्तन नित करें, रहे भक्ति में चूर।
त्यागी साधू रहित हैं, धनवानों से दूर॥

एक शहर के बाहर नदी के किनारे पर बहुत सुन्दर कुटिया बनाकर दो त्यागी महात्मा रहते थे वह महात्मा किसी सेठ साहूकार तथा राजामहाराजा के दरवाजे पर कभी नहीं जाते थे और अपनी पूर्ति गरीबों के घरों से भिक्षा माँग कर करते थे। भिक्षा माँगने इसलिये जाते थे जिससे आत्म रक्षा हो जाय, जनता में उनके गुणों की बहुत चर्चा फैल गई कारण कि वह बड़े भारी त्यागी थे उनके त्याग की चर्चा शहर के सब से बड़े जमीदार तथा जागीरदार के कानों तक पहुंची। तब तो जमीदार साहब एक पालकी में सवार हो उनके दर्शनों के लिये चल पड़े। थोड़ी देर में जमीदार कुटिया के द्वार पर आ गये, वह दोनों महात्मा अभी भिक्षा माँग कर आये और भोजन

करने बैठे ही थे कि उनकी दृष्टि शहर के जमीदार पर पड़ी । ज्योंही उन्होंने जमीदार को देखा तो आपस में विचारा यह जमीदार हमारे पास आ रहा है, इसलिये इसकी श्रद्धा अपने ऊपर से हटानी चाहिये, क्योंकि इसको अपने पास बिठाने एवं इससे सम्भाषण करने से अपने भजन और त्याग में फरक पड़ जायेगा । जमीदार के समीप आते ही यह दोनों महात्मा आपस में रोटी के एक टुकड़े पर खूब लड़ने लगे। एक बोला यह टुकड़ा मैं खाऊँगा दूसरा बोला नहीं तुम कैसे खाओगे मैं खाऊँगा, जमीदार एक रोटी के टुकड़े पर इन दोनों महात्माओं की लड़ाई देख दूर से ही लौट गया और उसने समझ लिया महात्मा नहीं, त्यागी नहीं बल्कि कंगले हैं।

बन्धुओ ! पूर्ण त्यागी, जमीदार, साहूकार तथा राजों से मिला नहीं करते और ना ही उनका अन्न खाया करते, आजकल लम्पट, कामी त्यागियों की बहुत अधिकता है। आजकल के त्यागमूर्ति प्रायः राजेमहाराजों एवं सेठ साहूकारों के पीछे पीछे कुत्ते की भाँति फिरा करते हैं, उन लोगों से यह त्यागी खूब धन लेलेकर अपने त्यागपन का परिचय दे कलयुगी त्यागियों का आदर्श स्थापित करते हैं। सेठ साहूकार और राजा लोग भी कुछ ऐसे हैं कि वह भी नकली त्यागियों के चक्कर में आ सतधर्म के प्राचीन

सिद्धान्त एवं मानमर्यादा को भारत से सदा के लिये विदा करने का प्रयत्न करते हैं। जो सच्चा त्यागी होगा वह कभी भी किसी सम्पत्ति शाली पुरुष से सम्भाषण न करेगा बल्कि वह तो धनवानों से सदैव बचता ही रहेगा। भारत के समझदार समुदाय को नकली और असली त्यागियो की जमीदार की भांति परीक्षा करनी चाहिये यदि हम बुरे भले की पहिचान करना प्रारम्भ कर देंगे तब नकली त्याग मूर्तियों स्वय ही मृत्यु हो जायगी।

"किसी मन्दिर मे जा कथा मत सुनना"

एक नगर से एक कोस दूर पर चोरों के दस बीस घर थे एक बूढ़े चोर के पांच लड़के थे वह बूढ़ा चोर अपने पाँचों लड़कों को नित्य उपदेश दिया करता था और कहता था, बेटा ! किसी मन्दिर में, किसी सत्सग मे, किसी महात्मा और कथा आदि वार्ता में कभी न जाना इसी प्रकार वह बूढ़ा चोर अपने लड़कों को उपदेश दिया करता था। एक दिन वह बूढ़ा मर गया उसके मरने के बाद उसके बड़े लड़के ने सोचा कि आज रात को राजा के महल में चलकर चोरी करके कुछ मालडाल ले आवें। जब वह रात के समय में अपने घर से और नगर में घुसा तो मार्ग मे एक जगह कथा हो रही थी कथावाचक पंडित जोर जोर से कथा बाच रहे थे और श्रोताजण बड़े आनन्द

तथा श्रद्धा से कथा सुन रहे थे, यह सब देख चोर ने विचार किया कि पिता का उपदेश है जहां कथा होती हो वहाँ न जाना चाहिये. हमारे रास्ते में कथा आ गई है अब यहाँ से कैसे निकलें, हमें कोई उपाय करना ही चाहिये जिसके करने से हमारे कान में कथा का शब्द न जाने पाये उसने यह विचार अपनी रूई की बण्डी में से थोड़ी सी रूई निकाल दोनों कानों में भरली और फिर वह कथा के बीच में से होकर चला। जब वह चर कथा के निकट पहुँचा तब उसके एक कान में से रूई गिर गई, उधर पण्डित कथा में कह रहे थे कि देवता की परछाई नहीं होती है, और देवता के जमीन पर पॉव भी नहीं लगते हैं। इतना ही उस चोर ने अपने रूई गिरने वाले कान से सुना, निदान राजा के महल में पहुँच कर बहुत सा माल चुरा लिया और लेजाकर अपने घर में उसने गाड़ दिया। सवेरा होते ही राजा को मालूम हुआ कि आज रात महल में चोरी हो गई है। राजा ने चोर को पकड़ने के लिये हुक्म दिया कितने ही सिपाही चोर को पकड़ने की कोशिश में लगे परन्तु चोर को पकड़ना तो क्या पता भी ना चला, तब तो राजा ने अपने मन्त्री से कहा भेष बदल कर तुम चोर का पता लगाने के लिये जाओ। मन्त्री ने ऐसा ही किया और भेष बदल जहाँ वह चोर रहते थे वहां पहुँचा मन्त्री

ने काली देवी का भेष बना रक्खा था, सारे शरीर में काला रंग मल रक्खा था बालों को खोल कर एवं हाथ में खप्पड़ ले आधी रात के समय उन चोरों के द्वार पर जाकर कहने लगा, काली माई की पेट पूजा को तुम लोग क्यों नहीं देते हो ? रोज २ मनमाना बहुत सा माल ले आते हो, परन्तु इसमें से मुझे कुछ भी भेंट नहीं करते, आज हमारी सब दिन की भेंट देदो नहीं तो मैं तुम सब का नाश कर दूंगी। काली के क्रोध से डर सब चोर अपने २ घरों से निकल अपने २ द्वार पर आये और हाथ जोड़ कहने लगे, माता ! तुम्हारी भेंट पूजा को हम कल अवश्य देवेंगे इतने में बूढ़े चोर के बेटे को कथा में सुनी बात याद आ गई। वह अन्दर गया और एक दीपक जलता हुआ लेकर बाहर आया काली माई के पास जाकर देखा कि उस काली देवी की परछाईं दिखाई दे रही है उसने यह भी देखा कि पृथ्वी पर देवी के पांव भी लगे हुये हैं। तब तो उसने जान लिया कि यह देवता नहीं है यह तो कोई देवी का भेष बना ठग है, झट लट्ठ लेकर काली को मारने आगे को बढ़ा इतने में काली वहां से भाग गई। काली के भाग जाने के पश्चात् उस चोर ने विचार किया कि हमने दोही बातें कथा में सुनी थी और उन्हीं दो बातों ने हमारी

जान बचाई और हमारा माल भी बचाया, अगर हम लोग सदैव नित्य प्रति सत्संग एवं कथा में जाया करें तो इस खोटे कर्म का बहुत शीघ्र त्याग कर सकते हैं और हमको महान फल की प्राप्ति हो जायगी । ऐसा विचार कर समस्त चोरों ने उसी दिन से चोरी करनी छोड़ दी वह सब लोग प्रति दिन कथा, कीर्तन, सत्संग में जाने लगे थोड़े ही दिनों में वे चोर धर्मात्मा बन गये अपनी मेहनत से कमाई कर अन्त को स्वर्ग सिधारे।

बन्धुओ ! वास्तव में कथा, कीर्तन, सत्संग, एवं सत्पुरुषों का उपदेश ही मानव समाज के लिये हितकर है। अस्तु थोड़ा बहुत समय निकाल कर अवश्य ही नर-नारियों को उपरोक्त स्थानों में जा लाभ उठाना चाहिये ।

"काम रूपी छत्ता"

काम रूप छत्ता विकट, इस से रहना दूर।
राग द्वेष की मक्खियां, काट खांय भर पूर ॥

एक लड़का शहद खाने की इच्छा से शहद की मक्खियों के छत्ते के पास गया और उसने जाते ही मक्खियों के

के छत्ते में हाथ डाला ज्यू ही उसने शहद के लोभ से हाथ डाला त्यों ही मधु मक्खियों ने उसको काट खाया।

मित्रो ! इस दृष्टान्त का भावार्थ यह है कि जीव रुपी लड़के ने विषय रुपी शहद को भोगने के लिये काम रुपी छत्ते में हाथ डाला परन्तु उस जीव रूपी लड़के को राग द्वेष रुपी मक्खियों ने काट खाया, इन के काट लेनेसे यह जीव रूपी लड़का सदैव दुखी रहता है परन्तु फिर भी यह लड़का विषय रुपी मधु को नहीं छोड़ता है। अस्तु मनुष्यों को विषय रूपी मधु से सदैव बचना चाहिये।

"उनकी सबसे प्रीत है"

ज्ञान वान जो पुरुष है, उनकी है यह रीत।
सज्जन दुर्जन से सदा, करते हैं वह प्रीत॥

एक ज्ञानवान महात्मा गंगा को, नाव में बैठ पार कर रहे थे उस नौका में और भी बहुत से लोग बैठे थे जिस समय नौका किनारे से खुली गंगा के बीच में पहुंची तब उस नाव में एक बदमाश पुरुष भी बैठा हुआ था उस बदमाश ने चुपचाप बैठे हुये महात्मा से हंसी मजाक शुरू किया इसपर भी महात्मा मुँह से कुछ नहीं बोले। मजाक करते २ उस बदमाश ने अबतो महात्मा जी को

इस कदर मारा कि उनके सिर में से खुन बहने लगा, इतने में आकाश वाणी हुई, आकाश वाणी ने महात्मा से कहा अगर आप का हुक्म हो तो इस नांव को डुबो दिया जाय, उस ज्ञानी महात्मा ने कहा मैं नहीं चाहता हूं कि मेरे साथ इन सबको भी डुबोया जाय आकाश वाणी ने फिर कहा अच्छा तो इस बदमाश को डुबो दिया जाय, महात्मा ने कहा नहीं इसको भी ना डुबोया जाय आकाश वाणी ने फिर तीसरी वार कहा कि महात्मन् ! कुछ तो नियाय होना चाहिये, महात्मा ने कहा जिसने मुझे मारा पीटा है और गालियां दी हैं उसकी बुद्धि धर्म में हो जाय, यह ही न्याय चाहता हूं तुरन्त उस बदमाश की बुद्धि धर्म मई हो गई तब तो वह पुरुष लगा महात्मा जीके चरनो में गिरने और अपनी भूल की क्षमा मांगते ।

बन्धुओ ! जो लोग ज्ञानवान वैराग्यवान पुरुष है वह किसी का भी कभी भी बुरा नहीं चाहते वे लोग तो सदैव प्राणी मात्र की भलाई में लगे रहते हैं ।

सब प्राणियों की पीड़ा मिट जाये

जितने प्राणी जगत मे, सभी रहे खुशहाल ।
पर उपकारी हो गये, रत्न देव भूपाल ॥

राजा रन्तिदेव को जो धन अकस्मात् मिल जाता

उसीसे निर्वाह करता था और जो पास होता सो सब दे डालता था, फिर जो नया मिलता उसी को भोगता था। पास कुछ न रहते भी धैर्य कभी न छोड़ता था। एक बार कुटुम्ब सहित बहुत दुःखित हो गया, यहाँ तक कि अड़तालीस दिन बीत गये जल तक पीने को न मिला। उनचासवें दिन घृत, खीर, लपसी और जल अकस्मात् ही सवेरे ही प्राप्त हुये। भोजन की तैयारी हो ही रही थी कि एक ब्राह्मण अतिथि आ गया। राजा बड़ा त्यागी और भक्त था। उसे आदर पूर्वक अपना भाग खिला कर विदा करके शेष अन्न भोजन करने को ही था कि एक शूद्र आ निकला। इसने कुछ उसे दे दिया। इतने कुत्ते लिए दूसरा अतिथि आन पहुंचा। उसने कहा, "हे राजा, मैं और मेरे कुत्ते सब भूखे हैं, मुझे अन्न दीजिये।" उस ने बड़े आदर से बचा अन्न उन्हें देकर सब को प्रणाम किया। जल मात्र शेष रह गया जिस से एक मनुष्य तृप्त हो सके। राजा पीने को ही था कि एक चांडाल आया और बोला, "मुझ नीच को जल दीजिये।" उस की परिताप भरी दीन वाणी सुन राजा दया से पीड़ित हो अमृत सी वाणी बोला—

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम्।
कामये दुःख तप्तानां प्राणिनामार्त्तिनाशनम् ॥

अर्थात् मुझे न तो राज्य की और न मोक्ष की ही इच्छा है। मेरी यही कामना है कि "सब प्राणियों की पीड़ा मिट जाय" इसी को मैं अपना दुःख छूटना समझता हूं। इतना कह, आप प्यासा रह, उसे जल दे दिया फल न चाहने वालों को फल देने वाले ईश्वर तथा ब्रह्मादि देवता कुत्ते आदि का मायारूप धर कर आये थे। उन्हों ने फिर अपना रूप धारण कर राजा को दर्शन दिया। राजा ने उस को भक्ति युक्त प्रणाम किया, पर कुछ इच्छा न की।

बन्धुओ! धर्म प्राण भारत वर्ष में एक नहीं बल्कि बहुत से असंख राजा हुये हैं, जिन्हों ने प्राणी मात्र में ईश्वर देखते हुये यह हम सब की सेवा तन मन धन से की हैं, पर उपकार करना संसार में सब से उत्तम धर्म माना गया है अस्तु राजा रत्नदेव के उपरोक्त आदर्श का अपना प्रत्येक प्राणी एवं दीन दुखियों की सेवा करना चाहिये।

तीन बार द शब्द का प्रयोग

देवदनुज मानव सभी, लहे परम कल्यान।
पालें जो द अर्थ को, दमन दया अरु दान॥

कहते हैं कि एक दफा असुर देवता और मनुष्य इन सब के बड़े बूढ़े परदादा सृष्टि रचयिता प्रजापति श्री

ब्रह्मा जी के पास शिष्य भाव से विद्या उपार्जन के निमित्त उपस्थित हुये और उनकी आज्ञा अनुसार ब्रह्मचर्य व्रत धारण करते हुये सेवा में तत्पर रहने लगे। कुछ काल व्यतीत होने पर उन के अन्तह् करण में ब्रह्मा जी से उपदेश ग्रहण करने की प्रबल इच्छा हुई अतः सर्वप्रथम देवताओं ने जाकर प्रजापति से निवेदन किया भगवन् हमें उपदेश दीजिये। उत्तर में ब्रह्मा जी ने दः अक्षर कह दिया क्योंकि स्वर्ग लोक में भोगों की भरमार होती है और शास्त्रों में भी देव लोक का मुख्य धर्म भोग ही माना गया है। देवता लोग भोग परायण होते हैं अपनी इस अवस्था पर गम्भीर दृष्टि फेर कर स्व बुद्धि अनुसार दः का अर्थ दमन अर्थात् इन्द्री संयम समझा और अपने को कृत २ समझा प्रजापति को प्रणाम कर विदा हुये। चलते समय प्रजापति ने पूछा क्यों मेरे उपदेश किये हुये अक्षर का आशय तो तुम समझ गये न देवताओं ने कहा जी हाँ, आप ने हम इन्द्री विलासियों को द द्वारा इन्द्री दमन का उपदेश दिया है, यह सुन कर प्रजापति ने कहा ठीक है तुमने मेरे उपदेश को ठीक समझा है, इस पर चलने से तुम्हारा निश्चय ही कल्यान होगा। उस के बाद मनुष्यों ने प्रजापति से जाकर कहा हमें भी उपदेश मिलना चाहिए, प्रजापति ने

उन को वही द अक्षर सुना दिया। मनुष्यों ने सोचा हमारा जन्म कर्म योनि में हुआ है और इसलिए हम सदा लोभ बस कर्म करने और अर्थ संचय में ही लगे रहते हैं। प्रजापति का उपदेश दान करने का उपदेश है। वह यह निश्चय कर अपने को धन्य २ कहते हुये वहां से चल पड़े। ब्रह्मा जी ने पूछा तुम मेरे उपदेश का मतलब समझ कर जा रहे हो या वैसे ही, मनुष्यों ने कहा आपने हमें दान करने का उपदेश दिया है। प्रजापति ने कहा ठीक है, मेरे कहने के मुताबिक चलना तुम्हारा कल्यान होगा। तत्पश्चात असुरों ने प्रजापति के पास जा कर प्रार्थना की, भगवन् हमें उपदेश दीजिये। प्रजापति ने फिर दः अक्षर का उपदेश दिया, असुरों ने विचारा स्वभाव से हम लोग हिंसा प्रिय हैं। क्रोध और हिंसा हमारा नित्य का व्योपार है। इसीलिए प्रजापति ने हमें द अक्षर द्वारा प्राणी मात्र पर दया करने का उपदेश दिया है। इतना समझ कर वह चल दिये। ब्रह्मा ने पूछा मेरे उपदेश को तुमने समझा, उन्हों ने कहा हां महाराज हिंसा प्रकृति वाले हम को आप ने जीव मात्र पर दया करने का उपदेश दियाहै। प्रजापति ने कहा, तुम ने ठीक समझा मेरे कहने का भाव यही था इस पर चलनेसे तुम्हारा कल्याण होगा।

"कञ्चन का थाल"

काया कञ्चन थाल है, याकी कर पहिचान।
दीना ईश्वर ने तुझे, सोच ज़रा नादान॥

एक नगर का राजा बहुत ही नेक और अच्छा दिल का था वह राजा प्रजा पालन में तो अन्य सब राजों से बहुत बढ़ा-चढ़ा हुआ था वृद्ध अवस्था में उस राजा के एक लडका उत्पन्न हुआ पुत्र जन्म की खुशी में राजा ने गरीबों को बुला-बुला कर दिल खोल कर दान दिया यहाँ तक कि नगर में कोई निर्धन ही न रहा, जब राजा दान, पुण्य, खैरात कर चुका तब राजा का एक भंगी नत्थूराम सामने आया और राजा को आकर उसने सर झुका प्रणाम किया। राजा उसे देख बोला क्यों भाई नत्थूराम तुम्हें इनाम नहीं मिला वह बोला नहीं महाराज मुझे कहां मिला है इतनी बात सुन राजा महलों के अन्दर गया और झट एक सोने का थाल जिसमें हीरे जवाहरात जड़े हुए थे, लाकर उस भंगी को दे दिया। भंगी ने वह अमूल्य थाल ले लिया और राजा को बहुत बहुत आशीश दे भंगी अपने घर आ गया और वह थाल अपनी भंगिन को दे दिया। भंगिन थाल ले बहुत प्रसन्न हुई और फूली न समाई उसके चित्त में यह बात समाई कि भाई वाह आज तो बहुत अच्छी ढाई

कहा भाई जल्दी जल्दी काटो, ऐसा नाहो कि सन्ध्या हो जाय क्योंकि हम को जितना डर एवं भय सन्ध्या का है उतना हम को शेर का भी नहीं। बराबर के खेत में एक शेर किसान की यह सब बाते सुनरहा था ! सिंह ने विचारा सन्ध्या कोई हम से भी ज्यादा बलवान जानवर है, क्योंकि किसान हमारा डरतो मानता नहीं और सन्ध्या से घबड़ा रहा है इतने में सूर्य छुप गया किसान और मजदूर अपने २ घरों को खाना खा सो गये संजोग वस उसी गांव के एक धोबी का गधा घर से निकल गया था रात अन्धेरी थी धोबी गधे को खोजता २ उसी खेत में जा निकलो जहां शेर बैठा था ! उसने समझ लिया हो न हो यह हमारा गधा ही है। आव देखा न ताव झट दो लाठी सिंह की कमर पर जमादी और गले में रस्सी बांध कर आगे २ कर लिया उधर सिंह भी यह जान कर घबड़ाया हुआ था कि जिस सन्ध्या का जिकर किसान कर रहा था यह वही सन्ध्या है, इस लिये धोबी के साथ २ चल पड़ा सिंह ने विचारा यदि मैं बोल पडा तो सम्भव है दो लाठी और खानी पड़े, पीठ में पहिले ही दर्द हो रहा है अतः चुप चाप चलना ही ठीक है धोबी ने सिंह को घर ले जाकर खूंटे से बांध दिया प्रातःकाल प्रति दिन की तरह धोबी ने

सिंह पर दो लादी और घाट को चल पड़ा रास्ते में एक सिंह खड़ा था सिंह को अपने सजातीय सिंह पर लादी लदे हुये देखकर आश्चर्य चकित हो गया सोचा इससे पूछें तो बोझा ढोने का क्या कारण है शेर ने कहा भले मानस तुम धोबी के गधे क्यों बने हो, उसने कहा बोलो मत यह जो पीछे २ सन्ध्या आरही है यह बड़ी बलवान है हमे तो इसने जबर जस्ती से अपना गधा बना ही लिया है पर ऐसा न हो कि तुम को भी मेरी तरह लादी लादना पड़े, भाई तुम फौरन भाग जाओ दूसरे सिंह ने कहा तू वज्र मूर्ख है तुझे यह भी नहीं पता सन्ध्या किस वस्तु का नाम है। अन्धेरे का ही तो नाम सन्ध्या है सन्ध्या तुम से कोई अधिक शक्ति शाली प्राणी नहीं, मिथ्या मानसिक कल्पना वह जानवर है इस संकल्प को दूर करो स्व स्वरूप का चिन्तन करो भाई तुम तो शेर हो और यह धोबी तुम्हारा खाने की वस्तु है जरा आवाज करो यह सब भाग जायेगें इतना सुनकर सिंह को अनायास ही अपने स्वरुप का समरन हो आया ज्यों ही लादी पटक कर गरजा धोबी घर की तरफ भागा और सिंह वन प्रवेश कर गया।

सज्जनों ? जीव वास्तव में सिंह था कर्म रूपी किसान के डरावने वचन रूपी सन्ध्या को सुनकर अज्ञान रूपी धोबी का अयुतचित गधा बना और कर्म रूपी लाठियाँ खाईं जब सिंह रूपी सच्चे गुरु ने उपदेश दिया तुम गधे नहीं हो किन्तु शेर हो अर्थात् असंख चेतनस्वरूप हो तभी अपने स्वरूप का स्मरण हो आता है और जी बन्धन रहित हो जाता है।

Lokmanya Press, Pataudi House Delhi.